❀ बन्दे मातरम् ❀

कलियुग-पुराण

की

रूप-रेखा

(संक्षिप्त पूर्वार्द्ध)

KALIYUG-PURAN

The Gospel

of

MOTHER INDIA'S

Freedom.

राजर्षि पाराशर

राष्ट्र-निर्माण ग्रन्थ माला का तृतीय पुष्प

वन्दे—  —मातरम्

कलियुग-प्रस्थान की रूप रेखा

(ग्राम-संस्करण)

A Brief Out line to the Path of Hind Swaraj

—राजर्षि पाराशर

मूल्य ।) } संवत् १९९४ { प्रथम संस्करण २०००

प्रकाशक—
प्रकाशन विभाग—
राष्ट्र-धर्म महामण्डल
सहारनपुर यू० पी०

उपहार

सेवा में—

मुद्रक—
विकास प्रिंटिंग वर्क्स
सहारनपुर

पत्र पुष्पं फलं तोयं

जिस महान आत्मा ने मेरे इस जीवन वृक्ष
को बड़े ही परिश्रम से फलीभूत किया
और स्वयं जो इन फलों का रसास्वादन
करने से पूर्व ही किसी अज्ञात
स्थान को चली गई

उस

सेवा, त्याग, तपस्या, विनय,
आत्म-विश्वास, दया, धर्म-दृढ़ता
तथा वात्सल्य-प्रेम की साक्षात् प्रतिमा
अपनी माता शिवदेवी जी की अमर
आत्मा को उसके पुत्र की तुच्छ भेंट

९ अप्रैल १९३७ स्वर्गारोहणम्

[redacted] का [redacted]ीत

भगवान ! देश भारत इक बार फिर जगादो ।
दुःख, शाप, ताप भगवन ! इकबार फिर मिटादो ॥
भारत में फिर से लादो स्वाधीनता की देवी ।
स्वाधीन देश भारत इक बार फिर बनादो ॥
भागीरथी के जल में बहती है रक्त धारा ।
अमृत का नाथ परवाह इक बार फिर बहादो ॥

आश्चर्य

जिस के तीन ओर अर्णव है,
चौथी ओर हिमालय दीन ।
ऐसा देश दुर्ग-सा पाकर,
भी रह सके न हम स्वाधीन ॥

भारत की देवियों को दुःशासनों ने घेरा ।
कृष्णा की लाज मोहन इक बार फिर बचादो ॥
अर्जुन गाँडीवधारी फिर कर्मक्षेत्र भूला ।
गीता का ज्ञान अमृत एक बार फिर पिलादो ॥
हे नाथ ! काट डालो जंजीरें सब वतन की ।
गिरिधर गोवर्धन कर पर इक बार फिर उठादो ॥

कलियुग-पुराण के विषय में

कलियुग—पुराण के नायक हैं सच्चिदानन्द जगतप्रभु स्वयम्भू भगवान्—इसकी नायका हैं विश्वंभरा भारतमाता—इसके अन्दर वर्णन है उस नाटक का जो कि खेला जा रहा है निरंतर एक सहस्र वर्षों से पतित-पावनी भागीरथी के तट पर, इस नाटक के अभिनेता हैं बुद्ध, शंकर, गुरु नानकदेव, प्रताप, शिवाजी, गुरु गोबिन्दसिंह, ऋषि दयानन्द, गांधी तथा जवाहर और इस नाटक के संकलन कर्ता हैं, राजर्षि पाराशर की पचहत्तरवीं पीढ़ी के एक अंश।

यह नाटक क्या है! इसकी छाया इसी प्रस्तावना के अन्त में दीहुई विषय-सूची से पाठक गण भली भांति समझ सकते हैं।

मुझे इस बात का खेद है कि जिस शान के साथ मैंने इस अपने स्वप्न को कार्यरूपमें परिणित करनेके लिये अपने हृदय में धारणाएं बांधी थीं- वह किसी अज्ञातशक्ति के सङ्घर्ष में आकर उसी शान के साथ पूरी नहीं की जा सकीं।

मनुष्य परिस्थितियों के आधीन है और यह कम्बख्त परिस्थितियां भी हाथ धो कर मनुष्यके पीछे ऐसी पड़ी रहती हैं मानों उनके नियंत्रण के लिये किसी अज्ञात शक्ति ने एक अलग ही महकमा खोल रक्खा है। पिछले एक वर्ष से इन परिस्थितियों ने मुझे अपना शिकार बना रक्खा है। "कुछ अपने बारे में" लिखते हुये मैंने उनकी ओर संकेत मात्र किया है। मैं उनके बिस्तार से अपने प्रिय पाठकों के हृदयों को अशान्त करना नहीं चाहता।

मुझे व्यवहारिक-जगत का अनुभव बहुत ही कम है, जब जब भी मुझे पैसा-पंथी संसार-संघर्ष में आना पड़ा मैंने सदैव ही धोका खाया। न केवल धोका खाया बल्कि अपने जीवन के श्वेत-पत्र पर कालिमाके धब्बे भी लगवा लिये। सहारनपुर में ग्रन्थ को छपवाने का विचार भी इसी अविवेक का कारण था जिसके लिये मुझे आर्थिक तथा शारीरक रूप से बहुत ही कठिनाईयां उठानी पड़ीं। आगामी कुम्भ पर धर्म-प्रचार के लिये हरिद्वार के द्वार सहारनपुर में अपनी शक्तियों का केन्द्र राष्ट्र-धर्म-महामण्डल की योजना भी अकारथ गई। इसी लिये मुझे यहां लिखना पड़ रहा है कि यह ग्रन्थ राष्ट्र-धर्म-महामण्डल सहारनपुर की बजाये राष्ट्र-निर्माण-ग्रन्थमाला करोलबाग़ देहली की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है।

देश के कई एक महानुभावों ने इस कलियुग-पुराण को "The Gospel of Indian Nationalism" भारत की राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र कहा है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि जिस पवित्र भावना को लेकर मैंने लेखनी उठाई थी उस भावना को अन्त तक निभाने की परमात्मा ने मुझे सामर्थ्य दी। इस मेरे प्रयत्न से भारतीय-नवयुवकों, भारत में रहने वाले मुसलमानों, ईसाईयों, ज़मींदारों, धर्म-गुरुओं, धर्माचार्यों, धर्म-भीरुओं तथा मठाधीशों के अन्दर विशुद्ध-राष्ट्रीयता का संचार हो सके तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा।

इस धर्म ग्रन्थ के दूसरे खंड में मैंने भारतीय इतिहास के १०००वर्षों के रूप रेखा की झलक सी दिखाने का प्रयत्न किया है। मेरे तुच्छ विचार में भारत की गुलामी का श्री गणेश १७जून १७५७ को प्लासी के युद्धमें नहीं हुआ था, किन्तु उससे भी १००० वर्ष पहिले सिन्धु नदी के तट पर हो चुका था। औरंगजेब अकबर

बाबर तथा बख्तयार इत्यादि यद्यपि इस हिन्दूस्तान में बस गये थे परन्तु थे तो वे विदेशी ही।

भारतवर्ष के मुसलमान विदेशी नहीं हैं। भारतीय हैं राम और कृष्ण की सन्तान हैं। यदि औरंगज़ेब तथा अकबर के बारे में किसी प्रकार की अलोचना को सुन कर मेरे मुस्लिम भाईयों को दुःख होता है तो यह उनकी मूर्खता है। हजरत मोहम्मद साहब के साथ उनका भलेही सम्बन्ध हो परन्तु औरंगजेब और अकबर का उनके साथ कोई सम्बन्ध नहीं।

मैं हिन्दु मुस्लिम एकता का जबरदस्त पक्ष—पाती हूँ। मैं तो उस शुभ घड़ी के लिये जी रहा हूँ जबकि पतित पावनी भगवती भागीरथी के पवित्र तट पर भारत मां के ३५ करोड़ पुत्र प्रातरुषा की ओर मुख किये नतमस्तक हो जगदम्भा विश्वम्भरा भारत माता की चरण वन्दना करेंगे और एक बार फिर जाह्नवी का तीर भारत पुत्रों के जय नाद से प्रतिध्वनित हो उठेगा।

त्रिंशकोटि कण्ठ कल कल निनाद कराले,
द्वित्रिंशकोटि भुजैधृत खर करवाले।
के बोले मा तुमि अबले! बहुबल धारणीम्, नमामि तारिणीम्
रिपु-दल वारणीम्—मातरम्—बन्दे मातरम्

मैं उस दिनके लिये जी रहाहूं, जबकि भारतवर्ष के मुसलमान अपनेवास्तविक स्वरूप को पहचान कर भारत माता को सौतीली-मां कहना छोड देंगे। मैं उस पुण्य तिथि की प्रतीक्षा में तड़प रहा हूँ जब ८ करोड भारत पुत्रों के अन्दर यह विचार जम जाय कि वह सब के सब अरब के रेगस्तानों से पारसल हो कर भारत में नहीं आये। मेरी आंखें तो वह अभूत-पुर्व दृश्य देखने के लिये तडप

रही हैं जबकि मक्का तथा मदीनेके विदेशी मौलाको अपने बुलावे के सन्देश भजने वाले भारतके ८ करोड़ बच्चे एक स्वरसे गातेहोगें।

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलसतां हमारा ॥
मजहब नहीं सिखाता आपसमें बैर रखना।
हिन्दी हैं हम-वतन है हिन्दोस्तां हमारा ॥

मैंने इसी शुभ दिन को भारतवर्ष में जल्दी से जल्दी तशरीफ लाने के लिए ही कलियुग-पुराण रूपी चिट्ठी लिखी है। और मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि मेरी अन्तर-आत्मा से निकला हुआ एक एक शब्द इस शुभ दिन को जबरदस्ती खेंच लाने में एक एक सिपाही का काम करेगा।

किसी भी व्यक्ति के दिल को दुखाना मैं एक प्रकार की हिंसा ही समझता हूँ। कलियुग-पुराण के तीसरे खण्ड में मैंने इस हिन्दू-समाज रूपी असाध्य रोगी का ओपरेशन किया है। इस के हित के लिये, इसकी भलाई के लिये, इसकी अवस्था को सुधारने के लिये... मैंने एक प्रयत्न किया है। परमात्मा ने मुझे भारत वर्ष के अन्दर हिन्दू-धर्म में जन्म दिया—मेरा यह परम धर्म था कि मैं अपना मातृ-ऋण चुकाता।

जो कुछ मेरे पास था मैंने अपनी राष्ट्र-माता के चरणों की भेंट अर्पण कर दिया। यदि मेरे देश के रूढ़ि-वादी धर्म भीरुओं का दिल मेरी लेखनी से दर्द करने लग जाय तो मैं उन्हें यही परामर्श दूंगा कि तनिक शर्बत फ़ौलाद की तीन चार बोतलें पीकर फिरसे दूसरी बार इस कलियुग-पुराण को पढ़ें

मुझे इस बात का खेद है कि मैं असली कलियुग-पुराण को अभी तक अपनी आर्थिक कठिनाईयों के कारण प्रकाशित न कर सका। मैं यथा शीघ्र इसे प्रकाशित करने का प्रयत्न करूंगा।

जैसे कि गाड़ी छुटने से पहिले लाईन क्लीयर देखने के लिये एक ठेला भेजा जाता है, मैंने भी इस बड़े कलियुग—पुराण को प्रकाशित करने से पहले इस साधारण सी पुस्तक के द्वारा अपने रास्ते को साफ कर लेना उचित समझा —मैंने प्रयत्न किया है कि सीधी सादी भाषा में जन—साधारण को अपने हृदय की बात कहूँ। इसी प्रयत्न में मैंने इस ग्रन्थ में भाषाओं की खिचड़ी करदी है--विचारों का सतनाजा सा बना दिया है

मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि यह ग्रन्थ सीधा भारत की आत्मा तक पहुंच जाये। गावों के साधारण से साधारण किसान भी इसके तत्व को समझ सकें। बड़े बड़े गूढ़ विषयों को मैंने ग्रामीण भाषा में समझाने की कोशिश की है, इस प्रयत्न में यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी यदि मेरे देश के हितैषी सज्जन इस ओर मेरा ध्यान आकर्षित करेंगे और अपनी शुभ सम्मति से कृतार्थ कर दूसरे संस्करण में मुझे इस ग्रन्थ को अधिकाधिक उपयोगी बनाने में सहायता देंगे।

मैं इस स्थान पर नकोदर (पंजाब) के श्रद्धेय पं० लभूराम जो हकीम, हैडमास्टर कर्मचन्दजी तथा दयालसिंह कालिज लाहौर के संस्कृत विभाग के हैड प्रोफैसर गोपीचन्द जी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रगट करता हूँ क्योंकि उन्हींके द्वारा मुझपर डाले गये संस्कारों ने मुझे यह ग्रन्थ लिखने के योग्य बनाया है।

अपनी आर्थिक अवस्था के सन्तोष जनक न होते हुये भी मैंने राम भरोसे इस कार्य को आरम्भ कर दिया था। श्रीयुक्त पं० विद्यानन्दजी विद्या लंकार, करनाल; श्रीयुक्त प्रोफैसर भक्तसिंह सोढ़ी रोहतक का मैं अत्यन्त धन्यवाद करता हूँ कि जिन्होंने इस पवित्र कार्य में मेरी मुंह मांगी आर्थिक सहायता की।

सप्तसरोवर, हरिद्वार।

गुरुवार कार्तिक पूर्णमा १६६४) पाराशर

विषय-सूची

प्रथम खण्ड—

भारतमाता भागीरथी के तट पर बैठी रो रही है···१-२= वैकुण्ठनाथ का आसन डोल जाता है और स्वयंभू-भगवान् अपनी इस बड़ी बेटीकी रक्षाको भागते हैं—३-४ भारत माता अपनी रक्षा के लिये भगवान् को फिर पुकारती है ५—६ भारत माता का उपालम्भ...७... भगवान् का समाधान ८—१६ भारत माता अपनी दुर्दशाका कारण पूछती है···१७ भगवान् जापानी वीरोंकी वीरता का वर्णन करते हैं। किस प्रकार रूस जापान युद्धमें जापानियोंने अपनी मातृ भूमिके प्रति सर्वस्व बलिदान कर दिया···१८ भगवान पूछते हैं! बता हिन्द माता जो बलिदान जापानी वीरों ने अपनी मातृभूमि के लिये किया, वैसा त्याग तेरे पुत्रोंने कभी तेरे लिये किया? भारत माता भारत—पुत्रों के बलिदान का सविस्तार वर्णन करती है २१...६४।

काकोरी के शहीद—अमर—यात्री, अंडेमान के यात्री—मार्शियल्ला के बन्दी —शेर जंग —२०—२२ लेखराम २३ प्रधान पटेल २४ भगवान्--तिलक २७ पंजाब--केशरी लाजपत २४ स्वामी श्रद्धानन्द ३१ पं० मोतीलाल ३३ सुभाष ३४ जवाहर ३६ गणेशशङ्कर विद्यार्थी-४० देशभक्त सावरकर-४१ राजेन्द्र-४२ सरदार पटेल-४४ वीर नरीमान—४६ सीमान्त गान्धी—४७ डाक्टर खां साहिब--४६ सप्तर्षि--५० नरेन्द्रदेव--५१ राजगोपालाचार्य--५७।

द्वितीय खण्ड—

भारत माता के द्वारा गाई गई अपने वीर पुत्रों के बलिदान की गाथा से भगवान् को संतोष नहीं होता—६५—हिन्द माता अपने राजपूतों के बलिदान की कथा कहती है — ६६ राजपूतों के बलिदान को स्वीकार करते हुये भगवान राजपूतों की राजनैतिक भूलों का वर्णन करते हैं···६७ राजपूतों ने बिन कासम के साथ क्या किया था? ६६ सुबुक्तगीन के साथ लाहौर में क्या किया—७०-७२—सोमनाथ पर आपत्ति पड़ने पर महमूद के साथ क्या किया—७६—मुहम्मद गौरी सरीखे दुष्ट के साथ क्या किया—८४-८८ अलाउद्दीन खिल्जीको पद्मनी दिखाते समय क्या किया ८६—६३ तैमूर, चंगेज,नादिर—अहमद इत्यादि लुटेरों के सामने क्या किया···६४ बाबरके साथ जब फतहपुर सीकरी में राणा संग्राम लड़ा तब क्या किया-६६-६७—जबअकबरका सिंहासन छीनने के लिये चौधरी हेमराज ने प्रयत्न किया तब इन राजपूतों ने क्या किया ६४-१०६ राजस्थान केशरी जब यवनदल पर हल्दी घाट में जाकर दहाड़ा उस समय मानसिंह जैसे राजपूतों ने क्या किया?—१०७ महाराष्ट्र केशरी छत्रपति शिवा जी महराज ने जब औरङ्गजेब रूपी कंस का गला घोटने का प्रयत्न किया तो उस समय जयसिंह तथा यशवन्तसिंह राजपूतों ने क्या किया और जिस समय इस यावनी वृक्ष को उखाड़ कर खैबर पार फेंक देने के लिये गुरु गोविन्दसिंह जी महराज ने खालसा को सजाया उस समय पहाड़ी राजपूत राजाओं ने क्या कुछ किया?···१३१

तृतीय खण्ड—

जातियों के द्वारा किया हुआ पाप जातियों का नाश करदेता—१३१—हिन्दोस्तान का सत्यानाश हिन्दोस्तानियों के पाप ने किया १३७ भारत माता पूछती है भगवन् इस धर्म क्षेत्र में क्या

पाप होते हैं—१३८ भगवान् १०१ पाप गिनाते हैं ...क्या जात पात तथा छुआ-छूत का ढोंग पाप नहीं है ?—१४५···हरिजनों को; १५६ निर्धन देश पर २ करोड़ मुफ़्तखोर साधुओं का बोझ लादना क्या यह पाप नहीं है ?—१६१ साधुओं को सन्देश १६५ निर्धन देशका करोड़ों रुपया मंदिरों पर नष्ट करना क्या यह पाप नहीं है ?—१७६। भारत माता का उपालम्भ १७८ भगवान अन्तरध्यान हो जाते हैं···१७८ खुदा-फरोशों को १७६ भारत माता द्वारा ईश-स्तवन ···१८३ भगवान अपना यथार्थ स्वरूप वर्णन करते हैं, १८७ Officiating Gods——१८६ ईश्वर प्राप्ति का मार्ग १६० क्या अपनी स्वदेश-भाषाका नाश करना पाप नहीं है? ···१६३ ··· आधुनिक शिक्षा—१६८—नवयुवकों को संदेश ...२००... पवित्र तीर्थों पर पांडे-पुजारियों का कुकर्म करना क्या यह पाप नहीं है—?२०६ श्रीगंगा महातम्य-२०६-२२४ सर्वोत्तम तीर्थ भारत वर्ष···२२५··इस भारत-तीर्थ की यात्रा का उपाक्रम्य २३०-···२४० धर्म महिमा —२४१... म्युनिस्पलटी महातम्य २४४ कौंसिल महातम्य—२४७···अंग्रेज-स्तोत्र···२४८ वोट महातम्य २५६ धर्म यथा मज़हब का सम्बन्ध— २५८ मुसलमानों की जातीयता २६३...भारतीय मुसलमानों का यथार्थ स्वरूप २६६ भारतमें गोवध का होना क्या पाप नहीं है···२६७ स्त्री जाति का अपमान करना क्या पाप नहीं है ?—२६८— सनातन-धर्म अथवा सड़ातन धर्म—२७२।

❋ ❋ एक निवेदन ❋ ❋

साहित्यक-जगत में यह मेरा पहला ही कदम है। यद्यपि मैंने बडेही परिश्रम से प्रूफ देखे थे फिरभी दृष्टि–दोषके कारण कहीं २ प्रैस की अशुद्धियां रह गई हैं। मैंने उन्हें यथा-शक्ति हाथ से ठीक कर दिया है। आगेको मैं अधिकसावधानी से काम लूंगा।

कुछ अपने बारे में

सर्व प्रथम मैं उन अनेकानेक देश बन्धुओं से क्षमा याचना करता हूँ कि जिन्हें इस धर्म ग्रन्थ की प्रतीक्षा में बहुत कष्ट उठाना पड़ा। जिस वस्तु के लिये हमारे हृदय में अत्यन्त प्रेम, श्रद्धा तथा स्नेह होता है उसकी प्रतीक्षा में तो एक-एक क्षण काटना भी दूभर होजाता है। एक वर्ष से भी अधिक हुआ कि मैंने इस कलियुग पुराण को जनता के सामने रखा था और मैंने सर्व साधारण को विश्वास दिलाया था कि इस ग्रन्थ को शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित कर दिया जावेगा। जो प्रोत्साहन मुझे जनता की ओर से मिलता रहा है और जनता ने इस मेरे मिशन के प्रति आरम्भ से ही जिस प्रकार का प्रेम दर्शाया है उसको दृष्टि में रखते हुये मेरे द्वारा जनता को ऐसा विश्वास दिलाया जाना कोई असम्भव बात न थी परन्तु मनुष्य परिस्थितियों का गुलाम है। वह सोचता है--बहुत कुछ सोचता है, परन्तु वह नहीं जानता कि वह तो किसी अज्ञात शक्ति के हाथों में केवल कठपुतली हो है। वही होना है जो परमात्मा चाहता है। उसकी इच्छा के बिना कुछ नहीं हो सकता।

आर्थिक कठिनाईयां तो मेरे रास्ते में सदैव ही रहीं; आज कल भी हैं और सम्भवतः सदैव ही छाया के समान पीछे लगी रहेंगी। परन्तु मैं तो अर्थ संकट से घबराने वाला व्यक्ति नहीं हूं। मुझे इतना विश्वास था कि यद्यपि मेरे अपने लिये कोई भले ही आर्थिक कष्ट हो परन्तु यह मेरा कलियुग पुराण जोकि राष्ट्र की सम्पत्ति है इसके प्रकाशन का भार समस्त राष्ट्र के लिये सहन करना कोई कठिन नहीं। परन्तु इसके अतिरिक्त एक और घटना होगई—वह थी मेरी

पूज्यनीय माता जी की मृत्यु। जिसने मेरी हिम्मत को तोड़ दिया। इस बज्रपात को हुये छः मास होगये परन्तु वह शोक तो अब भी वैसे का वैसा ही हृदय पर बज्र के समान जम रहा है।

इन्हीं विवशताओं के कारण मुझे इस ग्रन्थ के प्रकाशन में बहुत देर लग गई। आप के हाथों में इस समय जो ग्रन्थ है इसे कलियुग पुराण की एक झांकी मात्र ही समझिये। मूल कलियुग पुराण १८ | २२ साईज़ पर डेढ़ हज़ार पृष्ठ का विस्तृत ग्रन्थ है यह भी छप रहा है। सम्भवतः इसके छपने में पांच-छः महीने लग जायें।

मैं यथा शक्ति प्रयत्न करूंगा कि दीपमाला के शुभ अवसर पर इस धर्म ग्रन्थ को जनता की भेंट कर सकूं। मूल ग्रन्थ संस्कृत में है। संस्कृत श्लोकों का पद्यानुवाद भी साथ ही दे दिया गया है। एक वर्ष से निरन्तर मैं जनता के सन्मुख इस कलियुग पुराण को रखता रहा हूं। इस ग्रन्थ को लिखने का मेरा मुख्य उद्देश आर्य जाति को अपनी प्राचीन सांस्कृतिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक स्थिति का परिचय कराना, उसका वर्तमान तथा विश्व संघर्ष में आकर भविष्य में धारण करने वाले रूप की झलक दिखाना है। मैं इस कलियुग पुराण को प्रत्येक भारतवासी के घर तक पहुंचाना चाहता हूँ। मैं नहीं चाहता कि यह ग्रन्थ कुछ एक वाक् शूर पंडितों के तर्क की सामग्री बने या किसी वकील या वैरिस्टर की लाईब्रेरी की शोभा बढ़ाने का काम दे। मेरी यह हार्दिक इच्छा रही है कि इस राष्ट्र-सन्देश को प्रत्येक भारतवासी के अन्तरात्मा में भर दूं। मेरी आत्मा मुझे निरन्तर चेता रही थी। "श्याम ! तुम उस भाषा में जनता की अन्तरात्मा में घुसना चाहते हो जिसका वह एक

अक्षर तक भी नहीं समझ सकती। भारत माई के अट्ठाईस करोड़ पुत्र गाँवों में रहते हैं। उन्हें अक्षर मात्र तक का भी ज्ञान नहीं है। वह अनपढ़ हैं, परन्तु हैं वही भारत के स्वस्व। यदि तेरे इस राष्ट्र-गान को सुनकर यह भारत के अट्ठाईस करोड़ लाल जग जायेंगे तभी तेरा मिशन सफल होगा; संस्कृत को तथा दर्शन की ऊंची फिलोसफी को यह गरीब किसान मजदूर नहीं समझ सकते। इस लिये यदि वास्तव में राष्ट्र की सोई हुई आत्मा को चेताना चाहते हो तो उन्हीं की भाषा में महात्मा बुद्ध, गुरु नानकदेव, सामर्थ्य गुरु रामदास तथा संत तुकाराम प्रभृति महात्माओं का अनुकरण करते हुये जनता की बोलचाल की भाषा में ही जनता तक पहुँचो"।

अन्तरात्मा की इस आवाज़ की अवहेलना करना मेरे लिये कठिन हो गया। अस्तु कलियुग पुरान का यह ग्राम-संस्करण इसी प्रेरणा का परिणाम है, मैं ने भाषा को सरलतम करने की कोशिश की है और मैं ने कथा के रूप में ही बोलचाल की गद्य में इसे लिखा है। मैं आशा करता हूँ कि ग्रामीण जनता इस राष्ट्र सन्देश को सहज में ही समझ सकेगी।

इस ग्रन्थ का नाम मैंने कलियुग पुराण रखा है और यह नाम बिल्कुल ठीक रखा गया है। **कलियुग** का अर्थ है गरीबी, बेबसी, लाचारी, लड़ाई, झगड़ा, क्लेश, नाचाकी, और फूट। **पुराण** का अर्थ है कई एक शताब्दियों से घटा जा रहा किसी देश का इतिहास कलियुग पुराण का सम्मिलित अर्थ हुआ हिन्दुस्तान की गुलामी का, गरीबी का, बेबसी का और पारस्परिक फूट का इतिहास। महाभारत से लेकर कांग्रेस की कौंसिल रुपी कुरुक्षेत्र विजय तक सर्वांग सम्पूर्ण इतिहास का इस ग्रन्थ के अन्दर वर्णन है।

कलियुग-पुराण कोई मज़हबी अथवा तान्त्रिक ग्रन्थ नहीं है।

मेरा सम्बन्ध किसी भी मत मतान्तर अथवा मजहब के साथ नहीं है। मजहब को मैं मनुष्य के लिये (slow poison) मीठी २ मार करनेवाला विष समझता हूँ। धर्म और वस्तु हैं मजहब और वस्तु हैं। धर्म मनुष्यको सदाचार का उपदेश देता है; मजहब मनुष्य को पशु बना देता है। धर्म संसार की शान्ति का मूल कारण है; और मज़हब है स्यापे की नाईन। जिस दिन से भी लोगों ने वास्तविक धर्म को छोड़ कर मन घढन्त मत-मतान्तरों को अपनाया उसी दिन से शान्ताकार प्रभु का रचा हुआ यह शांत संसार ऐसा अशांत हुआ कि शायद आने वाली प्रलय भी इसको शान्त न कर सके। धर्म परमात्मा की देन है इसका सम्बन्ध मनुष्य की आत्मा के साथ है। मज़हब (semetic culture) पश्चिमी सभ्यताका एक षड़यन्त्र हैं। मैंने कोशिश की है कि मैं इस मज़हब रूपी कीचड़ में पत्थर फैंक कर स्वयं अपने आप को भी गन्दा न करलूं।

परमात्मा एक है। वह सर्वशक्तिमान है। जिस प्रकार बिजली काकोई रूप नहीं परन्तु फिर भी वह बहुत बड़े २ काम करती हैं, इसी प्रकार वह परमात्मा भी बड़ा भारी (power house) शक्ति केन्द्र है; बेतार के तार के समान जिस से पाई हुई ज्योति के द्वारा यह सूर्य और चन्द्र चमकते हैं: जिस की ज्योति से यह संसार प्रकाशित हैं और प्राणीमात्र की इन शरीर रूपी मशीनों क चलाने के लिये जो अपनी शक्ति देता है वह। शक्ति किसी एक व्यक्ति की सम्पत्तिनहीं, उस (power house) का किसी के पास ठेका नहीं। उस तक पहुंचने के लिये कोई एजेन्ट नहीं और उस power house तक जाने के लिये स्वयं अपने आपके अतिरिक्त कोई दूसरा व्यक्ति पहुँचाने वाला नहीं। वह महान् शक्ति

तो स्वयं मनुष्य के पास दौड़ी २ आती है। सूर्य की किरणों के समान बिना बुलाये ही आती है।

उस शक्ति का भय मानते हुये संसार में अच्छे कर्म करना, यम नियम का पालन करते हुये संसारके अन्दर परोपकारी जीवन बिताना; सत्य, अहिंसा, तप, स्वाध्याय, परिश्रम तथा ब्रह्मचर्य के द्वारा अपनी गुप्त शक्तियों का विकास करना और उस अपनी शक्ति को राष्ट्र माता के दुःख ताप को मिटाने के लिये, गुलामी की बेड़ियों से जकड़े हुये दुःखी देश को स्वतंत्र कराने में लगा देना और स्वराज्य रूपी यज्ञ में अपने शरीर की आहुती डाल देना यह मनुष्य का धर्म है और इसी धर्म का प्रतिपादन मैंने इस ग्रन्थ में किया है। यदि मेरे देशवासी इस मेरे सन्देश को सुनकर अपने अपने धर्म को भी पहिचानेंगे, तो मैं अपना जन्म सफल समझूंगा।

—श्याम जी पाराशर।



विजय-गान

जय देश हिन्द देशेश हिन्द ,
जय सुखमा सुख निःशेष हिन्द ।
जय धन, वैभव, गुण-खान हिन्द;
जय विद्या-बल-बुद्धि-निधानहिन्द ।
जय शूर हिन्द जय वीर हिन्द ,
जय शत्रु दमन रणधीर हिन्द ।
जय विश्वविदित उद्यान हिन्द ;
जय जयति स्वर्ग सोपान हिन्द ।
नागेन्द्र हिन्द राजेन्द्र हिन्द ,
जय जय बहुबार जितेन्द्र हिन्द ।
जय पावन परम पुनीत हिन्द ;
जय जय जगलोकातीत हिन्द ।
जय दलित-यवनदलदुष्टहिन्द ,
जय भुजबल पुष्कल पुष्ट हिन्द ।
जय उज्ज्वल कीर्ति विशाल हिन्द ;
जय करुणा सिन्धु कृपाल हिन्द ।
जय देशराज सुरराज हिन्द ,
जय सुखमा सुर सरताज हिन्द ।
जय पावन परम प्रताप हिन्द ;
जय हरण शोक, संताप हिन्द ।

कलियुग-पुराण

पहला अध्याय

कस्यास्त्यन्तं सुखमुपनतो दुःखमेकान्ततो वा ।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा च क्रमेणीक्रमेण ॥

पतित पावनी भगवती भागीरथी के पवित्र तट पर एक देवी बैठी थी। उस देवी के स्वरूप से तेज बरसता था। यद्यपि वह देवी अत्यंत शोकावस्था में बैठी थी, परन्तु फिर भी उस का दिव्य तेज इतना असह्य था कि सारे संसार का तिमिर उसके सामने टिक नहीं सकता था। उस देवी के बड़े २ नेत्र अश्रुओं से परिपूरित हुये २ भी इस बात की साक्षी देरहे थे कि उन्होंने भी कभी अपने महान उज्ज्वल भूत की झलक का महान रसास्वादन किया था। उसके मस्तक का तिलक पहिले के समान ही आभा देरहा था। भ्रकुटी के रूप में भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया था। परन्तु हां उसके गले का मुक्तामणिहार कुछ २ अपनी आभा खो चुका था। इस दीन अवस्था में उसके दोनों

हाथों का शिथिल होजाना यद्यपि असम्भव नहीं था, परन्तु फिर भी उसके दोनों हस्त पूर्ववत् ही सुदृढ़ थे। उसके आंचल को अब भी कालिन्दी कावेरी कृष्णा स्पर्श करके अपनी प्यारी माता के मनोविनोद का हेतु बन रही थी। महान वरुण देव इस अवस्था में भी अपने कर्तव्य को नहीं भूला था। अपनी आदरणीय माता के चरण कमलों का प्रक्षालन करते हुये उसे एक क्षण भी विश्राम नहीं पड़ता था। सिंहके समान अपने हाथ में त्रिशूल लिये हुये वह चंडिका देवी अब भी अपने तप से, त्याग से भू मण्डल को चकित कर रही थी। पूर्व की ओर प्रातरुषा के समान उस जगन्माता का दर्शन भी सारे संसार को नवाश्वासन प्रदान कर रहा था, परन्तु वह देवी रोरही थी। उसके दुख का कारण स्वयं उसी के आत्म पुत्र थे। कोई बाहर की सत्ता इस सिंह वाहिनी देवी की ओर कुदृष्टि से निरखने का साहस तक भी नहीं कर सकती थी और वह शक्ति स्वरूपा देवी किसी भी सांसारिक शक्ति का भय मान ऐसी शोकावस्था को प्राप्त भी क्यों होती। यह थे उसके अपने ही पुत्र जिन्होंने इसी माता का अन्न खाकर इसी माता का दूध पीकर अपने स्वार्थवश अन्धे होकर इस के जीवन को दुःखमय बना दिया।

यह संसार चंचल है। राजा हो अथवा रंक हो सम्राट हो अथवा भिखारी हो यह संसार का परिवर्तनशील चक्र किसी की भी परवाह नहीं करता। संसार तो है ही परिवर्तन का नाम। और यह देवी भी इसी परिवर्तनरूपी क्रांति की भेंट चढ़ गई। जिस की ओर देखकर सारा संसार अपने अन्दर नव जीवन सा अनुभव करता था वही जगत-जीवन-प्रदायिनी आज गत-जीवन के समान रो रही है। जिसने संसार को पाला आज वह स्वयं

भूख से तड़फ रही है, जिसने अपने मातृ-स्नेह से सारे संसार को सनाथ किया, वही देवी आज अनाथ के समान बैठी रो रही है। जिसने अपने दिव्य आलोक से सारे भूमण्डल के अन्धकार को दूर किया, वह जगदम्बा जगतमाता विश्वम्भरा भगवती पतित पावनी भारत माता आज निर्जन वन में असहाय हुई बैठी है।

सब ओर से निराश हुई उस देवी ने उस समय उस अनाथों के नाथ, दीनानाथ का स्मरण किया। भगवन तो आते ही दुःख में याद हैं वास्तव में दुःख बना ही इसलिये कि कहीं संसार के लोग ईश्वर को ही संसार से न निकाल दें और वह परमात्मा दुख में याद किया हुआ लगता भी बड़ा प्यारा है।

देवी की उस करुणा को सुन कर वैकुण्ठ वासी भगवान का सिंहासन डोल गया और उसी क्षण दीनानाथ ने अनुभव किया कि मृत्युलोक में कोई दीन दुखिया रक्षा के लिये उन्हें बुला रही है।

भगवान मृत्युलोक में जाने के लिये सुसज्जित हुए। लक्ष्मी ने भी भगवान को इस प्रकार से मृत्युलोक को प्रस्थान करते हुये देखकर कहा—भगवन आप जानते हैं यह करुण क्रंदन कहां से आया है। आप ने ध्वनि को सुना, परन्तु मैंने यह भी पहिचाना कि यह विलाप किस का है। आपका मृत्युलोक में जाना व्यर्थ है क्यों कि रोना और बस रोना ही इस रोने वाली का काम रह गया, क्या आप जानते हैं यह कौन रो रही है?

भगवान बोले—हां मैं जानता हूं यह विलाप है हमारी सब से बड़ी बेटी भारत माता का। इसी लिये अपनी बेटी की रक्षा

करना पिता का परम धर्म है।

लक्ष्मी बोली "भगवन्, बेटे बेटियां तो हमारा सारा संसार ही है। उन सबकी रक्षा करना हमारा परम धर्म है परन्तु यह ३५ करोड़ पुत्रों की माता शिवा, प्रताप, राम, कृष्ण, तथा गुरु-गोविन्द से वीर बांकुरों की जन्म दाता आज अनाथों के समान रो रही है क्या यह आश्चर्य नहीं। कौन सी वस्तु है ऐसी जो हमने इस अपनी बड़ी बेटी को नहीं दी; सब से उत्तम घर, सब से उत्तम देश भारत, सब से उत्तम पर्वत हिमराज, सब से उत्तम नदी गङ्गा, सब से उत्तम ज्ञान वेद, सब से उत्तम कनक राशी, सब से उत्तम फल, सब से उत्तम पुष्प, सब से उत्तम बृक्ष, और सर्वोत्तम वीर श्रेष्ठ बुद्ध, शंकर, रामदास दयानन्द......इस बड़ी बेटी को हमने दिये। एक ओर ठीक इस के द्वार पर पर्वतराज हिमालय सन्तरी की खङ्ग लिये खड़ा कर दिया...तीनों ओर इस की रक्षा के हेतु वरुणदेव को नियत किया और भीतर से इस की रक्षा को बहादुर खालसे, राजपूत, मराठे, गुरखे चारों ओर फैला दिये और इस के दोनों हाथों में पंजाब तथा बंगाल रूपी दो तीक्ष्ण तलवारें पकड़ा दीं—और फिर भी यदि यह दुःख की मारी रोती ही है तो इस को सुखी कौन बनावे" ?

भगवान बोले हे लक्ष्मी तू ठीक कहती है मैं भी जानता हूं, सब कुछ जानता हूँ परन्तु आखिर किया क्या जाय—क्या तू यह चाहती है कि मेरी ओर से भी निराश हो कर यह हमारी बेटी जीवन से ही हाथ धोले—

ऐसा नहीं होना चाहिये क्यों कि इसके मरने से सारा संसार मर जायगा......इसलिये न सही मुझे सारे संसार के लिये ही सही—मुझे तो जाना ही पड़ेगा।

दूसरा अध्याय

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

जब जब होत धर्म की हानि। बाढ़ हों असुर अभय अभिमानी।
तब तब धरि प्रभु विविध शरीरा। हरहीं कृपानिधि सज्जन पीरा ॥

भगवान आनन्द कन्द सच्चिदानन्द ज्योति स्वरूप मृत्यु लोक के पथ पर चल पड़े। आकाश में आकर उनके चमत्कार से एक विद्युत सी उत्पन्न हुई। उस समय भारत माता ने भगवान को देखा और लगी उच्च स्वर से पुकारने—हे दीनानाथ, हे दीनवन्धु, हे जगदीश्वर मुझे इस दुःख सागर से निकालिये। आप मुझ पर सदैव ही कृपा करते रहे हैं। जब २ भी धर्म का नाश होता है और अधर्म चारों ओर फैल जाता है, महान आत्माओं को दुष्टात्मायें पीड़ा देती हैं, इस देव भूमि भारत भूमि में जब असुरों का प्रावल्य होजाता है, गौ ब्राह्मण का अस्तित्व जब संकट में पड़ घोर संकट में पड़ जाता है, उस समय आप मेरी रक्षा के लिये संसार में आते हैं। हे भगवन् अपने ही मुखारविन्द से आपने इस तथ्य को अपने भक्तों के प्रति प्रगट किया था। हे भगवन् उस अपनी की हुई प्रतिज्ञा को पूरा करना चाहिये। जिस समय को दृष्टि में रखते हुये, आपने वह शब्द कहे थे, वह समय अब आगया है, इस लिये भगवन् शीघ्र आकर मेरी रक्षा की जये।

नाथ अब और न अधिक रुलाओ।

सुखमा–सौख्य–खानि सुर दुर्लभ पावन भारत देश।
सदियों से दासत्व पाश में सहता अगणित क्लेश।
जर्जर तनमय प्राण शेष हैं बचे न धन बल मान लेश हैं।

शक्ति सुधा बरसा कर भारत अन्तर्दाह बुझाओ।

आर्य–वीर–विद्वान विश्वगुरु ऋषि सन्तति विख्यात।
अधम कापुरुष कुली कहाती दर दर खाती लात।
देशभक्ति बन्धुत्व नहीं है शत्रु तपन वीरत्व नहीं है।

पतित हुई अब शरण तुम्हारी दया करो अपनाओ।

नौकर शाही नीति ग्रीष्म ने किया हिन्द जलहीन।
भारतवासी प्रजा मीनगण अतिशय व्याकुल दीन।
डायर से धीवर बनते हैं निर्भय मनमानी करते हैं।

सत्वर पावस को लौटा कर सब के प्राण बचाओ।

दीन–हीन पीड़न से गुरुतर होता भारत भार।
व्याकुल हैं नाकों दम आये सहते अत्याचार।
कष्टों का कुछ अन्त नहीं है नाथ रुदन की शक्ति नहीं है।

प्रियतम आर्य भूमि रक्षा हित एकबार फिर आओ।

निज कृत पाप पूर्ण कर्मों के फल पाये भरपूर।
दया दिखा कर नाथ करो अब दैन्य दासता दूर।
पालक हो तुम दीन जनों के घालक हो तुम दुष्ट जनों के।

चिर परिचित इस पुण्य भूमि में एक बार फिर आओ।

---

(३)

तीसरा अध्याय

—***—

न देवाः दण्डमादाय रक्षन्ति पशुपालवत्

देवतागण गडरिये के समान स्वयं हाथ में डंडा लेकर जन साधारण रूपी भेड़ों को हांकने नहीं आया करते।

भगवान बोले—हे हिन्द माता ! तू मुझे अपनी रक्षा के हेतु अपने पास बुला रही है परन्तु क्या तुझे इस बात का पता है कि मेरे बिना स्वर्ग लोक की क्या अवस्था हो जायेगी ?

भारत माता बोली—भगवन् ! जस समय आप कच्छ, मच्छ, नरसिंह, वामन वराह इत्यादि के रूप में मेरी रक्षा को आये थे तो उस समय अपने इस स्वर्ग को क्या नीलामी पर चढ़ा आये थे ?

भगवान बोले—हे हिन्द माता ! यह तेरा विचार मिथ्या है कि मैं कभी भी मनुष्य का रूप धारण करके इस भारतवर्ष में आया। मैं जगत् पिता हूँ, भारत पिता नहीं हूं। सारा संसार मुझे जगत पिता कहता है, भारत पिता अथवा हिन्दू-पिता कोई नहीं कहता, तेरे पुत्र मुझे स्वयं सर्वव्यापक, अजर, अमर, अजन्मा, नित्य अभय समझते हैं और ऐसा ही मुझे अपनी स्तु तयों के अन्दर

वर्णन करते हैं। मैं न तो हिन्दू हूं, न मुसलमान हूं, न ईसाई हूँ, न बौद्ध हूँ, न जैनी हूं, और न ही मैं अन्ध द्वीप के विशाल मरुस्थल में विचरने वाला कोई हबशी ही हूँ। मैं न तो जापानी हूं, न चीनी, न अंग्रेज, न रशियन, न पठान और न ही मैं हिन्दुस्तानी हूँ। मैं सब कुछ हूं यद्यपि इनमें से मैं कोई एक भी नहीं।

हां तू मेरी बड़ी बेटी है, मैंने आदि सृष्टि में तुझे पैदा किया। तुझे सर्वोत्तम सुन्दर घर दिया, कैलाश रूपी तिलक तेरे ललाट पर लगाकर स्वयं मैंने तुम्हें सारे संसार की साम्राज्ञी बनाया। गिरिराज हिमाञ्चल तेरी रक्षा के लिये मैंने तेरे मुख्य द्वार पर खड़ा कर दिया। तीन ओर वरुण देव को तेरी चरण वन्दना के लिये सदैव तत्पर रक्खा। और प्रकृति माता ने स्वयं अपने कर कमलों से तेरे गले में भागीरथी की जयमाला डालकर तुझे अमर कर दिया। वेद रूपी ज्ञान सब से पहले तुझे ही दिया गया। संसार में प्रत्येक प्रकार की प्रत्येक सर्वोत्तम वस्तु तुझे दी और जब तक तू जागती रही मैंने सारे संसार को सुलाय रक्खा। जब तक तेरे अन्दर जीवन रहा तब तक मैंने अन्य किसी को जीवन प्रदान नहीं किया। जहां से तेरे इतिहास की समाप्ति होती है वहां से सारे संसार का इतिहास आरम्भ होता है। जहां से तेरे साहित्य की इतिश्री होती है वहां से सारे संसार के साहित्य का श्रीगणेश होता है।

हे हिन्द माता ! जगत् पिता होते हुये भी मैंने सारे संसार की अवहेलना करके तुझ पर सदैव कृपा दृष्टि रक्खी।

जब-जब भी तेरे ऊपर विपत्ति आई, मैंने तेरे ही पुत्रों के अन्दर अपनी शक्ति का प्रकाश करके उन्हीं के द्वारा तेरा उद्धार

करवाने का पूरा-पूरा प्रयत्न किया।

हे हिन्द माता ! जिस प्रकार दुष्ट जनों के बीच में से किसी भी सुन्दर अबला का सुरक्षित निकल जाना असम्भव सा प्रतीत होता है वैसी ही तेरी अवस्था हुई। आपत्तियों का पर्वत तो आदि सृष्टि में ही तुझ पर टूट पड़ा, तेरे तो पैदा होते ही तुझे छलने के लिये असुरों तथा देवों में युद्ध छिड़ गया। और यह देवासुर संग्राम ही तेरे इतिहास का मुख्य वर्णन है।

देवासुर संग्राम में देवों की रक्षा के लिये और असुरों के हाथ से तुझे बचाने के लिये भिन्न-भिन्न समय में मैंने अपनी शक्ति के द्वारा तेरे ही पुत्रों के अन्दर वह जीवन भरा कि उन्होंने तेरे वक्षःस्थल पर हो रहे देवासुर संग्राम में दधीची के समान अपनी अस्थियों का बज्र बनाकर तेरे चरण-पाशों का छेदन किया मच्छ, कच्छ, वाराह,बामन इत्यादि वीर वाकुरों को तेरे पुत्रों ने उनके सम्मान स्वरूप में अवतार God incarnate) की पदवी दी। जिस प्रकार आज कल की सरकार अपनी सहायता करने वालों को "राय बहादुर" अथवा "सर" इत्यादि का खिताब दे देती है ऐसे ही तेरे पुत्रों ने उन वीरों को सब से बड़ी उपाधी "अवतार" (Super human beings) से विभूषित किया।

हे हिन्द माता ! ऐसी शक्ति एक बार नहीं अपितु बीसियोंवार मैंने तेरे पुत्रों के अन्दर प्रज्वलित की। उन सब का वर्णन करना कभी भी समाप्त न होने वाली एक लम्बी गाथा का श्री गणेश करना है।तू भी सम्भवतः इतनी दूर की बातों को भूल गई होगी।

मैं भी इस अतीत काल की कल्पना को छोड़ कर उस समय की याद दिलाता हूं जिसे तू कभी भूल ही नहीं सकती।

आज से पूरे आठ लाख वर्ष पहले जब असुरों ने तेरे चारों ओर घेरा डाल लिया था। लङ्का का राजा रावण अपना असुर दल लेकर जब तेरे ऊपर टूट पड़ा था। ताड़का, त्रिशरा सुबाहु, मारीच, विराध, कदम्ब, वाणासुर, अहिरावण सर्वतः राक्षसों के तुझ पर प्रहार होने लगे थे उस समय मैंने मर्यादा पुरुषोत्तम कौशल्या-नन्दन राम के हृदय में उस ज्योति का प्रकाश किया और तूने देखा हे हिन्दमाता उस अकेले वीर ने, किस प्रकार-आर्य-वतः की उज्ज्वल पताका को महाराजा रावण की सोने की लङ्का पर फहरा कर चारों ओर फैले हुए असुर समुदाय को नष्ट भ्रष्ट किया था।

भगवान राम के चले जाने पर कई शताब्दियों के उपरान्त इस राक्षस-मण्डल का बल फिर बढ़ा और एक बार फिर सुसंगठित रूप से इन्होंने रावण के समान ही तेरे अपहरण का प्रयत्न किया। उस समय वही ज्योति मैंने शकुन्तला-नन्दन भरत के हृदय में जगाई। हे हिन्दमाता वह तेरा पुत्र भरत इतना बहादुर था कि उसने न केवल इन आस-पास के राक्षसों का ही नाश कर दिया अपितु तत्कालीन संसार में आर्यवर्त का एकछत्र शासन जमाया। उसी तेरे पुत्र के नाम पर तेरा नाम भारत-वर्ष पड़ा।

महाराज भरत स्वर्ग सिधार गये। उन के आंख मीचते ही सोई हुई आसुरिक शक्तियां फिर चेतीं और क्या भीतर क्या बाहर सब स्थानों में उन्होंने अपनी शक्तियों को बढ़ाना आरम्भ किया। इस से पूर्व तो केवल विदेशी राक्षस ही तुझे लूटते थे, परन्तु अब तेरे ही आत्म-पुत्र राक्षस रूप धारण कर

तेरा संहार करने लगे। कंस ने अपने कुल का नाश कर के खून से लिथड़े हुए गोकुल के सिंहासन को अपने अधिकार में किया। महाराज जनक की वैदेही; विष्णु पाद की पवित्र भूमि मगध में जरासिन्धु ने नर-मेध का श्रीगणेश किया। चेदिराज शिशुपाल, काशीपति, पौंड्रक मिथ्याभिमान तथा स्वार्थ के वशीभूत हुए तेरी गोदी में उत्पात मचाने लगे। महाराज शान्तनु की सन्तान राजर्षि भीष्म की संरक्षता में मनमाने कुकर्मों में लीन होगई। कालयवन प्रभृति विदेशी राजा भी तुझे लूटने में पीछे नहीं रहे। उस समय तेरे कल्याण के लिये आनन्दकंद मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र का जन्म हुआ।

भगवान आनन्दकन्द योगेश्वर कृष्णचन्द्र तेरे घर में फैली हुई अराजकता को मिटाने में सफल हुए। रोग का नाश तो होगया परन्तु रोगी इतना शक्तिहीन होगया कि अपने संरक्षक के तनिक भी परे होजाने से फिर निशाचरों द्वारा ग्रस लिया गया।

महाभारत-युद्ध के भय से कुछ तेरे ही जीवन-मोही पुत्र जो सीमान्त की ओर भाग गये थे वह उस रोगी पर झपटे और उस बेचारे की बहुत बुरी अवस्था करदी। इन सर्पोंका उत्साह यहां तक बढ़ गया कि इन्होंने आवेश में आकर पांडु-वंशावतंस, उत्तरा-कुमर महाराज परीक्षित का वध करके इन्द्रप्रस्थ के शासन पर स्वयं अधिकार जमा लिया। उस समय मैंने महाराज जनमेजय के अन्दर उस ज्योति का प्रकाश किया और उस दैविक शक्ति, को पाकर उस तेरे वीर पुत्र जनमेजय ने उस नाग जाति के राक्षसों को इतना पछाड़ा कि सतलज पार से एकदम अटक के परे फैंक दिया। तक्षशिला में सर्पयज्ञ (The frontier martial-

law) का आरम्भ हुआ। यह यज्ञ निरन्तर बारह वर्ष होता रहा और तेरा घर निशाचरों से सर्वथा पवित्र होगया॥

परन्तु महाभारत युद्ध में खोई हुई अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त करना तेरे लिये कठिन होगया और वीर्य के नाश होजाने से तेरे पुत्रों के अन्दर जात–पात तथा ऊँच–नीच का मिथ्याभिमान भर गया। भाई–भाइ का शत्रु बन गया। सब ओर वाम मार्ग फैल गया। धर्म के नाम पर अधर्मों का ताँता बँध गया। ईश्वर का साइनबोर्ड लगा कर घोरतम नास्तिकता का प्रचार हुआ। एक ईश्वर को छोड़ नाना प्रकार के काल्पनिक देवी देवताओं के पीछे संसार पागल होने लगा। पवित्र यज्ञ के नाम पर हिंसा का आरम्भ हुआ। गोमेध, नर मेध, पशु मेध यज्ञों का आविष्कार हुआ। धर्मजीवी धर्मगुरु अपने आपको साक्षात् परम ब्रह्म के एजन्ट समझ कर लगे गरीब, धर्मभीरुओं को लूटने। उस समय भगवान बुद्ध का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने इस धार्मिक अराजकता का सर्वनाश किया।

भगवान बुद्ध की शिक्षा को यदि तेरे पुत्र ठीक रूप में समझते तो आज वे भी जापान तथा चीन के समान स्वाधीन होकर रहते। परन्तु तेरे पुत्र तो केवल वितण्डावाद करना ही जानते हैं। भगवान बुद्ध के अहिंसा धर्म का अर्थ न समझते हुए यह लकीर पन्थी एक दम कायर होगये और दारा, सिकन्दर इत्यादि यवनों ने तुझ पर आक्रमण किये। उस समय नीतिज्ञ शिरोमणि चाणक्य तेरी रक्षा के हेतु आया और तेरे घर में लूट मचाते हुये यवनों का सर्वनाश कर दिया।

शताब्दियाँ बीत गईं। शङ्कर कुमारल प्रभृति महान आत्मायें

तेरे कल्याण के लिये आई, परन्तु तेरे लकीर पन्थी पुत्र उन की शिक्षाओं को उल्टा समझ अपने हाथों अपना सत्यानाश करने लगे। जिस धर्म का आश्रय लेकर सारा संसार चेत उठा उसी धर्म की वास्तविक्ता को न समझने हुये तेरे पुत्रों ने स्वयं अपना संहार किया। और उस समय पश्चिम की ओर से तुम पर एक वज्रपात हुआ। मुहम्मद बिनकासिम, सुब्कतगीन, महमूद गज़नवी मुहम्मद ग़ौरी, चंगेज़खां तथा नादिरशाह इत्यादि लुटेरों ने तेरे घर को उजाड़ना शुरू कर दिया और उन्होंने तुझ पर बड़ा भारी अत्याचार किया। अरब के मरुस्थल से लाई हुई फ़ौलादी बेड़ियों से तुझे जकड़ लिया और सदैव के लिये तुझे वन्दी बना लिया गया। साथ ही साथ वह त्रिफणधारी एक और आफ़त लाये (१) **मुहम्मद** इन्सान के रूप में अरब के मरुस्थल में अवतरित हुआ, अल्ला मियां का मुख्तारे आम (२) **क़ुरान**—अल्ला मियां के नाम पर अरब प्रदेश की भाषा में उसके मुख्तारे आम के द्वारा गाया गया अरबी जीवन का गीत और तीसरा (३) **मक्का-मदीना** उस कृत्रिम सिकतेश का क्रीड़ा—स्थल।

मरु भूमि की सर्वभक्षी तलवार के ज़ोर से उन लुटेरों ने तेरी मूक सन्तान को इस अल्ला मियां के प्राईवेट ए० डी० सी० के सन्मुख सिर झुकाने पर विवश किया। पतित पावनी भगवती भागीरथी के तट पर जहां वेद मंत्रों के गायन के साथ—साथ यज्ञ धूम उठा करता था वहां अब अल्ला—हो—अकबर के साथ—साथ खून की धाराऐं बहने लगीं। उस समय पृथ्वी कांप उठी और हे हिन्द माता ! तू बड़े ही ज़ोर से चिल्लाई। उस समय प्रत्येक कण-कण से एक शक्ति उत्पन्न हुई और वह शक्ति केन्द्री-भूत हो कर

गुरू नानक देव, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, गौरांग महाप्रभू, चैतन्य महाप्रभू, सामार्थ गुरू रामदास, गोस्वामी तुलसीदास—सूरदास तथा ज्ञानेश्वर के रूप में प्रकट हुई। इन महान आत्माओं ने इस तेरे भय को तथा यवनों के इस आध्यात्मिक पाप को अपने ज्ञान की शान्ति सुधा से शान्त किया।

धर्मराज युधिष्ठर की नगरी में फिर से अधर्म का चक्र चला। पतितपावनी भगवती भागीरथी के सुरम्य तट पर अरब की कांटेदार झाड़ियाँ छा गई। ऋषियों की तपोभूमि में मरुस्थल की झाड़ियों का उपजना यद्यपि प्रकृति माता के विरुद्ध प्रत्यक्ष चेलेञ्ज था। परन्तु हे भारत माता! जयचन्द प्रभृति तेरे ही पुत्रों की दुष्टता को देखकर तो साक्षात प्रकृति माता का भी दिल टूट गया।

इस यवन-बृक्ष को किस प्रकार उखाड़ा जाये यह मेरे सामने एक समस्या थी। हे हिन्द माता! यद्यपि मैं सर्व शक्तिमान हूं, यदि मैं चाहता तो क्षण मात्र में ही इन कांटेदार पेड़ों को नष्ट-भ्रष्ट कर देता। परन्तु न्यायकारी परमात्मा तेरे पुत्रों द्वारा तेरे प्रति किये गये पापों को क्षमा कैसे कर सकता था। यह मेरे सामने एक कड़ी समस्या थी। एक ओर तेरा तीव्र शोक मेरे लिये असह्य था तो दूसरी ओर तेरे पुत्रों का पाप मुझे अपनी शक्ति का प्रयोग करने में बाधित हो रहा था। अस्तु स्वयं निर्लेप रहते हुये भी मैंने इन यावना-बृक्षों को उखाड़ने का उपाय सोचा और एक दूसरे के पीछे तीन वीरों को इस कार्य पूर्ति के हेतु तेरी गोदी में भेजा।

पहले वीर का कर्तव्य था इस अरबी बृक्ष की जड़ों पर पानी फेंकना और इस प्रकार इसे ढीला कर देना। दूसरे वीर का

कर्तव्य था इस वृक्ष को अपनी भुजाओं में लेकर हुचके मार कर जड़ों से उखाड़ डालना। तीसरे वीर का काम था इस वृक्ष को उखाड़ कर खैबर द्वार की दूसरी ओर फेंक देना।

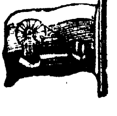
अस्तु ! इसी मिशन की पूर्ति के लिये तेरी गोदी में राजस्थान केशरी हिन्दु-पत्ति महाराणा **प्रताप**, महाराष्ट्र केशरी छत्रपति **शिवाजी** महाराज, दशमपादशाह भारतपति **गुरुगोबिन्दसिंह** जी महाराज का प्रादुर्भाव हुआ और यह यावनी-वृक्ष उखड़ गया। परन्तु तेरे पर तो एक न एक आफत बनी ही रही। इस यावनी-वृक्ष के उखड़ते ही तेरे घर में इसाइयत्त का महा अन्धकार छा गया और लगे तेरे पुत्र इसी में अन्धे होने। उस समय ऋषि सन्तान को सन्मार्ग पर लाने के लिये तेरी गोदी में ऋषियों की ज्योति-महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। बता हिन्द माता राजस्थान केशरी हिन्दू पत्ति महाराणा प्रताप की कठोर तपश्चर्या; हमीर रासो, राणा संग्राम तथा जयमल-फत्ता का अनुपम बलिदान, पद्मनी वीरागंना का सर्व बलिदान, छत्रपति महाराष्ट्र केशरी शिवाजी का अनथक परिश्रम, गुरु तेग़ बहादुर का बलिदान, गुरु गोबिन्दसिंह का सर्वस्व त्याग, दयानन्द का प्रयत्न, ग धी की तपश्चर्या—इन सब का परिणाम आज क्या निकला। तेरी अवस्था देखकर तो ऐसा प्रतीत होता है मानों कुछ हुआ ही नहीं। मानों कोई शिवाजी तुझ में जन्मे ही नहीं, मानों तेग बहादुर तेरी गोद में खेले ही नहीं, मानों गुरु गोबिन्दसिंह जी महाराज ने कुछ किया ही नहीं।

देख हिन्द माता! एक लैनिन ने रूस को ज़ार से छुड़ा दिया। एक नैपोलियन ने सारे योरुप को फ्रांस के आधीन कर दिया, एक

मुस्तफा कमाल पाशा ने समस्त टर्की को एक नवीन ही रंग में रंग दिया। एक रजाशाह ने ईरान को बिल्कुल स्वतन्त्र कर दिया। एक जागलूल पाशा ने मिश्र को युरोपियनों से बिल्कुल साफ कर दिया। एक हिटलर ने पराजित तथा पददलित जर्मनी को एक जीती जागती जाति में परिणित कर दिया । एक मुसौलिनी ने एक साधारण सी इटली को आज ऐसी असाधारण शक्ति दी कि बड़े-बड़े राष्ट्र भी उसकी ओर आँख उठाकर नहीं देख सकते। एक वाशिंगटन ने अमेरीका को युरोपियनों से आज़ाद करा दिया, एक सनयुत-सैन ने जीवन-रहित चीन को ऐसा वीर बना दिया कि आज वह जापान की ईंट का जवाव पत्थर से दे रहा है। और आज हे हिन्द माता जो तेरे घर पे सर्वतः यूनियन जैक फहराता हुआ दीख रहा है यह सब एक ही आंगल वीर क्लाईव के परिश्रम का फल है।

संसार के प्रत्येक राष्ट्र के एक महापुरुष ने अपने राष्ट्र को अमर कर दिया परन्तु तू साक्षात अमर पुत्रों की माता होकर भी और एक से एक बढ़िय वीर की जननी होकर भी आज अनाथों के समान रो रही है। क्यों ?

भगवान के मुखारविन्द से इस प्रकार का उपालम्भ सुनकर हिन्द माता निरुत्तर सी होकर बोली—"भगवन ! इसका रहस्य तो सर्वज्ञ देव ही जान सकते हैं।"



राष्ट्र-देवी
भव

जननी जन्म भूमि देवी पर
जो सर्वस्व चढ़ाते हैं।
धन्य धन्य है जीवन उनका
वही जन्म फल पाते हैं।
अत्याचार अनीति दबाते,
दुःखी देश का दुःख मिटाते,
स्वतन्त्रता का स्रोत बहाते,
मातृ भूमि की लाज बचाते
जो बन्दी घर जाते हैं।

कुछ आरज़ू नहीं है. है आरज़ू तो यह है।
रख दे कोई ज़रा सी खाके वतन कफन में॥

(४)

चौथा अध्याय

मुझे तोड़ लेना वन माली
उस पथ में देना तू फेंक ।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक ॥

—एक भारतीय आत्मा

श्री भगवान बोले—हे हिन्द माता ! तेरा एक छोटा भाई जापान है । आयु में तुम से बहुत छोटा है, परन्तु है बड़ा नटखट । लगभग बत्तीस वर्ष हुये रूशिया (Russia) नामी एक रीछ की नज़र इस जापान पर पड़ी और वह रीछ इसे असहाय जान हड़प कर जाने के लिये झपटा । उस समय तू हिमालय के शैल-शिखर पर बैठी इस देवासुर संग्राम को देख रही थी, और मैंने भी आकाश में भ्रमण करते हुये उस समय प्रशान्त सागर के अशान्त तट की आभा को लखा था ।

वह रूस रूपी राक्षस इतना बड़ा था कि जापान बालक उसके सामने खड़ा हुआ ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों दीर्घकाय मेघनाद से युद्ध करने के हेतु उसके सामने एक अल्प काय-कपि सुसज्जित

है। परन्तु जापान के बहादुरों ने रूस को पछाड़ डाला और ऐसा पछाड़ा कि आज तक उस रीछ की हिम्मत नहीं पड़ी कि जापान की ओर आंख तक उठाकर भी देख जाये।

रूस के जल-यानों को डुबो देने के लिये सैंकड़ों ही जापानी जीवित प्रशान्त सागर में कूद पड़े। खाईयों को भरने के लिये मिट्टी के ढेरों के स्थान पर जापान वीरों की छातियां लिट गई। माताओं ने अपने पुत्रों को, बहिनों ने अपने भाइयों को स्त्रियों ने अपने पतियों को सहर्ष मनसा समर क्षेत्र में भेज दिया—और मातृ-शक्ति का आशीर्वाद पाकर वह वीर-वांकुरे भी इस प्रकार रिपु-दल पर टूट पड़े मानों कालिंग विजयी अशोक की आत्मा फिर से उनके अन्दर जागृत होउठी।

बता, हिन्दमाता! उस समय जो त्याग जापानके वीरों नेमातृ-भूमि जापान के लिये किया क्या तेरे पुत्रों ने कभी तेरे लिये वैसा बलिदान किया?

इतना कहकर भगवान चुप होगये। हिन्दमाता कुछ कहने का प्रयत्न करती हुई भी कुछ न कह सकी। भागीरथी के तट पर एक क्षण के लिये सन्नाटा छा गया—परन्तु वह निस्तब्धता, बहुत देर तक न रह सकी और समस्त दिशाओं को प्रतिध्वनित करती हुई भागीरथी के तट से एक ध्वनि उठी—

करतार, राजेन, गणेश-पिङ्गल—
अश्फ़ाक, लाहरी, बिसमिल, खुदी राम
चितरञ्जनो, दास, सुभाष हरिदयाल—
हैं एक से एक बड़े मेरे लाल।

इन्द्रो, यतीन्द्रो, महतो, महेन्द्रो—
गुप्ता, हरिकृष्ण, अजीत, रौशन
सुखदेव, दत्त, राजगुरु, जगतपाल—
हैं एक से एक बड़े मेरे लाल ।

ज्वाला, जगतराम, अवध बिहारी—
अमीर, अम्बा, असुरान्त-कारी
संख्ये जिता जिन विकराल काल
सौवीर योधा मम वीर लाल ।

वीणा, वीरेन्, भगत, रास बिहारी बोस,
सत्येन्द्र, सैन-सरत्चन्द्र, फनीन्द्र घोस
ताके सदृश कोउ वीर भला है कुत्र ?
हैं एक से बढ़ के एक मेरे सपुत्र

आजन्म शीश जिसने न कभी झुकाया,
मृत्यु में भी जिसने मङ्गल मोद पाया,
बंगाल-केशरी-किशोर यतीन्द्र प्यारा
हा ! हा !! वह छोड़ मुझको सुरपुर सिधारा

जो पांच-साठ दिन लौं विजयी समर में
यमराज सों युद्ध लड़ा रिपु-वन्दीं घर में
ताको अतुल बल प्रभो नहीं जानते जो,
जापान का गर्व सों गुण गा रहे हो

विशाल वक्षः स्थल बाहु जालम्
चन्द्रोपमम् वेश वपुः विशालम्
महा बलो महा सत्वो सुवीर्यो
स भक्त सिंह भक्त वरः प्रियः मे

भ्रू भेद मात्रेण पदान्मघोनः
प्रभ्रंशयामिरवर्ण यो चकार
सौभद्र भद्रेव वधाय वध्यान
प्रविवेश यो सिंह सुतो रिपुगृहे ॥

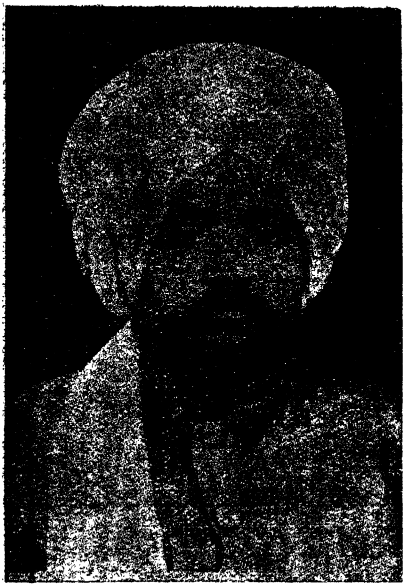
डायर ने जो अमरपुर में, खूं की नदियां बहाईं
बेहत्थों पै नर-पशु ने जो गोलियां थीं चलाईं
अमृतसर के अमर-सर में रक्त-धारा बही थी
वत्सानल सों कण-कण सनी पुण्य भारत-मही थी

जिस भूमि पै सुरगण सदा पुष्प वृष्टि बहाते
सायं-प्रातः विचरन् नभे मंगलाचार गाते
जिस भूमि पे सत्गुर ने आ सूरमें थे जिलाये
उस भूमि पे प्रलय नभ से शौणितांगार छाये

वह **राजाराम, रतनचन्द** और **चौधरी वीर बुग्गा,**
गिरधारीलाल, अमरसिंह और **सत्यपालादि** योद्धा
मातृ भू के पद-कमल पे जाने सर्वस्व वारा—
जिन वीरों के विमल यश को गा रहा विश्व सारा

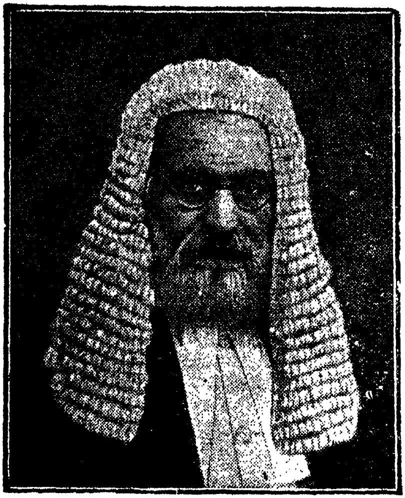
शेर-जंग

वह मातृ-भूमि-लोह-बन्धन छेत्तु कामा।
जाता हुआ पवन सों जिन यान थामा ॥
वह शेर जंग वह लाल मेरा प्यारा ।
मम कारणे सुख तजि दुःख लेत भारा ॥
पर्यङ्क पे भी सुख से न कभी जो सोता।
कोमल सुकाय हित वह भी कठोर होता।
भारत हिताय जिन दुःख सहा बड़ा है।
क्या जानते हो भगवन किस जा पड़ा है ॥



स्व० पं० लेखराम जी

जा ने प्रिय धर्म पे निज प्राण वारे,
संसार वैभव सभी तृण सों बिसारे।
वह शूर वीर मम पुत्र गुणैकधाम,
आर्य-पथिक अतुल-वीर वह लेखराम।
वेधर्मियों को धर्मी जिस ने बनाया,
वैदिक-धर्म को जिसने घर-घर पहुँचाया।
आर्यत्व गौरव किया जिस ने महान,
क्या जानते हो उसका वह महान दान।



श्री प्रधान पटेल

एकं शरण्यं शरणागतानाम्,
एकं वरेण्यं वरयाचकानाम्;
एकाधिराजो राजेश्वराणाम्,
एकं भयं विश्वभयप्रदानाम् ॥

स वृद्ध-तरुणीनयनाऽभिरामः
असम्बली-सिंह पटेल वीरः ।

एकाधिराजो राजेश्वराणाम्
कृष्णाग्रजोवीर हलायुधः सः ॥

यस्मिन्प्रयाते परलोकयात्राम्
सौराष्ट्र वीरस्य महाबलस्य
प्रिया हि दिल्लीशसुता जनेश
असम्बली सा विधवा बभूव ॥

भारत माता बोली—भगवन ! जिस वीर ने शत्रु-दुर्ग (*assembly*) के अन्दर दाखिल हो, निरन्तर छः वर्षों तक देवासुर-संग्राम में बड़ी ही वीरता से देव सेना का नेतृत्व किया। जो अपने कर्त्तव्य पथ से एक इञ्च भी पीछे न हटा। और जो उसी रण क्षेत्र में वीर गति को प्राप्त हुआ; उस असम्बली के शेर-प्रातः स्मरणीय राजर्षि-पटेल का त्याग क्या जापान के वीरों के त्याग से कुछ कम है।

कान से पकड़ जिन मार फेंका पुलिस को,
लाट के भरोसे बने फिरें लाटी टीन जो।
लाट के भी लाट टुंडी लाट के भी लाट—
कहां ताव ताहि लखके प्रणाम न ही की जो
बांध के दिखाई मर्याद परधानगो की
खूब खैंचे कान कहें एक चार तीन जो।
आज बीबी पुलिस न काहे मनमानो करें
हो गई असम्बली बेचारी पति-हीन जो—

राजत असम्बली में, साजत पटेल ऐसे
मानों देवराज इन्द्र-सभा में विराजे हों
मानों राजते हों तारा वृन्द माहीं तारा-पति
पूर्णिमा के चन्द्र जिमि व्योम माहीं साजे हों।
मालवी, देसाई, नेहरु आदि सप्त ऋषियों के
मध्य में पटेल पूर्ण चन्द्र सम राजे हों।
लखि करि मुख पाहीं ऋषियों सा तेज जसु
कितने ही हेग, हेली मन माहीं लाजे हों

भगवान तिलक

वार्धक्य युक्तोऽपि महानुभावो
मासाँस्सकांश्चिद् दृढनिश्चयोऽसौ।
द्वीपान्तरे लण्डन राजधान्यां
गत्वा स्थितो लोक हितायमान्यः

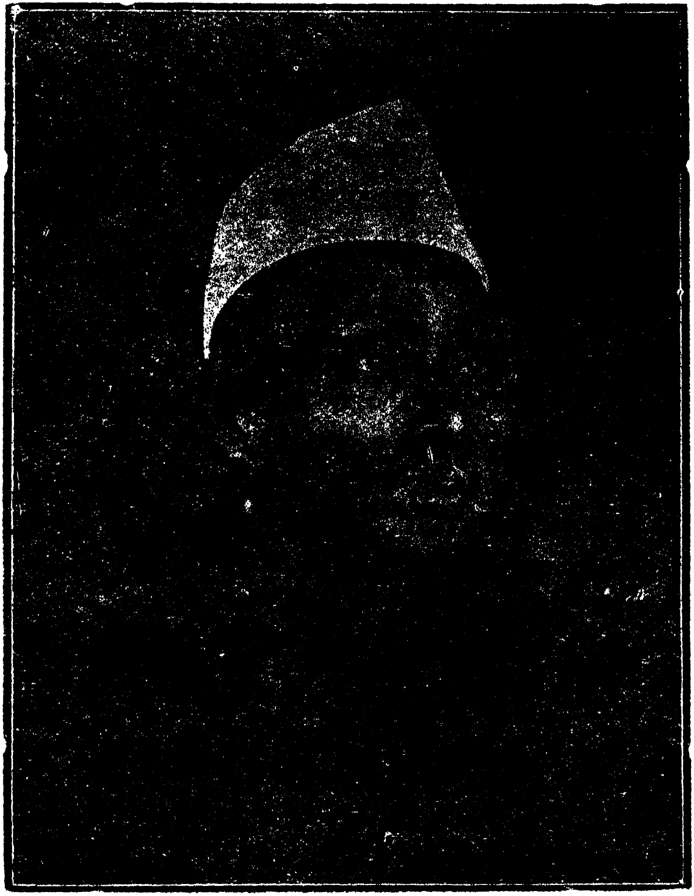
स्वातंत्र्य लाभाय बहु प्रयत्नः
श्रान्तो दयालु र्जगतां हिताय
क्षीणां तनुं वा ःवरया विहाय
लब्धुं नवां हा ह !! दिवंगतःस

हे भगवान! जिसने अपना सर्वस्व मुझ पर न्योछावर कर दिया। बुढ़ापे में भी जो अपने कर्तव्य-पथ से किञ्चन्मात्र भी विचलित न हुआ लन्डन, मण्डाले, रत्नागिरी के क्षेत्रों में जो बड़ी वीरता से भारत को स्वाधीनता के लिये लड़ा और अन्त में भारत के स्वाधीनता यज्ञ में ही जिस वीर ने अपनी जीवन-आहुती प्रदान की. उस महाराष्ट्र केशरी वीर शिरोमणी भगवान बाल गंगाधर तिलक का त्याग जापान के वीरों से कोई कम है?

पार्थ सा पराक्रमी विपुल बल शाली वह
शासकों में शक्र सा अपूर्व तेज धारी था
दीन दुःख नाशक, उपासक स्वतन्त्रता का
पालक, पुजारी देश भव-भय हारी था
भानु सा प्रतापी, राजनीति का विधाता वर—
परम प्रसिद्ध रण-रंग का खिलारी था
पूज्य था नरों में, वन्दनीय विवधों में बाल—
गंगाधर प्यारी मातृ भूमि का पुजारी था

कर्मयोग आचार्य,
आर्य आदर्श उजागर।
निर्मल न्याय निकुञ्ज,
पुञ्ज करुणा के सागर।
सुदृढ़ सिंहगढ़ के सजीव,
ध्वज-धर्म धुरन्धर।
अच्युत अनुकरणीय,
प्रेम के प्रकृत पुरन्दर।

प्राणोपम राष्ट्र प्रताप वर, अघ त्रिताप हर सुरसरी।
जय जय सत्ता के छत्रपति, महाराष्ट्र-कुल केशरी।



लोके स मे लाजपतिः शरण्यः,
पाञ्चालपुत्रीं परिरक्षणाय ।
ससारिभिर्यः समरे युयोध,
कच्चिन्न जानासि तदीयवीर्यम् ॥

भगवन ! जो स्वाधीनता समर में इरावती के तट पे जो अकेला वीर सात महारथियों से भिड़ा । देवी पाञ्चाली की लाज को बचाने के लिये वह बूढ़ा भीष्म शेर के समान दहाड़ता हुआ रिपुसैन पर टूट पड़ा—उस पंजाब केसरी लाला लाजपतराय का बलिदान क्या जापान के वीरों के बलिदान से कुछ कम है ?

पंजाब-केशरी

(१)

आजा आजा तु शेरे पंजाब आजा,
आके बिच असेम्बली गज्ज लाला ।
तेरे बिना तेरे देश वासियां दी,
टुट्टी प्रेम वाली देखीं लज्ज लाला ।
सच्चा प्रेम भुल्ले आपो-धाप पै गई,
देखीं फिरकुआँ दे भैड़े चज्ज लाला ।
तेरा देश पंजाब वीरान होया,
रया जीन दा कोई न हज्ज लाला ।

(२)

आजा आजा तु शेरे पंजाब आजा,
शेरा चल के जन्म तैं लया कित्थे ।
सानु कह गया सी मैं ते आऊं छेतीं,
ऐड़ो देर ताईं दस तु रया कित्थे ।

गिद्दड़ भौंकदे ने लखों लखभावें,
नित्य शेर आंदा तेरे जया कित्थे ।
धाड़ां मारदी पई तेरी भारती मां,
मेरा शेर पंजाब दा गया कित्थे ।

(३)

आजा आजा तु शेरे पंजाब आजा,
कित्थे चल तैं शेरा कयाम कीता ।
देख आन इन फिरकापरस्तियांने,
तेरे देश दा नाम बदनाम कीता ।
ओ पंजाब रहंदा पेश पेश जेड़ा,
ऐना फिरकुआँ अज नाकाम कीता ।
सां सां करदी रावी पई रोंदी,
मेरा जीवना एना हराम कीता ।

(४)

आजा आजा तु शेरे पंजाब आजा,
बाट देखदा सारा संसार तेरी ।
रावी माँ तेरी पई रोंवदीं ए,
कन्डे फेर न सुनी पुकार तेरी ।
ब्योगे क्रेसी दे कौफिन दी कील होजाऊ,
साईमन सैवनदी डाँगां दी मार तेरी ।
पई अज भी कन्नां च गूंजदी ए,
मोरी गेट दे बाहर ललकार तेरी ।

(५)

आजा आजा तू शेरे पंजाब आजा,
आई आजादी दी हत्थीं मशाल लैके।
जेतनदास, सुखदेव नु संग लयावीं,
भगतसिंहनु तु आवीं नाल लैके।
तिलक गोखले, ते सीआरदास, गुप्ता,
आवीं नाल तु शेर बंगाल लैके।
श्रद्धानन्द, विद्यार्थी, दास, तैय्यब,
जे ऐम सैनगुप्ता, मोतीलाल लैके।

स्वामी श्रद्धानन्द

गुरु-कुल-रवि सों जिसने त्रिभुवन प्रकासा,
फैला हुआ सर्वतः तम तोम नासा।
गङ्गा के तीर उपजा जिन ज्ञान-स्रोत
वैदिक-धर्म की जिन दिव्य जगाई ज्योत॥
वह श्रद्धानन्द आनन्द-निकेत सूर,
जिसने किया जगत का दुःख ताप दूर।
आत्मावलम्बन हिय जिसने उभारा।
स्वदेश हेतु जिसने सर्वस्व वारा॥

भगवन ! सुरसरी की पवित्र धारा में ज्ञान रूपी सुधा धारा बहा कर जिस वीर श्रेष्ट ने मेरे कण्ठहार की शोभा को दस गुणा बढ़ा दिया। वैदिक-ज्ञान की ज्योति जगाकर जिस नर-केशरी ने भूले भटके आर्य वीरों को साक्षात ऋषि-सन्तान बना दिया और इन्द्रप्रस्थ पर बरसाई हुई दावानल को जिसने अपनी छाती पर सहकर कालिन्दी-माता की लाज राखी उसस्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान क्या जापान के वीरों से कुछ कम है ?

उसी समर भूमि में जँह था डायर ने नर-मेघ रचा,
जिल्यांवाले यज्ञ-कुण्ड में डारे सब न एक बचा।

उसी समर भूमि में गरजा श्रद्धानन्द भारत का शेर;
विजय पताका गाड़ी, जय बोली भारत की बीसों बेर ॥

दिल्ली के चाँदनी चौंक में असुर चला संगीनें तान,
भारत के निर्दोष खून से खूनी खूं की प्यास बुझान।

अहा ! वहां भी एक पलक में जा गरजा भारत का शेर,
बोला, खोल बटन छाती के ले, ले, अब ले क्या है देर ॥

हो तैयार ! उठा संगीनें !! बटन दबाकर पूरी आस,
सन्यासी के शुद्ध रक्त से भली बुझेगी तेरी प्यास !!!

हा ! श्रद्धा का पात्र श्रद्धानन्द, पाञ्चाली का अनुपम लाल,
धर्मान्धता की भेंट चढ़ा, हा फूट गया भारत का भाल ॥

पं० मोतीलाल नेहरू

जा ने सभी स्वर्ग बैभव तुच्छ जानी,
छांडे स्वदेश हित सब तृण के समानी।
वह मोतीलाल वह लाल मेरा प्यारा;
सर्वस्व जा ने निज देश हिताय वारा ॥

कौशिक के यज्ञ पूर्ण के हित
कौशल राज दिये दोउ भाई।
चार थे, चार में दो ही दिये
अरु दे कर दो पास दो को बचाई।
तेरे तो एक ही मोती का लाल-
जवाहर जानती सारी खुदाई।
ताही की स्वाधीनता यज्ञ में
तैंने भारत के हित भेंट चढ़ाई।

भगवन ! जिस वीर ने अपना सर्वस्व देश पर न्यौछावर कर दिया। अपने एक मात्र जवाहर को जिसने राष्ट्र माता पर वार दिया। आनन्द भवन के सुख को छोड़ जिस मेरे पुत्र ने देश के लिये कारागारों की यातनायें सहीं, उस त्रिवेणी-नरेश जवाहर पिता राजर्षि मोतीलाल का त्याग क्या जापान के वीरों के त्याग से कुछ कम है ?



सुभाष चन्द्र बोस

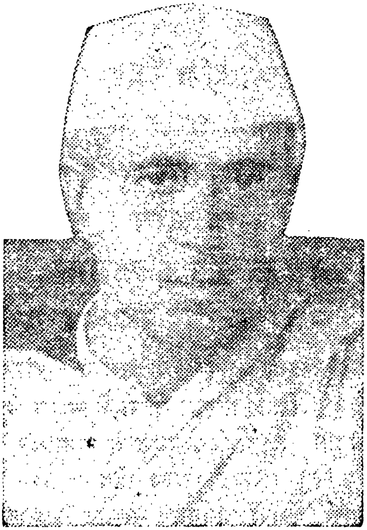
यूरोपादिविदेशकीर्तितयशोगाथाजगत्शिक्षका
येषां दर्शनकांक्षयैव जनता दूराद् समागम्यते
कष्टं घोरतरं सहन्नपिमुदा देशाधिपत्यंभरा
वीरस्त्वेष सुभाष केशरी वरः बंगाल भूपालकः

स्वातंत्र्य का प्रिय उपासक कर्म-वीर,
बंगाल-गौरव-प्रभाकर धर्म वीर;
देशाभिमान परि पूरित धैर्य-धाम-
योधा सुभाष भुवि विश्रुत पूर्ण-काम।
वीरत्व देख मन में रिपु भी लजाते,
हैं हर्ष युक्त जिन के गुण गान गाते।
है युद्ध नोति जिन की छल छिद्र हीन
सत्याग्रह समर में हैं अति प्रवीन॥
साम्राज्य धाम धन को अति तुच्छ जान-
त्यागे सभी सुख अहा! तृण के समान।
योधा सुभाष जिन के यश हैं ललाम
सौमित्र-वीर रणधीर गुणैकधाम॥

भगवन्— सुमित्रानन्दन लक्ष्मण के समान पूर्णतया यतियों सा जीवन व्यतीत करते हुए जिस अतुल योधा ने भारत क्षेत्र में रचे हुए देवासुर-संग्राम में अपनी वीरता से रिपुदल में हाहाकार मचा दी—न केवल भारत में ही अपितु समस्त यूरोप क्षेत्र में अपने बल की धाक जमा दी उस बंगाल केशरी नवयुवक-सम्राट सुभाषचन्द्र बोस का बलिदान जापान-वीरों के बलिदान से कुछ कम है क्या?

जिनके मुख मण्डल के आगे तारापति भी शरमाय है,
जिनके बाहुबल के भय सों कैलाश भी हिलता जाय है।
जसु तेज असह्य सों पूर्ण चन्द्र नभचर की ओट में आजायें,
अपि विश्वजीत वे अंगराज वह कामदेव शरमा जायें॥

कुमला जायें उपवन के पुष्प वसु भानु रूप लखि शरमा कर,
और जलज ईर्षा सों जलकर जल बन जायें जल में जाकर।
दुःख ताप हरें भूतल के जो, बरसा ससुधा धाराधर को,
बसु भानु तो हैं सुधा निधि ससुधा करदें वसुधा भर को
कोमल कोमल गात पे, कोमल कोमल रूप।
मानों षटपद् ने धरयो, जग मोहन को रूप॥



पं० जवाहरलाल नेहरू

अपनी कुर्बानी में है मशहूर नेहरू खानदान।
शमा महफल देखले यह घर का घर परवाना है॥

तन मन धन जिन देश पर वार दीन,
भरा है स्वदेश प्रेम जाकि रग रग में।
कोई वीर योधा नाहीं भुवि इस वीर सम,
जाकी वीरता की धाक मची सारे जग में।

तेजहू अनूप रूप गगन के भूप सम,
सिंह की न्याईं जातो विपदा के मग में।
'श्याम' पाछे हटने का नाम नाहीं लेत वीर,
कांटों की हो बिछि चाहे सेज पग पग में।

देव्या धृतः विजयमाला हि यस्य कण्ठे
रावी-तटे रचित स्वयंवरे लवपुरीयाम् :
नव जीवनम् पुनरागच्छति यस्य दृष्टे
स्वाधीनता-पति-जवाहर सैव भगवन् ॥

भगवन्---इरावती के पवित्र तट पे विजय देवी ने स्वयं अपने कर-कमलों से जिस वीर के सर पे राज्य-मुकुट पहरा कर " पैंतीस करोड़ भारत वासियों के हृदय सम्राट" की उपाधी से जिसे विभूषित किया था। सन् तीस की सवप्रथम प्रभात के आरम्भ होते ही प्रकृति माता ने जिस अपने प्यारे पुत्र पे अमृत वर्षा करके जिस की आत्मा के अन्दर स्वतंत्रता की दिव्य ज्योत जगाई थी—वह स्वाधीनता का भिखारी—नन्द भवन का आनन्द स्रोत, त्रिवेणी का राजकुमार जवाहर–राज्यरथ के ऐश्वर्य को ठुकरा कर जिस ने फकीरी का आलिंगन किया।

गरीबों के खून से लिथड़े हुए राज्य सुखों के अनुराग का त्याग कर जिसने देश की स्वतंत्रता का वैराग्य लिया—उस कमला पति जवाहर का त्याग क्या जापानी वीरों के त्याग से कुछ कम है ?

निकले थे आनन्द भवन से भला कहाँ पर जाने को !
नैनी की दीवारों में जा आज़ादी के पाने को !
योरुप के बाज़ारों से जा आज़ादी के लाने को !
या कमला सी कली देश माता के चरण चढ़ाने को ॥
जाति के जर्जर जीवन में जीवन ज्योत जगाने को !
गत-जीवन भारत जीवन में नव-जीबन सरसाने को !
स्वतन्त्रता के भीषण रण में ब्रह्म तेज दर्शाने को !
या आनन्द भवन की कमला कलिका के कमलाने को !
आशा हीन तमोमय पथ पर आशा दीप जलाने को,
प्यारी भारत मां के बन्धन छिन्न भिन्न कर जाने को !
पराधीनता प्रबल पाश से भारत-देश छुड़ाने को,
या तलाश में आज़ादी की मोतीलाल लुटाने को !
पतित पावनी त्रीवेणी में पीयूष धार बहाने को,
निर्धन, दीन-दलित भारत का भय-दुःख ताप मिटाने को
आज़ादी की बलि वेदी पे जा सर्वस्व चढ़ाने को !
या इस भोले पन पर जवाहर बिना मोल बिक जाने को !
मोती के तुम लाल जवाहर भारत के नयनाभिराम,
कमला के सर्वस्व कोटिशः हिन्दुन के हृदय विश्राम !
फूंकी तू ने रण-अभिलाषा ! खौला खून बढ़ा उत्साह,
मरने की धुन पैदा कर दी देश-धर्म की प्यारी राह !
जर्जर जर जीवन के तुम जीवन क्षत्रिय वीरों के सरताज !
नस नस में वीरत्व जगाते बिजली सी चमकाते आज ॥

राष्ट्रज्योति-जवाहर

राष्ट्ररथी योधा महान तू,
गुणी, नीति पटु ज्ञानवान तू,
कहां मिले उपमान जभी है जवाहर निरुपमान तू।
है केवल अपने समान तू,
मन मन्दिर में विद्यमान तू,
दिव्य प्रभामय बिमल बाल रवि प्रकट हुआ राष्ट्रीय गगन का।

नव जीवन आलोक दिखाया,
स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाया,
कर्म मार्ग पर लाकर हमको साहस के रथ पर बिठलाया!
समर भूमि की ओर बढ़ाया,
दिया चाप जब बाण चढ़ाया,
लेने को सुमधुर स्वराज्य-फल कल्प बृक्ष आनन्द भवन का।

गणेशशंकर विद्यार्थी

(मन्दा-क्रान्ता)

दुष्टों ने जो कर्णपुर में, खूं की होली मचाई ।
गंगा जी के विमल तट पे रक्त-धारा बहाई ।
अमृत-वाही जलद-पति ने फिर विषैला लिया श्वास ।
आये तां पे गणपति-गणेश नाशने को जगत्त्रास ।

रामायण का अमर परवाह जँह कवि ने बहाया ।
राजर्षि ने बिमल स्थल पे वेद का गान गाया ।
प्रलयंकारी अभिनय रचा, वां पे नाचा जो शैतान ।
आये तां पे गणपति-गणेश युद्ध करने घमासान ॥

भगवन् ! पतित पावनी गंगा जी के तट पे कानपुर में जब शैतान नाचा था, अमृत के स्थान पे जहाँ रक्त की धारा बही थी ; एक प्रलय का सा दृश्य जब भागीरथी के तट पर दीख पड़ता था, तब अपनी जीवन आहुति को उस पाप-कुण्ड की भेंट चढ़ा, जिस बीर ने प्रलय की देवी को शान्त कर मेरी सन्तान की रक्षा की थी उस वीर श्रेष्ठ गणेश शङ्कर का त्याग क्या जापान के वीरों के त्याग से कुछ कम है ?

देशभक्त सावरकर

जलयान में सर्वथा जकड़ा हुआ सा,
विकराल लाल जल में जब शेर कूदा।
भय सों कँपे क्षण ही में अपि वह जलेश,
जिस वीर का लख करहीं अत्युग्र वेश।

वह मारुती सबल सावरकर प्यारा,
जा ने कँपाया भय सों हरिलोक सारा।
सर्वज्ञ देव उस को नहीं जानते जो—
जापान का गर्व सों गुण गारहे हो!

भगवन्! रिपु-दल के बन्दी-यान में बेड़ियों तथा हथकड़ियों से सर्वथा जकड़ा हुआ वह भारत माता की स्वतंत्रता का पुजारी विशाल–काय वरुणदेव में कूद पड़ा। जिसके रौद्र-रूप को देख कर लाल-सागर का मुख भी पीला पड़ गया—वह आधुनिक युग का पवनकुमार देशभक्त सावरकर जिस ने पच्चीस वर्ष पर्यन्त कारागार की यातनाओं को सहा—क्या उसका त्याग जापान के वीरों के त्याग से कुछ कम है?



बाबू राजेन्द्रप्रसाद

यो वै भारतदीनमूर्खजनतादुःखापहारे रतः,
देशोद्धारणमूलस्व वनयने संलग्नचित्तः सदा।
राष्ट्रान्दोलनतत्परः भुविरतः देशोपकारोद्यतः,
सैषः पाटलीपुत्र वीर प्रवरो राजेन्द्रराजेश्वरः ॥

हे भगवन्! जिन्होंने समस्त ऐश्वर्यों को लात मार, जान बूझ कर फकीरी मोल ली। देश की स्वतंत्रता के लिये जिन्होंने समस्त सांसारिक सुखों को ठुकरा दिया। अपनी लाखों की प्रैक्टिस छोड़ी। सरकार की ओर से मिलने वाली कलक्टरी और जज्जी छोड़ी। सब कुछ छोड़ कर देश की आज़ादी की धुन

मोल ली। निर्धन किसानों की चिन्ता ही में जिन्होंने अपने शरीर को सुखा डाला, ऐसे वे विदेहराज राजेन्द्र—उनका देश के प्रति त्याग क्या जापान के वीरों के त्याग से कुछ कम है ?

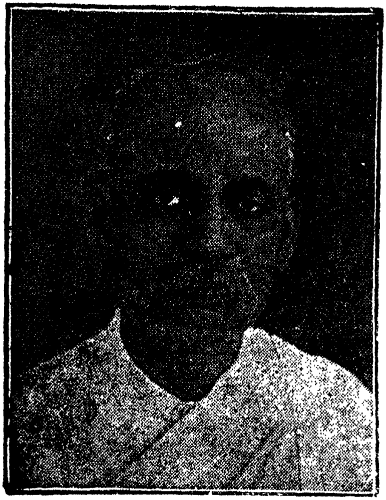


भाई परमानन्द

जिन देश के हित सहे दुःखताप नाना,
सहने अनेक दुख जा जिन अंडमाना।
रावी तटे वसन् देवस्वरूप वीर,
हिन्दुत्व रक्षण हिताय धरो शरीर ॥

भगवन् ! जिस वीर योद्धा ने मेरे लिये कारावास की कठोर यातनाएँ सहीं। राष्ट्रभक्ति के प्रसादरूप में जिस वीर ने प्राण-दण्ड

तक का सहर्ष आलिंगन करना चाहा। भारत की स्वाधीनता के लिये प्रयत्न करने के अपराध में ही जिस वीर योधा ने अंडमान के असह्य कष्ट सहे। उस मेरे वीर पुत्र विद्वद्वर देवता स्वरूप भाई परमानन्द का त्याग क्या जापान के वीरों के त्याग से कुछ कम है?



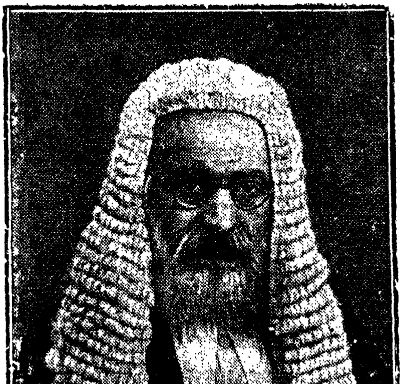
सरदार पटेल

नेतृणां सह नेतृभिश्च बृटिशा वैभारतस्यैक्यता,
हिन्दूणाम् यवनश्च स्वैकदृढ़तां कुर्वन्ति प्रेमाशंतां।
ते श्रेष्ठाचरणा सुनम्रवचना गंभीरनीत्या सदा-
प्रयतन्ति नितरां स्वदेश हिताय-बारदौली पंचानन:
गान्धी के संग जरा देखो ठाड़े भये सागर तीर हैं जो।
मेरू समान बलवानहैं जो सागर समान गम्भीर हैं जो॥

सत्य और अहिंसा का मानों लेकर आए अवतार है यह ।
गुजरात के हैं यह शहजादे, बारदौली के सरदार हैं यह ॥
बल्लभ विट्ठल दो भाईयों की कैसी यह मनहर जोरी है ।
सागर तट ये फिरती मानों हलधर गिरधर की जोरी ॥
कहते हैं इनको जेल वडे पहले यही जेल में जाते हैं ।
गान्धी जी के यह लैफटीनैंट छोटे पटेल कहलाते हैं ॥
(जवाहर दिग्विजय से)

भगवन ! सत्याग्रह की शक्ति से जिन्होने बड़ी २ आसुरिक शक्तियों को परास्त किया । भारत के पुत्रों में प्रेम भाव उत्पन्न करने की जिन्होंने पूरी पूरी कोशिश की । और जिन्हों ने इस बृटिश साम्राज्य को भी सन्मार्ग का पाठ पढ़ाने में कोई कसर छोड़ी नहीं उन बार्दौली के शेर का त्याग क्या कोईकम है ?

प्रेजीडेण्ट पटेल





वीर-नरीमान

विद्वल्ललाम ! श्रुति विश्रुत ! पूर्णकाम
विश्वोपकार रत सर्वगुणैकधाम ।
स्व प्रान्त कौंसिल सभासद सत्प्रदीप
मुम्बापुरी वसन स नरीमाण महीप ॥

भगवन ! वह पारसी-वंशावतंस, प्रकृति से ही राज-भक्त पारसी कुल में जन्म लेकर भी जिस वीर ने अपनी मातृ भूमि के प्रति अपने कर्तव्य को पहचाना। निष्काम भाव से जिस ने देश की सदैव ही सेवा की उस नर वीर नरीमान का त्याग क्या जापान-वीरों के त्याग से कुछ कम है।

अब्दुल गफ्फार खां



देशोद्धारण मुख्य साधनवर्ता कांग्रेस सम्भूषण:
बुद्धौज: सुपलायतारि निचया राष्ट्रीय संजीवन:।
आलस्यस्पादि विनष्ट सत्वपुरुषेषू त्पादका शौर्यम्
स सिकतेशनुगामी वीर सरदार सीमान्त गान्धीगफार

पश्चिम की सीमा पर डटा हुआ कैसा है यह बलवान देख
नहीं इस समान कोइ योधा ज़रा नौजवान की शान देख
दो लाख वह इन के सुर्ख पोश जब रण भूमि में डट जायें
इक इन्च वे क्या मजाल जरी है आपि कट जाएं
जिन की प्रत्येक भुजा से तो, है शूर वीरता बरस रही

जिन की दृष्टि आजादी के दर्शनों को मानों तरस रही
इक दम शत्रु के होश उड़े जब रणभूमी में जाते हैं
न सके कोई योधा यह ऐसा व्युह रचाते हैं

शोभा है इस्लाम की, अरु भारत के प्राण।
क्यों न भारत मां करे, इन पर फिर अभिमान॥

हैं शान्त-रूप में हिमराशी, यम-राशी है जो फटे कभी
हैं वज्र, वज्र से भी कठोर, कोमल हैं कोमलता से भी
देखो तो तनिक महाराज इस नवयुवक मस्ताने को
मानों महावीर जी जाय रहे हैं लङ्कापुरी जलाने को
गिरिराज से लाने सञ्जीवन तैयार हुए हैं जाने को
गत जीवन भारती लछमन में फिर से नवजीवन लाने को
हटते ही नहीं रण—भूमि से जब एक बार डट जाते हैं
सरहद पार के गांधी खान अबदुलग़फ़्फ़ार कहाते हैं

आते हैं गिरिराज से जाते डांडो तीर।
तज कर कहि विधि मूर्छा जागें भारत वीर॥

(जवाहर दिग्विजय से)

गन्धर्व लोक धन्योऽसि त्वमेव लोके
जातोऽसौ येन् गफ्फारिवरेक वीरो।
आलम, याकूब जफरान सदृशान् कलङ्कान्
शत्रुमलय विनष्टुमे कोराशाङ्को॥

भारत माता बोली, भगवन् ! मेरी पराधीनता की बेड़ियों को काटने

का प्रयत्न करने वाली एक मात्र कांग्रेस की जिसने शोभा बढ़ाई। प्रकृति से ही पर-देश भक्त मुसलमानों में जन्म लेकर भी जिस अतुल वीर ने अपने पैगम्बर की लाज राखी। सिंह के समान जो सदैव सत्याग्रह समर में आगे ही रहा। देश के लिये जिस ने कारावास की कठिन यातनाएं सहीं। अपनी तपस्या के फल स्वरूप जिस ने सीमान्त का बेताज बादशाह कहलाने का गौरव प्राप्त किया उस खान अब्दुल गुफ़्फार का त्याग जापानियों के त्याग से क्या कम है!



डा. खां साहब

देशोद्धारपर स्वराज्यसमरे स्वातंत्र्यतोत्पादके
युध्यन्ते सततं श्रमैर्बहुविधैंकामादिषड्शात्रवः
ते विद्योल्लसितागंविज्ञमनुजान् देशोन्नति स्थापकान्
सीमान्तेश गफ्फार बन्धु प्रवरो खांसाहब नरकेशरी!

अभूत पूर्वं पुरषो महाबलः
स रक्तवासः गिरिराजसारवान् ।
स शाक्तरूपो परमेण वर्चसा
रविर्यथा लोकमिमं प्रकाशमान्

भगवन् ! मेरी ही गोदी के पाले हुये, मेरे ही स्तनों का दूध पीकर बढ़े हुये, भारत माता को अपनी सौतेली मां कहते हुये, कृतघ्नता के पाप कुण्ड में निरन्तर जल रहे थे। उन सबके पापों को भगवान् नीलकण्ठ के समान जिसने अकेले अपने ऊपर लेकर इस्लाम को चार चांद लगा दिये। गन्धर्व लोककी वीरताका जिसने मान रक्खा। भारत माँ के प्रति अपने धर्म को जिसने पूरा निभाया। अपने त्याग, तपस्या के द्वारा जिस वीर ने गन्धर्व-राज की पदवी प्राप्त की, उस वीर केशरी खां साहिब का त्याग क्या जापानी वीरों के त्याग से कुछ कम है ?

सप्तर्षि

बाराणसी विमल-क्षेत्र निबास कारो
श्री कृष्ण कान्त, गोविन्द, मुकुट बिहारी

आनन्द-कन्द सम्पूर्ण श्री प्रकाशो
श्री शिव प्रसाद द्विजवर भगवानदासो

भगवन् ! भारत चन्द्र मदन मोहन के चारों ओर परिक्रमा कर रहे, विश्वनाथ पुरी वाराणसी क्षेत्र-काशीधाम में जो कृष्ण कान्त मालवीय, गोविन्द कान्त मालवीय, सम्पूर्णानन्द, बा० श्री प्रकाश, श्री शिव प्रसाद, श्री नरेन्द्र देव तथा श्री भगवान दास सप्तर्षि अपनी आभा से समस्त भारतवर्ष को प्रकाशमान कर रहे हैं। उन सब का त्याग क्या जापानी वीरों के त्याग से कुछ कम है?

नरेन्द्र देव

निधि यमानामुदधिः शमानां
हिमाचलं चारु विचारणानाम् ।
दिवेश-रश्मि शठ-कौशिकानां
नरेन्द्र देवो बल निर्बलानाम् ।

भगवन् ! अपने स्वत्व को बिल्कुल ही भुला कर जिन्हों ने परोपकार के एक व्रत को ही अपने जीवन में धारण किया। पवित्र काशीधाम में विद्यापीठ को स्थापन कर भारत पुत्रों को उच्च से उच्च शिक्षा का जिन्होंने पाठ पढ़ाया उस रुद्रदेव के उपासक वीरवर नरेन्द्र देव का त्याग क्या जापान के वीरों के त्याग से कुछ कम है?

चक्रवर्ती-राजगोपाल

मद्राधिपो खररिपु गोपाल राज,
सुर-सैन का जिन किया ननु पूर्ण काज,
सत्य-रूप, साम्ब सङ्ग जो सद्सो सुहाता
सौ बेर मानों इंद्रासन को लजाता

भगवन्! वह मेरा वीर पुत्र चक्रबर्ती राजगोपाल आचार्य, जिसने मद्र-देश की रक्षा को सुर सैना का प्रभुत्व जमाया। अपने बाहु बल से चक्रवर्ती नाम पाया और आज जो साक्षात इन्द्र के समान सत्य मूर्ति, साम्व मूर्ति प्रभृति मंत्रियों के साथ सुहाता है। उस वीर का त्याग क्या जापान के वीरों के त्याग से से कुछ कम है?



गोविन्द पंत

ये मान्या युवि शाश्वतं नृपजनैः विज्ञैश्चवीरैस्तथा
येषामप्युपदेश मात्र मननादुल्लासयन्ति त्वरित ।
मूर्खाणामपि मानसं प्रमुदितं सूर्ये यथा पङ्कजः
स्वबीयोऽत्र नृपतिर्बभूव नितरां गोविन्द पन्त प्रियः

जिसने अपने बाहु बल से पाया हिन्द प्रान्त का राज
अपने ही हाथों से पहरा सिर पै निज कांटों का ताज
विप्र–जामदग्नेय की भूमि में जिस ने जन्म लिया
भुज बल से जिन गो ब्राह्मण का दूर है सारा त्रास किया

उस मेरे गोविन्द पन्त का कहो भला ! कुछ कम है त्याग
जो गाते हो मेरे सम्मुख तुम विदेश वीरों के राग

भगवन् जिस प्रकार सूर्य के उदय हो जाने से कमल का मुख खिल जाता है, ऐसे ही अपने त्याग, तपस्या तथा बलिदान से प्राप्त किये हुये जिस महारथी की मुख-कान्ति ने सहस्रों मुरझाये हुये कमलों को, लाखों ही कुमलाई हुई आशा-लतिकाओं को एक दम खिला दिया। जिन्होंने वर्षों पर्यन्त अपने प्यारे स्वदेश के लिये बड़े से बड़ी घोर यातनायें सहीं। अपनी तपस्या से संयुक्त प्रान्त के इन्द्रासन को भी जिन्होंने देवताओं के लिये विजयी किया उस नर केशरी गोविन्द वल्लभ पन्त का त्याग, क्या जापान के वीरों के त्याग से कुछ कम है ?

बाबा गुरुदत्तसिंह

पाताल लोक जिसने भय सों कंपाया
यूरोप समस्त निज भुज बल सों हिलाया
भारत हिताय जिन दुख सहे अनेक
सर्वस्व त्याग गुरु की जिन राखी टेक

वह काम-गात्र मरु-थान सुवीर योधा
सच्चा उपासक है जो स्वाधीनता का
गुरुदत्त सिंह पञ्जाब-नृसिंह है जो
पौरुष तदीय भगवन् क्या जानते हो

भगवन् स्वाधीनता रूपी सीता महारानी की खोज में जिस वीर ने पाताल (अमेरिका) लोक तथा योरुप का कोना-कोना छान मारा। "कामा-गाटा मारु" के पंख लगा कर जो देश-देशान्तरों तथा द्वीप द्वीपान्तरों में स्वाधीनता देवी की खोज में भटकता रहा। रिपु-दल की ओर से अपने इन पंखो पर हो रहे जिस योधा ने बड़े बड़े प्रहारों को सहर्ष सहन किया और भी नाना प्रकार के कष्टों को सहता हुआ जो अपने कर्त्तव्य पर निरन्तर डटा रहा—और इस बुढ़ापे में भी जो नवयुवकों के समान ही अपने कर्तव्य का पालन कर रहा है। उस बाबा गुरुदत्तसिंह का त्याग देश के लिये क्या जापानियों के त्याग से कुछ कम है?

मास्टर मोतासिंह

स्वसीद् यो दारुण दारुणानी
वितस्तिमात्राण्यपिच व्रणानि।
पञ्जाब-पञ्चानन मोतासिंहः—
तस्यापि वीर्यम् जानासि देव॥

भगवन् ! जिन्हों ने देश-प्रेम के अपराध में अनेकानेक कष्टों को सहन किया। अन्डमान के कठोर कारावास को देश-प्रेम के आवेग में जिन्हों ने सहर्ष आलिंगन किया। देवी स्वाधीनता की खोज में जन्हों ने संसार का चप्पा चप्पा छान मारा। दधीचि के समान स्वाधीनता संग्राम में अपने कान्तिमय शरीर को जिन्हों ने जला-सा डाला और इस वार्धक्य में भी जिन के हृदय मन्दिर में वही नवयुवकों का क्रान्तिगान नाद कर रहा है। वह पञ्जाब के शेर मास्टर मोतासिंह-उन का त्याग क्या जापानी वीरों के त्याग से कुछ कम है ?



पुरुषोत्तमदास टंडन

हिन्द्यैः ये प्रयतेति रात्रिदिवमा राष्ट्रीयभाषाकृते
नी मुद्राऽधिकारीवर्गसमुखे सन्मानप्राप्त्यै क्वचित्

शत्रूणामपिवल्लभो जनपदे साहित्यविज्ञाग्रणी वीरस्त्वेष असेम्बली-प्रधानः पुरुषोत्तमोटंडनः

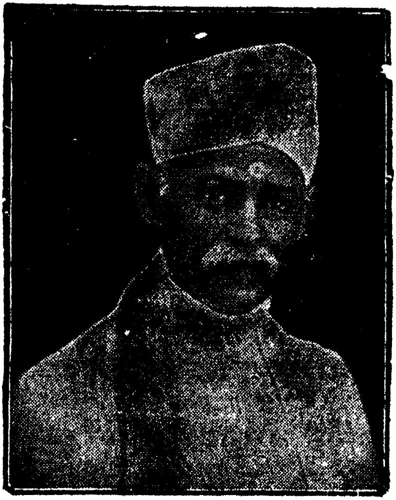
भगवन् ! "भारत माता की आज़ादी का अर्थ है भारतीय भाषा, भारतीय वेष, भारतीय संस्कृति की आज़ादी" यह रहस्य जिस वीर ने भली प्रकार से समझा "भाषा का सम्बन्ध राष्ट्र की आत्मा से है। भाषा के मरने से राष्ट्र की आत्मा मर जाती है" यह तत्व भी जिस एक वीर ने जाना और राष्ट्र भाषा हिन्दी का उद्धार करने में जिस ने अपनी सारी शक्ति लगादी। अपनी शक्ति के सहारे ही जिस ने देवराज की पदवी प्राप्त कर हिन्द-प्रान्त की देवों की सभा का प्रधानत्व प्राप्त किया उन सेवा, त्याग, वत्सलता, दृढ़ता, तपस्या, सत्य, अहिंसा, दया की साक्षात् मूर्ति बाबू पुरुषोत्तम दास का त्याग क्या जापान के वीरों के त्याग से कुछ कम है।

(शार्दूलविक्रीडितम्)

गोविन्द दास-जुगुलकिशोर विडला—
श्री सेठ घनश्यामदास—
जमनालाल बजाज, राम गोपाल
आचार्य श्री श्री प्रकास।
बाबू शिवपरसाद गुप्त,
महतो, देसाई, राय, पटेल—
मोतीलाल, राजेन्द्र से जिन्हों ने
पैसे को समझा था खेल।

यान् वीक्ष्य दान-निरतान् सततान् नरेशान्
लज्जाविनम्रवदना सुरपादपः सः
शङ्के सुमेरु गिरि गह्वरमा विवेश
नो चेत् कथं न भुवि लोचनलक्ष्यमेति

भगवन् ! यदि आप जापान-वीरों की महिमा का गायन इस लिये करते हैं कि स्वतंत्रता-युद्ध में जापान के धनकुबेरों ने पैसे को पानी की तरह बहा दिया-तो भगवन् क्या आप भूल गये कि मेरी आजादी की लड़ाई में श्री विट्ठल भाई पटेल, श्री मोतीलाल नहरू व लाला लाजपतराय ने करोड़ों रुपया रखते हुए भी अपने लिये एक पाई तक न रक्खी सब कुछ देश-माता के चरणों की भेंट चढ़ा स्वयं फकीर बन गये। और आज भी-सेठ घनश्यामदास बिडला, सेठ जुगलकिशोर बिडला, रामगोपाल महतो, श्री भूला भाई देसाई, श्री सेठ गोविन्ददास, श्री बा० श्रीप्रकाश, श्री बा० शिवप्रसाद—श्री सेठ जमनालाल बजाज श्री प्रफुल्लचन्द्रराय इत्यादि धनकुबेर मेरे लिये किस प्रकार धन दे रहे हैं भगवन क्या आप सर्वज्ञ होते हुए भी इसे नहीं जानते। सम्भवतः आप के हृदय में यह विचार हो कि यह मिलमालिक, पूंजीपति गरीबों की कमाई से धन पैदा करते हैं। परन्तु भगवन वह उस धन को अपने लिये तो नहीं रखते। भिन्न २ जल राशियों से पानी खैंच कर यदि बादल उस सारे जल को प्यासी जमीन पर बरसा करे तो इस में मेघ की तो बड़ाई ही होनी चाहिये।



श्रीमालवीय जी

ये देशोन्नति वृक्ष वर्धनजला अज्ञान वृक्षानला ।
त्यक्तार्थः जगदिन्दु दीपन परा विख्यात शीलव्रता ॥
काश्यां यैर्विपुल प्रयास करणात् विद्यालयः स्थापितः,
सेषाः भारत-भूषणः द्विजवरो श्री मालवि पंडितो ॥

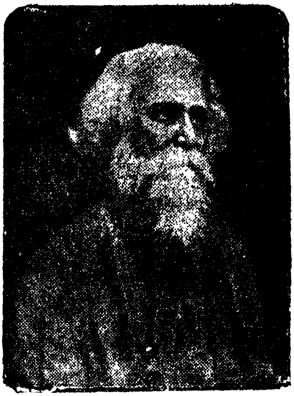
भगवन् ! जिस सच्चे ब्राह्मण ने अपने तपोबल से आसुरिक शक्तियों को प्रकम्पित कर दिया । जिस मेरे पुत्र ने अपनी विद्या को, अपने बल को —अपनी समस्त शक्तियों को मेरे उद्धार करने में लगा दिया । इस बुढ़ापे में भी मेरे चरण पाशों का छेदन करने के लिये जिसने लण्डन तक जाने का महान् कष्ट सहा । भारत

पुत्रों के उद्धार के लिये काशी जी में जिस बीर ने विपुल परिश्रम से विश्व-विद्यालय की स्थापना की उस कर्मयोगी, महान आत्मा, भारतभूषण, मालवीय जी का त्याग जापानी वीरों के त्याग से क्या कुछ कम है ?

वाचामगोचरमनेक गुण स्वरूपं,
तेजोमयं सकल निश्कलमात्मरूपं।
रागादिदोष रहितं विज्ञानानुरागः,
वैराग्यशन्ति निलयम् द्विजवंश भूषणः।

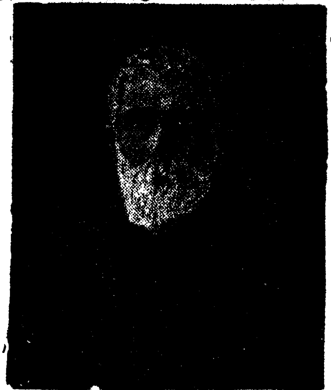
विप्रवंश अवतंस, तुम्हारो जय हो, जय हो।
अधमोद्धारक देव, तुम्हारो जय हो जय हो॥

सूर्य चन्द्र नभ बीच, उदय हों द्विजवर जबलौं।
बिमल कीर्ति हो विद्यमान्, भूतल पर तबलौं॥
गंगा यमुना में अमल, जब लौं जलधारा बहै।
श्रीमालवी, द्विज-राज तव विश्वबीच गौरव रहै॥



रवीन्द्रनाथ ठाकुर

कीर्त्या यैः धवलीकृतं त्रिभुवनं,
श्यामी कृतं चाम्बरम् ।
धूमैरध्वर-सम्भवैः प्रति दिनं,
दानैर्द्विजास्तोषिताः ।
शिक्षा सन्स्कृतया गिरा प्रति दिनं,
यैस्तोषिताः पंडिताः ।
ते वास्वानी–रवीन्द्रनाथ ठाकुर,
प्रफुल्ल चन्द्रादयः ॥



आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय

कलिकाल में जिन रची सतयुग की माया ।
राजर्षियों का जिन रूप ही बन दिखाया ॥
प्रफुल्ल-चन्द्र नृप शाही-फकीर हैं जो ।
"सर्वस्व त्याग" उस का नहीं जानते हो ॥
विज्ञान—शस्त्र निज हस्त लिया जिन्होंने ।
श्रीरंक-देव संग जंग किया जिन्होंने ॥
बेकार—नाथ ज्वर के रण में पछारा ।
भारत—सपूत हिय में उत्साह उभारा ॥

भगवन यदि आप जापान वासियों की महिमा इस लिये गा रहे हो कि जापान के वृद्ध विद्वानों ने, कवियों ने, या सैनिकों ने,

वैज्ञानिकोंने—अपनी समस्त शक्ति अपने राष्ट्र के उत्थान में लगा दी, परन्तु भगवन्! क्या मेरे वीर पुत्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर अरविन्दु घोष तथा वास्वानी आदि सन्त अपनी लेखनी के द्वारा राष्ट्रीय-जीवन में नवीन-ज्योति फूंकने का प्रयत्न करने में कभी पीछे रहे हैं ?

और वह मेरा लाल आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय—भगवन्! क्या उसके किये कराय पर भी आपने पानी फेर दिया। जिसने साम्राज्यवादियों की ओर से भेजी हुई कृत्रिम "सर" की भेंट को ठुकरा दिया। अपना तन, मन, धन, सब देश के ही अर्पण कर दिया। राजा हो कर भी जिसने बड़ी ही प्रसन्नता से फकीरी का आलिंगन किया, क्या उस मेरे पुत्र "राय" का त्याग जापानी वीरों के त्याग से कुछ कम है ?

महात्मा गांधी

महाशोभाशाली हरिजन प्रियो गान्धि भगवान्,
दधत्याभाम् शुभ्राम् वियति विमले भारततले।
प्रियान् प्राणान् वीरो तृणमिव परित्यक्तु मनसा,
महासंग्रामे ऽस्मिन् शशि-द्युति विशुद्धो विजयते ॥

दुःखम् विनाशाय हरिजनानाम् ।
येन् मृत्युना सह कृतम घोर युद्धम ॥
विंशत्यधिगैक दिवसैर्प्रयन्तम् ।
कालो हतो येन् पर्णकुटीरे ॥

शुभ स्वराज का दिव्य-मंत्र जिसने बतलाया,
मानव का अधिकार देश को पुनः सिखाया ।
पतितों को अपनाय प्रेम से गले लगाया,
बिछड़ों को भी खोज २ करके अपनाया ।
जागृत करदी देश में उज्ज्वल भारत आज है,
गौरव शाली बन गया वह गान्धी ऋषिराज है ।

भगवन् ! मेरे पुत्रों ने मेरे लिये इतना बलिदान किया, परन्तु फिर भी आप जापानी वीरों की गौरव गाथा का वर्णन कर रहे हैं । क्या मेरे पुत्रोंका त्याग जापानी वीरोंके त्यागसे कुछ कम है ?

श्री भगवान् बोले, भारत माता ! जापानी वीरोंके बलिदान से तेरे भगतों का, दासों का, मोतियों, जवाहरों, लाजपतियों का बलिदान कदापि कम नहीं है, परन्तु ३५ करोड़ की जनसंख्या में इन कतिपय वीरों का त्याग जापान-माता के शत प्रति शत वीरों के सामने बहुत थोड़ा है । जापान के वीरों का गुण गा कर मैं ने तेरे वीर पुत्रों की वीरता की अवहेलना नहीं की। मेरा कहने का तात्पर्य केवल इतना ही था कि जिस प्रकार जापान का बच्चा बच्चाअपने सर्वस्व को जापान-माता पर न्योछावर करने को तैय्यार है वैसा करने के लिये प्रत्येक भारत वासी तैय्यार नहीं ।

यहां से आगे २७० पृष्ठ तक चन्द्रगुप्त प्रस चावड़ी बाजार देहली में छपा ।

कलियुग-पुराण

खण्ड दूसरा

[२]

वीर-पूर्णिमा

सिन्धुपति दाहर
पांचाल-पति जयपाल
पृथ्वीराज चौहान

महाराणा हमीर
महारानी पद्मनी
राणा संग्रामसिंह
चौधरी हेमराज
जयमल फत्ता

महाराणा प्रताप
छत्रपति शिवाजी
गुरु तेग़बहादुर
गुरु गोविन्दसिंह

बन्दा बैरागी
ऋषि दयानन्द
महात्मा गान्धी

तुमने ही आ समय समय पर, भारत का उद्धार किया।
तुमने ही आ भँवर-फंसी, भारत नैया को पार किया॥

नव-भारत उपजाओ !

प्रभु ! निज विमल ज्योति दिखराओ !
बुद्धि-पूर्वक करें कर्म हम, हिय की मैल मिटाओ।
छल अरु कपट कूटनीति कंह, वेगहीं काट हटाओ।
भ्रातृभाव बन्धुत्व बढ़ाकर, प्रेम सुधा बरसाओ।
आह मिटे ग्रामीण जनों की; यह सुधि सबहीं दिलाओ।
शोणित सिञ्चित भारत भू पर, अमृत प्रवाह बहाओ।
आत्मठगी कर लीडर बनने, की अभिलाष दुराओ।
अहं वयं के दम्भ तिमिर हित विनय रविहीं प्रकटाओ;
फिर से भारत में करुणानिधे ! नव-भारत उपजाओ।

भारतोवाच

मन्ये जापानवीराणाम् देव त्यागं यशस्करम् ।
बलिदानं राजपुत्राणाम् किं स्विन्न्यूनतरम् प्रभो ॥

भारतमाता बोली, भगवन् ! आपने जो कहा सो ठीक है। जापान के वीरों का त्याग तो वास्तव में प्रशंसनीय है ही। परन्तु "उनके त्याग की उपमा समस्त भारतीय इतिहास में नहीं" ऐसा सर्टिफिकेट दे कर भगवान स्वयं अपनी सर्वज्ञता को तो संशय में नहीं डाल रहे ! चार शताब्दियों तक निरन्तर मेरे राजपूतों के बलिदान की गाथा क्या आप भूल गये ?

[मन्दाक्रान्ता]

मरते मरते मर गये नहीं धर्म का साथ छोड़ा ।
झेले दुःख सर पर अति धर्म से मुहं न मोड़ा ॥
वह मेरे लाला धर्म पथ पर जा ने सर्वस्व वारा ।
जिन वीरों के विमल यश को गा रहा विश्व सारा ॥

गेरू के से वसन पहिरे हाथ में ले कृपाणा ।
रण भूमि में हर हर महादेव का गाके गाना ॥
हंसते हंसते सर धड़ पे ले जो 'रपुगण पे टूटे ।
ज्यों चिड़ियन पे प्रलय नभ से बाज के झुंड छूटे ॥

सतियों में थी परम सती जो पद्मनी वीर बाला ।
नर पशुओं से यवन दल का मुहं किया जिस ने काला ॥
जयमल के उस प्रबल बल को देव क्या जानते हो ।
फत्ता की वह अनुपम बली ? क्या उसे मानते हो ॥

भगवन ! आप सब कुछ जानते हुए भी वे जान के समान मेरे ही सामने जापान वीरों की गाथा गा रहे हो—परन्तु बाल हकीकत सा, राणाहमीर सा, जयमल फत्ता सा, परमाल रासो सा, बापारावल सा, राणाप्रताप सा त्याग, क्या जापान के वीरों का त्याग इन मेरे पुत्रों के त्याग से भी बहुत बड़ा है ?

श्री भगवानोवाच

बलिदानं राजपुत्राणाम् स्वस्यस्ति रुपमा स्वयम ।
किन्तु वच्याम्यहम देवी यदि त्वं नावमन्यसे ॥
सिहंपुत्रः कपोतानाम् संख्ये शरण गता प्रिये ।

हे हिन्दमाता ! राजपूत वीरों का बलिदान तो अपनी उपमा स्वयं आप ही है । एक जापान तो क्या समस्त ब्रह्माण्ड के अनेक खण्ड सब मिल कर भी उन वीरवांकुरों के त्याग की समता नहीं कर सकते । प्रातरुषा के समान एक एक राजपुत्र की जीवनी मानव देह में नवजीवन का संचार करती है ।

परन्तु मैं पूछता हूँ भारतमाता ?

सिन्धुपति-दाहर

त्वामालोक्य विपद्ग्रस्ताम् तिष्ठतीम् सिन्धुतीरे ।
यवनाम्रो महामद इति विश्वविख्यात योधा ।
योधैर्सार्धम् नदपतितटे स यदैवस्थितोऽसीत् ।
तस्मिन्काले तव सुतवलैः राजपुत्रै कृतः किम् ॥

(शार्दूल विक्रीडितम्)

श्री रामेण विना विलोक्य सीताम् जनकात्मजाम् मैथिलीम्
लंकेशो प्रविवेश पञ्चवट्याम् हर्तुम सतीम् छद्मना ॥
तस्मादेव ∴ महामदः कमम त्वां हर्तुम यदैवागतः ।
सिन्धुतीरे तु विश्व देव यजनी किं राजपुत्रैकृतम् ॥

(शिखरणी)

तुझे हरने देवी खरपति जो सैना सगं चला ।
कहां शक्ति उन की क्षण भर टिकें सनमुख भला ॥
वे सैनानी सिन्धु जब लग तेरे दर पर रहे ।
तुझे चिन्ता क्या थी खर किमपि तव बन्धन गहे ॥

∴ मुहम्मद बिन कासम ।

परन्तु सिन्धु वह जिसने तत्र लज्जा नित्य गही।
पराये हाथों में निरबल भया उस दिन वही।
वहीसिन्धु-राज अतुल बलधारी खररिपु।
बना कायर कासम सन्मुखकथम् जानती है तु॥

श्री भगवान बोले, हे हिन्दमाता-गोदावरी के तीर पर पर्ण-कुटि के अन्दर राघव के बिना बैठी हुई सीता को असहाय जान जिस प्रकार लङ्कापति रावण उसे बलपूर्वक हर कर ले गया था, ऐसे ही हर्ष तथा भोज के बिना बैठी हुई सिन्धुनदी के तीर पे अपने प्रिय पुत्रों के वियोग में अश्रुपात करती हुई तुझको जब वह असुर कासम छलने के लिये आया तो बता हिन्दमाता उस समय इन तेरे राजपुत्रों ने क्या किया ?

हे हिन्दमाता मैंने तेरे घर को बड़ा ही सोच समझ कर बड़ी ही कुशलता पूर्वक-बनाया था। तीन ओर तेरे वरुणदेव को खड़ा किया—चौथी ओर हिमालय रूपी सन्त्री खड़ा कर दिया। केवल एक छोटी सी त्रुटि रह गई थी। तेरा घर बनाते हुए एका-एक मेरे दिल में यह विचार उठा—भारत माता के पैंतीस करोड़ पुत्रों को तनिक सचेत रखने के लिये कुछ त्रुटि चाहिये, जिसे वह स्वयं पूरा करें—तेरा सारा घर बना कर मैंने उसमें केवल एक दरवाज़ा और पांच खिड़कियां ज़रा हवा लगने के लिये रहने दी। मैं देखना चाहता था कि क्या तेरे पैंतीस करोड़ पुत्र मिल कर भी इस एक दरवाज़े की रक्षा कर सकते हैं कि नहीं। जो परिणाम निकलना था। वह मैं जानता ही था मुझे यह पता था कि तेरे पुत्र इसकी रक्षा नहीं कर सकेंगे इस दरवाज़े को पार करते ही मैंने एक सागर सा बहा दिया—इसी लिये कि यदि कोई

अनजान में इस दरवाजे को पार कर भी जाय तो फिर सिन्धु की प्रवल तरंगों के साथ उसे युद्ध करना पड़े।

हिन्दमाता बोली, भगवन् ! यह ठीक है कि आपने मेरा घर बनाने में अपनी सारी कुशलता को खर्च कर दिया परन्तु इस सिन्ध ने तो कभी भी किसी को भी मेरे घर में दाखिल होने से नहीं रोका। सिकन्दर, दारा, कासम इत्यादि सब कई बार इसे लांघ कर ही आये !

भगवान् बोले, हिन्दमाता—तेरा उपालम्भ तो ठीक है परन्तु जब चौकीदार के हाथों से स्वयं घर का मालिक ही हथियार छीन कर उसे एक कमरे में बन्द कर दे और तिस पीछे कोई चोर उस घरमें आ घुसे तो इसमें चौकीदार का क्या दोष।

विशाल सिन्धु कासिम को हड़प कर जाता यदि साथ वेला का शासक दाहर का अपना ही भाई सिन्ध को बेड़ियों में कस कर उसके वक्ष: स्थल पे यवनों से अपने ही हाथों से मूंग न दलवाता।

पाञ्चाल पति-जयपाल

दृष्ट्वा देवीम् जननी-जगताम् आसुरैर्नीयमानः ।
पञ्चालेशोः-विजयपति स वीर जयपाल सिंहो ॥
सुबकतगीनम् प्रबल खरजम् सज्जीभूतः प्रनष्टुम् ।
तस्मिन्काले तवसुत वरै राजपुत्रैः कृतः किम् ॥

श्री भगवान बोले, हे भारतमाता ! कासम के चले जाने पर जब असुरपति सुबकतगीन तुझे लूटने के लिये आया—अपने कतिपय साथियों के साथ राघव-नन्दन की नगरी लवपुर में जब वह युद्ध की इच्छा से खड़ा था तो बता उस समय जयपाल इत्यादि राजपूतों ने क्या किया ?

उस समय यवन-दल का सामना करने के हेतु देश में एक अद्भुत संगठन था। तू ने भी वह दिन देखे और मैंने भी देखे थे। माताओं ने किस प्रकार देश की रक्षा के लिये अपने पुत्रों के ललाटों पर तिलक लगा कर उन्हें समर भूमि में भेजा था। किस प्रकार बहनों ने अपने भाईयों के हाथों पे राखी बान्ध उन से मातृ-शक्ति की रक्षा का वचन लिया था। किस प्रकार सहस्रों पद्मिनियों ने अपने स्वामियों के गले में जयमाला डाल कर उन्हें समर-विजय का प्रोत्साहन दिया था। किस प्रकार ललनाओं ने अपनी

हाथ की चूड़ियों को भारत-पुत्रों की भेंट चढ़ा कर—किस प्रकार अपना सर्वस्व, स्वाधीनता की देवी के अर्पण कर दिया था। क्या कसर बाकी रक्खी थी तेरे लिये सर्वस्व न्योछावर करने में तेरी सन्तान ने ! और इतना सब कुछ होजाने पर भी जब वह दास पुत्र सुबकतगीन असुरदल के साथ लवपुर में आया तो इन तेरे राजपूतों ने क्या किया ?

हिन्दमाता बोली, भगवन ! उस नर-पिशाच ने तो अपनी सैना के आगे गौओं को खड़ा कर दिया ! फिर उन पर वे अपनी तलवार कैसे उठाते !

श्री भगवान बोले, हे भारतमाता! तू ठीक कहती है। गौ-माता तो सारे संसार के लिये पूज्य है। "उत्ताधार पृथिवीम्" यह समस्त भूमंडल तो खड़ा भी है तो बैल के ही सहारे। गौ-माता की पूजा करना तो मनुष्य मात्र का परम धर्म है--परन्तु विशेष २ परिस्थितियों में जब राक्षस-लोग इस श्रद्धा-भक्ति का दुरुपयोग करते हुए इसी की आड में देश तथा जाति का संहार कर रहे हों तो उस समय धर्मात्मा लोगों का धर्म क्या होता है यह बड़ा ही गहन बिषय है।

किं धर्म किमधर्मेति कवयोप्यत्र मोहिताः।

धर्म-अधर्म की दुविधा ने तो बड़े बड़े योगीयतियों को भी मोहित कर दिया। मर्यादा-पुरुषोत्तम राम ने जब ताड़का को अपने सामने देखा था तो उनके अन्दर भी यही कर्म-अकर्म का संग्राम शुरू हो गया था। "स्त्री पे हाथ उठाना पाप है।" ऐसा सोच कर उन्होंने अस्त्र शस्त्र छोड़ दिये। उसी प्रकार जिस प्रकार गौओं को अपने सामने खड़ा देख कर राजपूतों ने हथियार छोड़ दिये और रण से भाग गये। उस समय चाहिये था कोई विश्वामित्र, जो उन राजपूतों को कहता—

एनां राघव दुर्वृत्ताम् यक्षीम् परम दारुणीम ।
गो ब्राह्मण हितार्थाय जहि दुष्ट पराक्रमाम् ॥

हे राघव गौ-ब्राह्मण की रक्षा के लिये इस दुष्ट राक्षसी को मार दे।

नहिते स्त्रीवध कृते घृणा कार्या नरोत्तम् ।
अधर्माम् जहि काकुत्स्थ धर्मो ह्यस्यां न विद्यते ॥

हे राम, धर्म किया जाता है धर्मात्माओं के साथ ! पापियों के साथ धर्म नहीं निभता। शठ तो शठता से ही काबू में किया जाता है। तू इस पापिनी को मार दे, मैं तुमें ठीक कहता हूं स्त्री वध करने का पाप तुम्हें नहीं लगेगा।

स्वबाहु बलमाश्रित्य जहीमाम् दुष्ट चारिणीम् ।
मन्नियोगादिमं देशम् कुरू निष्कराटकम पुनः ॥

अपने बाहुबल से इस दुष्टा का वध कर और मेरी आज्ञा से इस पापिनी को जा कर रण में मार।

चातुर्वरण्यं हितार्थाय कर्तव्यं राज सुनुनां ।
नृशंस्यं वानृशस्यं वा प्रजा रक्षण कारणात् ॥

आर्य जाति की रक्षा के लिये—ऋषि सन्तान को भावी विपदाओं से बचाने के लिये राजपुत्रों का परम धर्म है कि उन्हें यदि कोई पाप भी करना पड़ता है तो बड़े पुण्य के लिये छोटा सा पाप करने से न डरें।

पातकं वा सदोषं वा कर्त्तव्यं रक्षिता सदा ।
राज्य भारी नियुक्तानामेष धर्मः सनातनः ॥

राजपुत्रों का यह परमधर्म है कि वे अपनी प्रजा की रक्षा के लिये जैसा भी कर्म उन्हें करना पड़े वे करें यही सब से वदिया सनातन धर्म है।

हे भारत माता, तू ने कुछ ही देर पहले मुझ से पूछा था कि मेरे इतने वीरों का बलिदान क्यों विफल गया और जापान के वीरों ने क्यों इतनी शीघ्र उन्नति की ? इस का रहस्य मैं एक घटना में तुझे बताता हूं, सुन !

एक अमरीकन जापान की एक पाठशाला में गया। एक लड़केसे उस ने पूछा। "तुम्हारा देवता कौन है"?

जापानी बोला "कौनफिशस !"

"तुम्हारा धर्म गुरु कौन है ?"

"महात्मा बुद्ध ?"

यदि कोई आदमी तुम्हारे महात्मा बुद्ध को और कौनफिशस को गाली निकाले तो !

"हम गाली निकालने वाले को खूब पीटें ,,

खूब ! परन्तु यदि तुम्हारे देश पर कोई सेना आक्रमण करे जिस का सरदार हो बुद्ध और राजा हो कौफिशस तो ! वह जापान का विद्यार्थि झट पट बोल उठा हम उस सरदार का और राजा का सर उतार दें।

"क्यों"?

जब तक हमारी जापान माता आजाद है तब तक हमारे बुद्ध और कौनफिशस भी आज़ाद हैं। जब हमारा देश गुलाम बन गया तो गुलामों का न कोई देवता है, न दीन है और नहीं गुलामों का कोई धर्म है। गुलामों का साथ तो परमात्मा भी नहीं देता।

हे हिन्द माता सुना जापान वीर के शब्द !

सोमनाथ

गज़नी का वह अति मद भरा वीर महमूद नामी।
धन लोभी वह यवनकुलजः विश्वसाम्राज्य कामी ॥
तो को हरने दल बल लिये सप्तदश वेर आया।
तु जाने है तव घर में जो ताने ऊधम मचाया ॥

जा के भय सों सुर गुरु भगे देव कैलाश बासी।
पाञ्चाली की नरपशु ने ज्यूं सप्तधा लाज नासी ॥
ज्वाला जी के शिखर पर जा जाने हिमपात कीना।
गो ब्रह्मण को सुररिपु ने जो दुःख था घोर दीना ॥

ब्रज मडंल में असुर नृप ने रक्तधारा बहाई।
गो भूमि पे इकदम मची याअली की दुहाई ॥
देवस्थान सब भंग भये एक भी न बचा था।
गङ्गाजी के विमल तट पे क्रान्तऽभिनय मचा था ॥

सिन्धु तीरे असुर पति ने जो किया पत्तहीन।
हरने तो को गज़नपति वह फिर चला १ अल्पगीन ॥
सुबकतगीन लवपुर में आ तो को बन्दी बनाया।
२ महमूदा ने तुझको छलसे जाय गजनी पहुंचाया ॥

क्रान्त्वा लोकान् पटदशमहान, श्रीविशालान्विशालान्।
गज़न्याधीशो पशुपति पुरे, स यदैवागतोसीत् ॥
हन्तुमदेवम् निशापति प्रभुम् कृत्तिवासम् महेशम्।
तस्मिन्काले तव सुत–वरैः राजपुत्रै कृतः किम् ॥

---

१ अल्पतगीन, २ महमूद गजनवी,

(वसन्त तलिका)

जा ने कंपाया भय सों हरिलोक सारा ।
दस—सात वेर जिन भारत को उजारा ॥
आकर लड़ा जो पाषाण प्रभु के साथ ।
वे सोम नाथ किस भाँति भये अनाथ ॥

वनायुजः वीर सहायुधम् वरः,
महामदः सोम पुरे यदागतः ।
कलामृतः देव जगत्प्रपालकः,
अनाथ वद्देवी स्वयं वभूव कथम् ॥

श्री भगवान बोले, हे हिन्दमाता--: मैं तुम्हें पूछता हूँ कि जब वह गज़नी का महमूद अपना दल बल लिये बड़े बड़े महान क्षेत्रों को उखाड़ता हुआ—देवालयों की ईंट से ईंट बजाता हुआ—अन्तिम बार सोमनाथ का गला घोटने के लिये सागर के तट पर आया तो उस समय इन तेरे राजपूतों ने क्या किया ?

हे हिन्द माता एक बार नहीं दो बार नहीं बल्कि पूरे सोलह बार उस राक्षस ने तेरे घर को लूटा—मथुरा के मन्दिरों की असीम दौलत से उसने गज़नी के बाज़ार भरदिये। कांगड़ा ज्वालामुखी, वृन्दाबनके मन्दिरों में से अतुलधन को खच्चरों पर लादकर लेगया। बड़े २ पण्डित, धर्म-ध्वजा धारी, धर्म-गुरू गज़नी के बाज़ार में २, २ रूपये को बिके। बड़े बड़े षट शास्त्री पठानों के घरों में पानी ढोने लगे। बड़े बड़े शास्त्रार्थ महारथी गज़नी में घसयारे बने ! क्या कुछ नहीं हुआ। हिन्द माता मैं पूछता हूँ उस

समय जब यह सब कुछ होरहा था तो यह तेरे राजपूत उस समय क्या कर रहे थे ? जिन राजपूतों का तू इतना गौरव गारही है, बता इन राजपूतों ने उस समय सोमनाथ के मन्दिर में क्या किया ?

भगवान बोले, हे हिन्द माता ! यह बातें उस समय की हैं, जब न तार थे,न टैलीफून था, न रेलवे थी न हवाई जहाज़ थे न विषैली गैसें थीं न रेडियो थे, न पक्की सड़कें थी, न दरयाओं के पुल थे, न मोटरें थीं, न जंगी जहाज़ थे, ऐसे समय में एक साधारण सा व्यक्ति चार हज़ार मील से बड़ी भारी सैना के साथ चले। सिन्धु जैसे दरया को बिना पुल के पार करे। जेठ, आषाढ़ को कड़कती धूप में राजपूताना जैसी मरू भूमि में बीस हज़ार की सैना लेकर सही सलामत, हृष्टपुष्ट खेलता कूदता सोमनाथ तक पहुंच जाये रास्ते में कोई उसे इतना तक पूछने वाला न मिले, अजी ! जनाब कहां तशरीफ लिये जारहे हो। और वह आदमी आये सोमनाथ पर और लूट कर लेजाये और यह तीस लाख राजपूत मिट्टी के माधो बने टुक टुक देखते रहें। क्या यही है राजपूतोंका बलिदान !!

हिन्द माता बोली भगवन् ! उस में राजपूतों का बिल्कुल दोष नही था। दोष था उन पंडित पुजारियों का जो उन्हें इस आस पर बिठाये रहे कि वीरवार शुभ मूला नक्षत्र में श्री सोमनाथ जी स्वयं प्रकट होकर गो-घाती यवनों का संहार कर देंगे।

भगवान बोले, हिन्द माता ! दोष किस का था राजपूतों का अथवा पुजारियों का ......एक सहस्र वर्ष की बीत गई उस घटना पर यह निरर्थक आलोचना करने का समय नहीं।
दोष था राजपूतों का क्यूंकि उन्हों ने अपने धर्म का पालन नही किया।

यह पाषाण प्रभु के कृत्रिम शरीर रक्षक जो कि सदैव ही तेरे सर्वनाश का कारण हुए। यह पैसा पन्थी धर्म ध्वजा-धारी १००८

ट्रेडमार्क-धारी धर्माचार्य जिनकी नस २ में मुफ्त का माल खाना भर चुका यह कभी नहीं चाहते कि देशके अन्दर जाग्रती पैदा हो क्योंकि इन मूर्खों को इस बात का हमेशा भय लगा रहता है कि जाग्रत-जनता सम्भवत: उनके फांसेमें न फंस सकें, इसी लिये प्रत्येक काल में, प्रत्येक अवस्था में, प्रत्येक देश में, यह धर्मजीवी लोग जनता को अन्धकार में रख कर ही उन भेड़ों को जीवन पर्यन्त मूंडते रहना चाहते हैं। इसी लिये सायं प्रात: यह बगला-भगत लोग शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!! का पाठ पढ़ाते हैं ताकि इनकी बंधी पैंशन भी क्रान्ति देवी की भेंट न चढ़ जाय।

सोमनाथ पर इकत्रित हुए राजपूत भली प्रकार जानते थे कि ब्रहमणी पुर के शिवजी के मन्दिर की रक्त-वर्णी पताका को नग्न करने वाले वही धर्म जीवी थे।

यह राजपूत भली भांति जानते थे कि महमूद को मथुरा के मन्दिरों के दबाये हुये खजानों का भेद बतलाने वाले यही धर्म के टेकेदार थे। यह राजपूत अच्छी प्रकार से जानते थे कि लाहौर विजय में सुबकतगीन को अपनी फौज के आगे गौओं की कतार खड़े करने की चाल सुझाने वाले यही धर्म-गुरु थे यह सब कुछ जानते हुये भी उन बीर बहादुर राजपूतों ने उन पंडो के कहे पर विश्वास किया, मैं समझता हूं उस से बढ़ कर राजपूतों के लिये अधिक कोई और पाप नहीं हो सकता — भारत माता बोली ! भगवन ठीक कहते हैं ! उन्हीं पापों के कारण से मैं पराधीन बनी और उन्हीं पापों के कारणे मेरे लाखों पुत्र गजनी में ले जा कर दो दो रुपये को बिके !···श्री भगवान् बोले !

हे हिन्दमाता ! धर्म गुरुओं ने इससे पहिले भी एक बड़ा भारी मैदान मारा था, तुझे पता है कि मुहम्मद बिन कासम ने तुझ पर आक्रमण किया। हे हिन्दमाता, दाहर की वीरता के सामने

वह कदापि टिक नहीं सकता था उस वीर की हार का कारण मैंने साथ वेला के दाहर के भाई का कासम से मिल जाना बतलाया था अब दूसरा कारण सुन ! ब्रह्मणी पुर दाहर की नगरी थी वहां एक बड़ा भारी शिवजी का मन्दिर था, वहां के लोगों की यह दृढ़ धारणा थी कि जब तक उस शिवजी के मन्दिर पर फहरा रही पताका खड़ी है तब तक उन्हें कोई शक्ति जीत नहीं सकती और जब पताका गिर जावेगी तो इसका अर्थ यह हुवा कि शिवजी हमारे विरुद्ध हैं और उन्हीं की मर्जी है कि हम हार जायें। झंडा गिरा कर मानो शिवजी अपने पराजय का अलाम करते हैं। हे हिन्दमाता, यह तूने देख लिया कि यह पथरीले शम्भु कर ही क्या सकते हैं ! इसकी शक्ति का प्रदर्शन सोमनाथ में हो ही चुका, इनकी लय प्रलय का झंडा महमूद ने फोड़ दिया। फिर यदि आदमी ही कोठे पर चढ़कर अपने हाथ से इस पताका को गिरादे तो इसका अर्थ क्या हुआ ! और हे हिन्दमाता ! हुआ भी ऐसे ही।

मुहम्मद बिन कासम लगभग साढ़े तीन महीने शहर के बाहिर डेरा डाले पड़ा रहा, बरसात के मौसम में सिन्ध चढ़ा हुआ था, कासम के लिये वापिस जाना कठिन था, इधर उसका दाना पानी खत्म हो चुका था चाहिये तो यह था कि ऐसे समय में तेरे पुत्र अपने घरों से निकल उसका सामना करते परन्तु वह तो तुलसीदास की दोहावली पढ़ रहे थेः---

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये जब लग घट में प्राण॥
जो तों को कांटा बुये ताको बोय तू फूल।
तो को फूल के फूल है वाको है तिरसूल॥

राम भरोसे बैठ कर रहो खाट पर सोय।
अनहोनी होवे नहीं जो होनी सो होय॥
कबिरा तेरी झोंपड़ी गल कट्यां दे पास॥
जो करनगे सो भरनगे तू क्यों भया उदास।

हे हिन्दमाता! जिन लोगोंके जीवनबृक्ष की जड़ोंको ऐसी गंदी थर्ड क्लास शिक्षाने खोखला कर दिया हो वह क्या खाक लड़ते। हुआ क्या! हुआ वही जो होना था, चालाकी से मुहम्मद बिन कासम ने इस मन्दिर के बड़े पुजारी को अपने वश में किया उसे बहुत रुपया दिया, केवल इस बात के लिये कि वह उस मन्दिर की झण्डी को नीचे गिरादें। बस ऐसा ही हुआ वह जो धर्म के ठेकेदार बने बैठे थे उन्होंने उस मन्दिर की पताका को गिरा दिया बस सारे शहर में हाहाकार मच गयी। सारे मशहूर ही होगया कि महादेव जी का हुक्म है कि तुम स्वयं हार जावो और हुआ भी ऐसा ही पुजारियों ने शहर के दरवाज़े खोल दिये मुहम्मद बिन कासम शहर के अन्दर दाखिल हुआ।

हे हिन्दमाता! जिस कार्य को समस्त राक्षसलोक मिलकर भी नहीं कर सकते थे, उसे बिना ही लड़ाई के एक क्षण में उस बाईस साल के छोकरेने कर लिया, सीताको तो रावण स्वयं आकर उठा लेगया लेकिन तेरे पुत्रों ने स्वयं धक्का देकर तुझे रावण के हवाले कर दिया।

गज़नी का शेर देख, शत्रु दलेर देख,
उठी शमशेर देख सोम भये मोमना।
भारत पै भीर देख, भगतों पै पीर देख,
ऐसे हैं पाषाण सोम रत्ति होए मोम न।
नाम ही सों काम वान होते प्रभुसोमनाथ,
वैरियों के हाथ निज होने देते होम न।
"श्याम" यदि सच्च मुच्च सोम होते सोमनाथ'
देशहु में फैला होता ऐसा तम तोम न,

जगत संहार का जो ठेका लेवें सोमनाथ।
एक महमूद को तो मार वे सके ही न।
आरत, पुकारत हैं बार बार भक्त लोग,
'आओ, आओ सोम, पर सोम वहां थे ही न।
आपु को बचाके वे तो सागर में कूद गयो,
रोते बिलखातों के वे रक्षक बने ही न।
जग को बचावें, न बचावें वही जाने पर,
अपनी तो बेर भैया पेश कुछ गई न।

... ...

गज़नी का शेर जब चढ़ि आयो सोम पर,
लूटने को सोमनाथ कहूँ बात तब्बकी।
सिन्धु पति सोमनाथ औरन को देत ताप,
अपनी जो बारी आई मारि गये दब्बकी।
पीराहु पैगम्बरा दिगम्बरा दिखाई देवें,
सिद्ध की सिद्धाई गई रही बात रब्ब की।
श्याम, हिन्द सोमजी ने कीनो होतो मोमनाहीं,
हिन्द से तुरक्की भागी होती गई कब्बकी।

... ...

सोमही के कारणे अन्धेरा छायो भारत में,
सोमनाथ सोम नहीं अन्धकार नाथ है।
डरे जोई इस से तो तिस को डरावे दूनौ,
ताहीको जितावे जोई ताड़यो ताको माथ है।
माखन मलाई पेड़ा पूरी खावें गप्प गप्प,
आफत में भगतों का दियो नाही साथ है।
सोमनाथ कारणे तो देश पराधीन भयो,
सोमनाथ है या भई अन्धकार नाथ है।

सोम ही के कारणे तो भारत गुलाम भयो,
सोमनाथ सोम-तम तोम के भण्डार थे।
सोमही के कारणे अन्धेरा छायो भारत में,
सोमनाथ सोम नहीं ठेठ अन्धकार थे।
सोम ही के कारणे तो विश्वजीत राजपूत,
तुच्छ से रिपु के आगे झट गये हार थे।
सोम ही के कारणे कलंक आयो भारत में,
यही सोमनाथ क्या कलंकी अवतार थे?

... ...

बीसहों बरस जिन पूजा सोमनाथ जी को,
तिस का सुफल सब आज ही तो पायो है।
गज़नी में बिके दो दो रूपये को पुजारी लोग,
खेतन में घास खोदी डंगर चरायो है।
मार भी पिटायो, मल मूत्र भी उठायो,
सभी नाच नचवायो जोर मनमांही आयो है।
धन्य धन्य जगत-प्रकाश प्रभु सोम जिन,
भारत सपूतों को यह सुदिन दिखायो हैं।

मनमीं निधाय श्री सोम प्रभु की भक्ति,
आत्मावलम्बन की हाथ उठाय शक्ति।
रणधीर, वीर, रजपूत समर में जाते,
यवनों के चिन्ह तक भी तो नज़र न आते!

पृथ्वी राज

ऐ हिन्द ! तू सब बातों में सब जग से बड़ा है ।
विद्या में, निपुणता में, तेरा नाम बड़ा है ।।
दौलत का बड़ा हिस्सा तेरे बांट पड़ा है ।
वीरत्व में धीरत्व में भी सब से कड़ा है ।।
पर फूट व आलस्य तेरे ऐब हैं भारी,
जिससे तेरी खुशहाली सभी जाती है मारी ।

यदि हिन्द में यह फूट का मेवा न उपजता,
उत्कर्ष हमारा भी कभी हमको न तजता ।।

घर की फूट बुरी,
घर की फूट ही सों विनसाई सुवरण लंक पुरी ।।

श्री भगवानोवाच

(मन्दाक्रान्ता)

धृत्वा कण्ठे १मरुस्थल प्रभुम् साक्षी कृत्वा कुराणम् ।
पटकृत्वा येन पृथिवीपतिना याचितं जीवदानं ॥
गौरी सैव सुररिपु यदा धर्म-क्षेत्रे स्थितोऽसीत् ।
तस्मन्काले तवसुत वरै राजपुत्रै कृतः किम् ॥

श्री भगवान बोले, हे हिन्दमाता ! गोर का वे राक्षस पति शहाबु—सात वेर पृथ्वीराज से हार कर—उस तेरे वीर पुत्र के पास एक एक वर्ष तक बन्दी रहकर जब बार बार क्षमा दान मांग कर हाथों में कुरान उठाकर अल्ला की क़सम खाकर "मैं फिर कभी भी भारत की ओर मुंह नहीं करूंगा" ऐसा कहकर भी जब बार बार तुझ पर आक्रमण करता रहा उस समय इन तेरे राजपूतों ने क्या किया—

(शार्दूल विक्रीडितम्)

काढ़ी सात लकीर नाक से जिन, हाथों उठाए कुरान ।
अल्ला को बहु वेर साक्षी कर जिन, अपने बचाये प्राण ।
वे गौरी गजनी पति सुररिपु, करके क्षमा याचना ।
भागा प्राण बचा जो बाप के घर, विजयी वह कैसे बना ॥

... ...

पृथ्वीराज तेरा वह वीर पृथ्वी, भारत तेरा वीर लाल ।
योधा वह जिसने यवन को बांधा लंगोट में आध साल
कालिंदी तट से यवन को फैंका सीमान्त खैबर के पार ।
योधा वह बजरङ्ग वीर कैसे, बन्दी बना अन्त बार ।

---

१ अल्लामियां

गाती है जिस राजपूत-बल की महिमा बड़ी आज तू ।
कहती है जिन वीर बांकुरों को वीरों का सरताज तू ॥
देवी वह कुल-द्रोही पितृकुलघ्न नर दुष्ट स्वारथ सने ।
वे जयचन्द्र से राजपूत कैसे तेरे विनाशक बने ॥

... ...

जयचन्देन शठेन देशरिपुणा कुलघातिना मंत्रितः ।
गौरी गौरपति म्लेच्छ प्रवरोसमरे स्थितोऽसीदयदा ॥
हतु म् त्वाम् पृथिवीपतेः नरपतेः भारतपतेः यदुपतेः ।
कुरुक्षेत्रे ननु विश्वदेवयजनी किंराजपुत्रैकृतम् ॥

श्री भगवान् बोले—हे हिन्दमाता ! मुहम्मद बिन कासम ने तेरे पंखों को काट डाला—महमूद गजनी ने तुझे जंजीरों से जकड़ लिया। अब एक तीसरा राक्षस तुझे सदा के लिये बन्दी बना लेने के लिये आया। वह राक्षस था "शहाबु—"

उस समय तेरी रक्षा का भार पृथ्वीराज पर था। वह तेरा पुत्र अवनी पति इतना बहादुर था कि उसने सहज में ही अनेक बार इस राक्षस को पछाड़ा। किष्कन्धा-नरेश इन्द्र-पुत्र वाली के बारे में तूने लोगों से सुना होगा कि एक बार वह तपस्या कर रहा था, रावण ने सोचा यह सुवर्णकाल खोना नहीं चाहिये। अस्तु ! वह वाली पर धावा बोलने आया और बाली ने तप करते करते ही एक खिलौने के समान उस राजराजेश्वर—कुबेरजित, लंकाधिपति दशकन्धर को अपनी बगल में ६ मास तक दाबे रक्खा। ठीक ऐसे ही पृथ्वीराज ने सहज में ही उस शहाबु को पकड़ सातवार नौ २ महीने तक अपनी जेल में बन्द रक्खा—परन्तु (भगवान कहते कहते रुक गये।)

हिन्दमाता बोली ! भगवन् कहते क्यों नहीं आगे ? परन्तु,

"धर्मेव हतो हन्ति धर्मोरक्षति रक्षितः"

मारा हुआ धर्म मनुष्य को मार देता है और रक्षा किया हुआ धर्म मनुष्य की रक्षा करता है।

हे हिन्दमाता यदि पृथ्वीराज को वास्तविक राज-धर्म का ज्ञान होता तो जयचन्द की दुष्टता भी नाकाम रहती। लड़ाई में कई बार पृथ्वीराज ने गौरी को नीचे गिराया और गले पर तलवार तक रख दी। परन्तु वह म्लेच्छ झट गिडगिडा कर माफी मांग कर छूट जाता और पृथ्वीराज इसे छोड़ता रहा।

देवी! राजधर्म कहता है!

गुरुंवा बालवृद्धौवा ब्राह्मणम्वा बहुश्रुतम।
आततताईन मायान्तंहन्यादेवऽविचारयन्॥

गोघाती आततताई चाहे कोई भी हो उस का वध करना राजाओं का धर्म है।

क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतीनामेव भूषणम्।
अपराधिषु सत्वेषु नृपाणाम् सैव दूषणम्॥
पिता वा यदि वा भ्राता पुत्रो वा यदिवा सुहृत्।
प्राणच्छेद करा राज्ञाहन्तव्या भूतिमिच्छता॥

इस धर्म का पालन किया था कृष्ण ने! महाभारत में जब कर्ण का रथ कीचड़ में फंस गया तो उस समय ऐसे ही वह कर्ण भी धर्म की दुहाई देने लग गया था—और यदि कृष्ण उस समय अर्जुन के साथ न होते तो वास्तव में कर्ण की चाल चल ही जाती—परन्तु कर्ण को धर्म की दुहाई मचाते देख कृष्ण ने कहा था" अरे कर्ण उस समय तुम्हारा धर्म कहां गया था जब वारण-वातमें पांडवों को आग लगा दी थी—जब भीम को विष दिया था-

जब धोके से युधिष्ठर को जीता था---जब सति द्रोपदी का भरी सभा में अपमान हुआ था--जब बारह वर्ष के बनबास के बाद भी पांडवों को एक अंगुल स्थान नहीं देता था और जब सप्त-महा रथियों ने अकेले अभिमन्यु को घेर कर उसका बध किया था--- उस समय तुम्हारा धर्म कहां गया था----अभिमन्यु का शब्द सुनते ही अर्जुन का तोर और कर्ण का सर भिड़ गये---।

हे भारतमाता, धर्म का तत्व बड़ा गूढ़ है। भला "राजाओं को शत्रुओं पर दया ही क्या ! जो राजा, राजा होकर भी अपने शत्रुओं को छोटा समझता है और उन्हें क्षमा कर देता है उसकी अन्तमें वही गति होती है जो पृथ्वीराज की हुई।

इसी दया धर्म के प्रताप से जब वह पृथ्वीराज कड़ियों और बेड़ियों से जकड़ा हुआ शहाबु के सामने लाया गया तो तुझे पता है शहाबु ने क्या कहा था !

शहाबु के एक मन्त्री ने प्रार्थना को, सुलतान इसी पृथ्वीराज ने तुम्हें सात वार क्षमा कर दिया, तुम इसे एकबार ही क्षमा कर दो। शहाबु बोला ! चुप !! पृथ्वीराज मूर्ख था, मैं मूर्ख नहीं हूँ···सुना······!!!

हिन्दमाता बोली, भगवन ! पृथ्वीराज तो वीरगति को प्राप्त भया ही परन्तु उस जयचन्द का क्या बना जिसने म्लेच्छ के साथ मिल कर मेरे घर को उजाड़ा था।

भगवान बोले, हिन्दमाता----जयचन्द का बना, जो बना करता है देश द्रोहियों का।

मौत ! भयानक मौत !! कुत्तों की मौत !!!

महाराणी पद्मिनी

धन्य धन्य! भारत क्षत्राणी! सुयश तुम्हारा गाता हूँ।
फिर भारत में वीर नारियां जन्में यहीं मनाता हूं॥
वीर नारियां माता बन कर, वीर पुत्र उपजावेंगी।
तब भारत की सब विपत्तियां, दुम दबाय भग जावेंगी॥

... ...

धन्य धरा भारत की, जिसमें ऐसी अबला होती हैं।
प्राण-नाश से भी अपने नहीं पातिव्रत को खोती हैं॥
धन्य जाति, कुल, ग्राम, धाम वह जहं उपजे ऐसी नारी।
ऐसी नारी का गुन गा कर सुख पाते हैं संसारी॥

हों देवियां पद्मा सी यदि हिन्द में पैदा।
तब देश के टल सकते हैं सब कष्ट व बाधा॥
हर नारी के शुभचित्त में उत्साह भरा हो।
वीरत्व सहित चित्त में सत-धर्म खरा हो॥
अन्याय को महिशप समझ शीश उड़ा दें।
सुख-शान्ति की इस हिन्द में धारा सी बहा दें॥

श्री भगवानोवाच

यह पापी जो रल मिल लगे देश का नाश करने।
व्रजभूमि पे निशाचर लगे हो के निर्भय विचरने ॥
अत्याचार प्रसरित हुआ सर्वत: खरचमू का।
सोचा मैंने भरतकुल का ताप कैसे मिटेगा ॥
घूमें भू पे मरुस्थल शृगाल सिंह का धार बाणा।
मिथ्या भय सों थर थर कंपे राजपूतान राणा ॥
सोचा मैं ने भरत कुल का किस विधि त्राण होगा।
भारत मां का असुर दल सों कैसे कल्याण होगा ॥
कालासन्न: असुरपति वह दुष्ट खिलजी अलादीन।
कामान्ध: वह मन्मथ-मलिनमोह में जो हुआ लीन ॥
आर्या हेत चितवर गुफा में गय काल प्रेरा।
मानो मृत्यु सर पर धरे पद्मिनी काम चेरा ॥

श्री भगवान बोले; हे भारत -- शहाबु के द्वारा ग्रसी हुई तू बड़ी ही चिन्ता को प्राप्त हुई। असुरों के दल के दल तेरे घर को लूटने लगे। तेरे शस्य श्यामल उपवनों को उजाड़ने लगे उस समय मेरे हृदय में एक तीव्र वेदना उठी राक्षसों से घिरी हुई भारत-माता का कैसे कल्याण हो देवजननी ऋषि-सुता जगदम्बा का निशाचरों के हाथों से कैसे त्राण हो। ऐसा सोचकर मैंने उस खरपति अलादीन को उठा कर झट पट अकेले को ही चित्तोड़ की गुफा में बैठे हुए शेरों के हवाले कर दिया" लो शेरो यह यवन राज तुम्हारे काबू में है जो चाहो इसे करो" परन्तु--

हर्तुमार्याम् कथमपि छलेन पद्मनीम् पद्म नेत्राम्।
अल्लादीनो यवनपति स खिलजीवंश कलङ्कः॥
गत्वान योऽसौ मलिनमनसा केशरीणाम गुहायाम्।
तस्मिन्काले तव सुत बले राजपुत्रैः कृ तः किम्॥

हिन्दमाता ! जब वह दुष्ट अलादीन सति साध्वी पद्मनीको हरने के लिये चित्तौडकी गुफा में आया तो बता उस समय तेरे पुत्रों ने क्या किया ।

भारतोवाच्

अरावप्युचितं कार्यमातिथ्यं गृहमागते ।
छेत्तु पार्श्वं गताम् छायाँ नोऽपसंहरते द्रुमाः ॥
गुरुरग्नि द्विज जातीनाँ वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः ।
पतिरेको गुरुस्त्रीणां सर्वस्योऽतिथिर्गुरुः ॥
उपकारिषु य साधु साधुत्वे तस्य कोगुणः ।
अपकारिषु य साधु स साधु सद्भिरुच्यते ॥

भगवन ! अलाउद्दीन अतिथि बन कर चितौड़ में आया था उस समय राजपूतों को उसका आदर सत्कार करना चाहिये ही था----यह सनातन धर्म है ।

श्री भगवानोवाच् ।

व्रजन्ति ते मूढ़धियाः पराभवं ।
भवन्ति मायाविषु येनमायिना ॥

हे भारतमाता ! 'शठे शाठ्यम्' धर्म का ऐसा आदेश है । वे मूढ़ जो छली कायरों, धर्महीन व्यक्तियों नर-पशुओं को दया से ठीक करना चाहते हैं उनकी गति अन्त में वही होती है जो राजपूतों की हुई । उस समय अलादीनका बध करना यदि पाप था तो हिन्द माता मैं पूछना हूं——

देवल गिराय फहराय अलि चिन्ह जिन,
भरा हिन्दू सतियों से दिल्ली का हरम है।
पिता ही के तुल्य चचा मीरह जलालदीन,
करके कतल पायो पद जह परम है।
ऐसे दुराचारी गौघाती अलादीनखां को,
सादर लिवाये घर आई न शरम है।
शस्त्रहीन रिपु पे प्रहार यदि पाप है तो,
देवियां दिखाना उन्हें कौनसा धरम है।

❀ ❀ ❀

धर्मावतार रजपूत सिंह पूत नित्य
गावती सदैव ही तु जाके गुण गान को।
हिन्दु-पत राखी जिन राखी लाज देवन की,
धरम के हित जिन वारा निज प्राण को।
छांड़ा न धर्म अपि छांड़ दीनों राज पाट,
बट्टा न लगाने दीनों राजपूती आन को।
ऐसो शूरवीर रणधीर तेरे राजपूत,
ताही ने दिखाई पद्मनी क्यु मुसलमान को।

❀ ❀ ❀

छल ही सों जीता जिन दक्खन का मालदेव,
छल से ही जीता जिन गूजर नरेश को।
छल से ही मारा जिन चौक में जलालदीन,
छल से ही धारा जिन कामी-छद्म वेश को।
छल से ही दीन से वेदीन जह १ कफूर कीना,
छल से ही लूटा जिन राजपूती देश को।
तिन तेरे वीर राजपूतन पे धिक् धिक्,,
सिंहणी की प्रतिमा दिखाई जह म्लेश को।

———❀———

१ मलिककाफूर

भारतोवाच

(शिखरणी)

गगन की देवी वह रघुकुल विधु की पद्मनी
वह भीमा की राणी उस नर-पशु की कब बनी ।
वह चण्डी का वेश धरके जब गरजी समर में
खडग थो हाथों में कस रही कटारी कमर में ॥
वह भीमा का राणी भरत कुल की वह पद्मनी
सुधा-देवी कैसे रण महं बनी विष सद्मनी ।
हयारूढा चण्डी प्रगटित भई ज्युं समर में ।
असुरका शोणित पी चली निज पिपासाको हरने॥

भारतमाता बोली, भगवन् ! वास्तव में राजपूतों ने यवन को घर बुलाकर और उस नर-पिशाच को पद्मिनीकी प्रतिमा दिखा कर अच्छा नहीं किया । परन्तु उस सती साध्वी देवी ने तो भारत कुल की लाज रख ही ली ।

सर्वज्ञदेव जानते ही होंगे--किस प्रकार अलादीन के कैम्प में जाकर उस देवी ने चण्डी का रूप धारण किया था। किस प्रकार गगन मण्डल हर हर महादेव के गगन बेधी जयकारों से गूंज उठा था -- किस प्रकार रणभूमि में यवन लोगों के ढेरके ढेर लग गये थे, उस सिंहनी की तलवार के सामने किस प्रकार मूली गाजर के समान यवनों के दल कटते थे और उस समय समस्त भूमण्डल उस देवी के पराक्रम को देखकर किस प्रकार साधू-वाद कह उठा था—

बीणा में झंकार कहां वह जो रणभेरी में है,
जितना गौरव है मरने में उतना किस गौरव में है।
लेकर कर्म कृपान हाथ में निकलेंगी जब महिलायें,
यवन दुष्टके पापकुंड की कांप उठेंगी सीमायें ॥

नादिरशाह

नादिर ने जो अवनी-तल पे रक्त धारा बहाई।
कालिन्दी के बिमल तट पे खूं की होली मचाई॥
गौ ब्रह्मण के सर पर जभी घोर सकंट पड़ा था।
रजपूतों ने जगत-जननी उस समय था किया क्या?

चंगेज़खां

वह चगेंज़ थर थर कंपा जा के भय सों हरीलोक।
वह चगेंज़ जगती तल पे जिन बिछाया महाशोक॥
वह चगेंज़ दल बल लिये जब तेरे घर में आया।
रजपूतों ने जगत-जननी उस समय था किया क्या?

बख्त्यार खिलजी

गज़नी का वह अतुल बलवान वीर बख्त्यार खिलजी।
लादी जिस ने धरनी-तल पै विश्व-व्यापी प्रलयसी॥
केवल सत्तर यवन संग ले हिन्द को जा ने लूटा,
रजपूतों ने जगत-जननी उस समय था किया क्या?

तैमूरलंग

मध्येशया का असुर बलवान विश्वविजयी तिमर लंग,
गन्धर्वों का अगणित समय जा ने कीना समर-भंग॥
वह तैमूर सुरसरी तटे तुझ को हरने जो आया,
रजपूतों ने जगत-जननी उस समय था किया क्या?

मुहम्मद तुगलक

दिल्ली को जो स्वयं तज के दंडिकारण्य की ओर,
भागा लोभी तुग़लक महामद मचाने समर घोर॥
देवाचल को असुर पति ने राजधानी बनाया,
रजपूतों ने जगत जननी उस समय था किया क्या?

(महाराणा संग्रामसिंह)

भगवान बोले, हिन्द माता ! तेरा सङ्कट कैसे कटे ? अलादीन के साथ जो किया इस से अधिक और हो ही क्या सकता था — परन्तु तेरे पुत्रों ने तो सब करी कराई पर पानी फेर दिया। अन्त में मैंने एक और प्रयत्न किया – मध्येशिया से मैंने बाबर को भेजा कि वह लोधी वंश का खातमा करदे और इधर मैंने राणा सांगा को तैयार रक्खा कि जो बाबर पर ठीक उस समय आक्रमण करदे ज्यों ही वह इब्राहीम से लड़कर ही हटे।

परन्तु हिन्दमाता--

श्री भगवानुवाच् ।

परित्रातुम् त्वां असुरप्रवरात् बब्बरात् इन्द्रशत्रोः ।
वृद्धोवीरो खगपतिरिव मैथिलीम् राक्षसेन्द्रात् ॥
राणा सांगा (फतह)पुर पुरे एतदर्थप्रयत्नोत् ।
तस्मिन्काले तत्रसुतवरैराजपुत्रैकृ तः किम् ॥

चारबीस गोलियों के छाती पै निशान धार,
एक टांग, भुजा, आंख रही नहीं तन में।
भारत के रिपुओं से घोर युद्ध मध्य श्याम,
वह तो सब छिन गई वीरता के रण में॥
ऐसा युद्धवीरसिंह सिंह की दहाड़ मार,
बाज बन टूटा जाके बब्बर के गण में।
बब्बरका गब्बर जहं छिन मांही तोड़ दीना,
जय जय नाद गूंजा जसु वीर का गगन में॥

दश कन्ध कन्ध पै चढ़ाय चला मैथिली को,
ताही को बचान हेतु आयो बृद्ध गृद्ध-राज।
द्रौपदी पुकारे ठाडी कौरवों के भुडं माहीं,
द्वारका पति ने आके ताही की बचाई लाज।
धरो दुष्ट रावण को रूप आज बब्बर ने,
राणा रघुराज युद्ध हेतू चले चमु साज॥
फतह पुर सीकरी में यवनों के ठठ्ठ ठाडे,
ताही पर ठाडा संग्राम सा स्याना बाज।

चौधरी हेमराज

It was only said to thee
"untouchability is a national sin"
But now I say unto you,
"every thing that divides is sin"
Caste,
the present spirit of Caste ...... of which,
untouchability is but an effect and symptom
that is a national sin.

जात पात नहीं डायन है ।
भाई से भाई को लड़ाती ।
जाति का सर्वस्व लुटाती ।
आप है गाती हमें पिटाती ।
यह स्यापे की नायन है ।
जात पात नहीं डायन है ॥

श्री भगवानुवाच

गरुड़ारुढ़ा विचरन्पुरा रोदसो हिन्दमाते ।
क्रोशन्तीम् त्वाँ सुरसरीतटे खेचरन्नहमऽपश्यम् ।।

कल्याणाय जननी जगताम् हेम वीरम् प्रदत्तम् ।
तस्मिन्काले तव सुतवरैराजपुत्रै कृतःकिम् ।।

श्री भगवान बोले हे हिन्द माता ! अल्ला मियां ने किसी विशेष आवेशमें आकर अपने प्यारे हमायूं को मसजिद से धक्का दे दिया उस समय इन्द्रासन खाली था। मैंने तेरे पुत्र चौधरी हेम राज के हृदय में प्रेरणा की "चल, ओ भरत के वीर! देख! इन्द्रासन यवन हीन हुआ किसी भारत पुत्रको प्रतीक्षा कर रहा है। यह स्वर्ण काल व्यर्थ जाने न पाय" मेरे द्वारा ऐसा प्रेरा वह भारत केशरी हेमराज इन्द्रासन पे जा बिराजा और दिल्ली पे ढ़ाई महीने निरन्तर हिन्दुओं का राज्य रहा।

यवनोत्तराधिकारी अकबर अभी बच्चा ही था। दिल्ली पे वैदिक पताका फहराते देख पंजाबसे बैरमखां और अकबर दिल्ली पे हल्ला बोलने आये।

उस समय चौधरी हेमराज उस धर्मासन पे सज रहा था। उसके पास सैना काफी थी—परन्तु थी वह अधिकांश में पठानों की ही। वह हेमराज उस बात को जानता था कि इन पठानों के भरोसे बैठ यवनों से लड़ना ठीक नहीं क्योंकि पता नहीं इन लोगों का यह कब धोका दे दें।

अस्तु अपनी रक्षा के लिये उस वीर ने चित्तौड़ के महाराणा को लिखा "महाराणा साहिब ! आप बड़ोंके पुण्य प्रतापसे दिल्ली में इस समय हिन्दुओं का राज्य स्थापित हो चुका है। अढ़ाई महीनों से निरन्तर विक्रमादित्य का सोने का सिक्का चल रहा है। परन्तु पञ्जाबसे भय है वैरामखां का। मेरे पास सेना तो है परन्तु उसमें अधिकांश पठान हैं। मुझे इन लोगों पर कोई विश्वास नहीं। पता नहीं यह कब धोका देदें। बैरमखां तथा अकबर दोनों दिल्ली की ओर सैना लिये बढ़ आ रहे हैं। इस लिये आप २५००० रजपूतों की सैना शीघ्र भेजें ताकि मैं वैरामखां से युद्ध कर सकूं। राज्य हिन्दुओं का होगा, चित्तोड़ के महाराणा भारतके सम्राट् होंगे। मुझे इसी बातकी प्रसन्नता होगी कि मैंने स्वयं राज्य जीतकर चित्तौड़ के महाराणा के हवाले कर दिया है, परन्तु—

जाने थामा, गगन-तलपे, आदली सूर वसं।
रीवाड़ी का अतुल बलवान वैश्य-वंशावतसं॥
वे कंचन राज कनक-रथ पै जो समर भू में आया।
रजपूतों ने जगत जननी उस समय था किया क्या?

... ...

पानी पत में असुर दल से जो भिड़ा हिन्द का शेर।
रणभूमि में यवन दल के छिन्न में थे लगे ढेर॥
हिन्दु का वह लुट रहा करम जब चमकने लगा था।
रजपूतों ने जगतजननी उस समम था किया क्या?

... ...

रावीतट से अकबर चला ले के योधा सवा लाख।
बच जाय यह मृत्यु मुख से मुगलिया वंशकी साख॥
बैरमखां को सन्मुख किये हेम से जो भिड़ा था।
रजपूतों ने जगत जननी उस समय था किया क्या?

भगवान रुकगये ... ... हिन्दमाता बोली...परन्तु–
भगवान् बोले परन्तु—

न निर्मिता चैव न दृष्टपूर्वं
न श्रूयते हेम-मयी कुरङ्गी।
तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य
विनाश काले विपरीत बुद्धिः॥

चाहिये तो यह था कि चित्तौड़ के महाराणा पच्चीस हज़ारके स्थान पर पच्चास हज़ार का दल भेज देते। परन्तु—

लिखितमधिललाटे मेटितुं को समर्थः

तेरे भाग्य में गुलामी से छुटकारा पाना लिखा ही न था—

माथे पर लिखी को मिटा ही कौन सकता है। चित्तौड़ के महाराणा ने लिखा—'अरे हेमूं! रीवाड़ी के बनिये तेरी इतनी हिम्मत कि तू हम सूर्यवंशी राजाओं को कहे कि वह एक बनिये के आधीन होकर लड़ें— होता यदि राज्य राणाका और उसमें एक बनियां लड़ता क्षत्री बनकर, तो फिर मेरी होती तलवार और उस का होता सिर।'

हिन्दमाता! देखा राजपूतों का धरम? अलादीनके लिये देवगिरी और गुजरात के हिन्दु राजा का सिर फोड़ना धर्म है। अकबर के लिये हिन्दु-पति राजस्थान केशरी प्रताप का सर काटने की शपथ लेना धर्म है। दुष्ट औरङ्गजेब के लिये महाराष्ट्र केशरी शिवाजी के बध करने का प्रयत्न करना धर्म है। यवनोंके आधीन होकर सिख वीरों के खूनसे प्यास बुझाना यह धर्म है। गोघातियों को अपना माई बाप बनाना यह धर्म है, अकबर को तथा जहांगीर को अपनी बहन तथा बेटी बिवाहना यह धर्म है·····परन्तु अपने ही एक हिन्दू भाई का तकलीफ में साथ देना यह है बड़ा भारी पाप !!!

भारत उवाच।

पापम् हि मन्यसे भगवन् कृत्यं तु राजसूनुनाम् ।
पापस्य फल भोक्तास्तु स्वयं हि त्वं जगतप्रभो ॥

भारतमाता बोली, भगवन्, राजपूतों ने जो कुछ भी किया यदि आप इसे वास्तव में पाप ही समझते हैं तो इस पाप का फल आप ही को भोगना पड़ेगा, क्योंकि—

चातुर्वर्ण्यं त्वया सृष्टं सृष्ट्यादौ जनार्दन् ।
यत्र द्वौ तत्र द्वेषो हि भवति नाऽत्र संशयः ॥

भगवन्! आप ने चार वर्णों की सृष्टि के आदि में ही रचना की। आप जानते हैं जहां दो होते हैं वहां झट द्वेष तो होता ही है, फिर जहां चार होंगे वहां जो कुछ भी हो सोई थोड़ा।

ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीत् बाहु राजण्या कृतः ।
उरुतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याम् शूद्रोऽजायत् ॥

और भगवन्! आप ही ने तो ऊंच नींच के भेद भाव को पैदा किया। ब्राह्मण को मुंह बनाया, क्षत्रियों को भुजा बनाया, वैश्यों को पेट और शूद्रों को पैर बनाया। ऊंच नींच तो आप ही ने पैदा की।

श्री भगवानुवाच।

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः ।
देवी सर्वेषु लोकेषु सर्व जातीसु सर्वदा ॥

श्री भगवान बोले, हिन्दमाता! गुणकर्म स्वभाव के अनुसार मैंने तो प्रत्येक जाति में तथा प्रत्येक देशमें चार वर्ण पैदा किये।

ब्राह्मणाः मन्त्र द्रष्टाराः क्षत्रियाः कुलरक्षकाः ।
वैश्याः प्रतिपालका शूद्रा सर्वेषाम् चरणसेवकाः॥

हे हिन्दमाता ! प्रत्येक अवस्था में प्रत्येक जातिमें चारही प्रकार के लोग होते हैं प्रथम वे जो दिमाग का काम करने वाले (ब्राह्मण) दूसरे लड़ाके (क्षत्रिय) तीसरे दुकानदार, कृषक इत्यादि (वैश्य) चौथे जो कुछ भी नहीं कर सकने वे (शूद्र) यह चार वर्ण न केवल हिन्दुओं में ही हैं परन्तु प्रत्येक देश में और प्रत्येक जाति में हैं और यह जन्म से नहीं किन्तु कर्म से हैं।

एक एव पुरा वेदः प्रणवः सर्व वाङ्मयः ।
देवो नारायणो नित्यः एकोग्निवर्ण एवच ॥
एक वर्णं मिदं पूर्वं विश्वमासीदजनेश्वरी ।
कर्म क्रिया विभेदेन चातुर्वर्ण्यं प्रतिष्ठितम् ॥
सर्वे वैयोनिजा मर्त्याः सर्वे मूत्र पुरीषजाः ।
एकेन्द्रियेन्द्रियार्थाश्च तस्माच्छीलगुणैर्द्विजः ॥
शूद्रोऽपि शील सम्पन्नो गुणवान्ब्रह्मणोभवेत् ।
ब्रह्मणोऽपि क्रियाहीनः शूद्रात् प्रत्यवरोभवेत् ॥

श्री भगवान बोले, हिन्दमाता ! सृष्टि के आरम्भ में कोई वर्ण नहीं था। ज्यों २ जन संख्या बढ़ती गई त्यों २ सोसाइटी के नियन्त्रण के लिये नियमों की आवश्यकता पड़ी, इसी हेतु वर्ण-व्यवस्था का आरम्भ हुआ। परन्तु यह कोई पैतृक सम्पत्ति नहीं ब्राह्मण पिता का शूद्र पुत्र और शूद्र पिता का वैश्य पुत्र पैदा हो सकता है। जैसा भी कोई काम करेगा वैसाही पद वह प्राप्त करेगा

भारतमाता बोली, भगवन ! जो कुछ आप बोल रहे हैं वह क्रियात्मिक तो नहीं है ?

तप त्याग त्यगा तीव्र तृष्णा तृषा है बाढ़ी,
लूट लूट खाते ब्रह्म पूत कहलाते हैं ॥
भीरु भाग जाते अबलाओं पे जताते ज़ोर,
वे ही मज़बूत रजपूत कहलाते हैं ॥
टाट लोट देते हैं. खिलाते बालकों को धूत,
भुक्कड़ों के भूत वैश्य पूत कहलाते हैं ॥
मल-मूत्र दूर कर छूत जो बनावें जग,
वे ही देव दूत हा अछूत कहलाते हैं ॥

भारत उवाच

अलमदेव वर्ण वर्णेन क्लान्तोऽस्मि वर्णवर्णनात् ।
पाहि मां पाहि मां देव नष्टोऽस्मि वर्ण भेदना ॥

भगवन ! आपकी यह मर्णव्यवस्था आपको मुबारक । इस के गुण मत गाइये । मेरा तो इसने सर्वनाश ही कर दिया—यह कहते हिन्दमाता बेहोश होगई ।

श्री भगवान् उवाच ।

वर्णाश्रमम् महद्धर्मं जगदाधारं कुलाग्रजम् ।
नाऽसौ शक्तुम इमम् भ्रष्टुं सर्वसत्ताधरोप्रभूः ॥

हे हिन्दमाता, वर्णाश्रम धर्म तो समस्त संसार का आधार है । इसका नाश करने से समाज की श्रंखलता टूट जायगी । आदि सृष्टि में जिस धर्म को परमात्मा ने रचा था वह हाणीप्रद नहीं हो सकता ।

नष्टुम्त्वेदं सर्वधर्म्माम् जातपातं यदीच्छसि ।
बरं ब्रूहि जगन्माते करिश्यामि वचनंतव ॥

हां यदि जात पात रूपी सर्व भक्षिणी दुष्टा से तू मुक्त होना चाहती है तो वर मांग। जो तू चाहती है मैं तुम्हें देने को तैय्यार हूं।

भारत उवाच

नष्टम् प्रयातु सुर-भक्षिणी जातपात।
तामेव गतिम् मरण-आश्रममाप्नुयात्॥
व्रजतु यमाय इह प्रेम-प्रभापहारी।
स्रवतु सुखाय "स्नेह-सुरसरी" सौख्यकारी॥

भगवन मुझे वर दो यह जात पात मिट जाये।

श्री भगवान उवाच्

बाढ़म—

न जन्मना कर्मणा अथवा गुणैर्वः।
कोऽपि भवेत्तवसुतः खल्वर्चणीयः॥
वित्तेणहि भरतजा ननु सन्तु पूज्यः।
एतद्ददामि ते वरं सुभगे प्रसीद्॥

श्री भगवान बोले, हिन्दमाता! मैं तुझे वर देता हूँ, सुन! जन्म से—कर्म से अथवा गुणों से किसी की जात बड़ी न होगी। जिसके पास पैसा होगा वही बड़ा होगा, सभी उसकी पूजा करेंगे।

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः।
स बांधवा स श्रुतिमान् गुणज्ञः॥
स एव वक्ता स च दर्शनीयः।
सर्वे गुणा काञ्चनमाश्रयन्ते॥

पैसा कमाओ ! पैसा ही ब्राह्मण है, पैसा ही लीडर है, पैसा ही महामहोपाध्याय है, पैसा ही सरपंच है—पैसा ही सब कुछ है—सब कोई पैसे के हैं । हे देवी यह वर मैं तुझे देता हूँ । ब्राह्मण क्षत्री वैश्य पैसे से ही होंगे ।

भगवान् के शब्दों को सुन कर हिन्दमाता बेहोश सी हो गई । कुछ ही क्षणों में एक ध्वनि उठी—

चोर, डाकू, लम्पट, लबार, ठग' धोकेबाज़'
लूट लूट पैसा जोड़ ब्रह्म पद पायेंगे ।
भूक सों तड़प सब ब्राह्मण मरेंगे, या तो,
पेट पालने को शीश टोकरी उठायेंगे
क्षत्रियों का नाम तक देश में रहेगा नहीं,
चारों ओर लम्पट लबार भर जायेंगे ।
जाह्नवी के तीर पर फिरेंगे कसाई लोग,
दीन दुखी कृषकों को नोच नोच खायेंगे ॥

भगवान चुप थे ! हिन्दमाता बराबर आंसू बहा रही थी, गङ्गा माता का हृदय क्षुभित हो उठा—जगदेवी की अन्तरात्मा से आह उठी !

डायन है, जात पात नहीं डायन है ।

एक जहाज़ करो तैय्यार ।
उस पर इसको करो सवार,
लिख दो उस पे अक्षरचार ।
डायन है, डायन है ।
जात पात नहीं डायन है ।

मारो इसको ऐसी मार,
छुपने को न मिले द्वार।
जो देखे सो करे पुकार,
फाइन है फाइन है।
जात पात नहीं डायन है।

भाई को भाई से लड़ाती,
देशोन्नति की राह में आती।
आप है गाती हमें लड़ाती,
यह स्यापे की नायन है।
जात पात नहीं डायन है।

जात पात के बन्धन तोड़,
चलें गाड़ियां तीस करोड़।
आगे प्रेम का इंजन जोड़,
तभी क्लीयर लाइन है।
जात पात नहीं डायन है।

जात पात को तोड़ेंगे,
छुआ छूत को छोड़ेंगे।
प्रेम का बन्धन जोड़गे,
यही हमारा गायन है।
जात पात नहीं डायन है॥

——*——

हिन्दु-पति

राजस्थान केसरी

महाराणा प्रताप

क्या कहा कि तब तक तुम न कभी वैभव सिंचित शृङ्गार करो।
क्या कहा कि जब तक तुम न विगत गौरव स्वदेश उद्धार करो॥
माणिक मणिमय सिंहासन को कंकड़ पत्थर के कोनों पर।
सोने चांदी के थालों को पत्तों के पीले दोनों पर॥
वैभव के विपुल महलों को कांटों के कटु झोंपड़ों पर।
मधु से मतवाली वेलायें, भूखी विलखाती घड़ियों पर॥
रानी कुमार सी निधियों की मां के आंसु की लड़ियों पर।
तुम ने अपने को लुटा दिया आजादी की फुलझड़ियों पर॥

श्री भगवान बोले, हे हिन्द माता तेरे पुत्रों की ओर से मैं सर्वथा निराश हो गया। तेरी रक्षा के लिये देख मैं ने कितना कुछ किया। तू ही बता भला मैं इस से अधिक तेरे लिये कर भी क्या सकता था। इन्द्रप्रस्थ का शासन यवनों से छीन कर तेरे पुत्रों को दिया। यदि तेरेपुत्रों के अन्दर सच्ची भावना होती तो चौधरी हेम-राज का राज अमर होजाता। परन्तु

अब मेरे सामने यह बड़ी कठिन समस्या थी। मैंने सोचा तुझे भुलादूं और तुझे रोने दूं। परन्तु जगदम्भा तो तेरे दुःख को एक क्षण मात्र भी नहीं देख सकती और मुझे फिर तेरा कल्याण करने के हेतु कुछ न-कुछ यत्न करना ही पड़ा।

पतित पावनी भागीरथी के तट पर अरबकी कांटेदार झाड़ि-यां—यह बात न केवल असम्भव ही थी बल्कि अप्राकृतिक भी जिस प्रकार भारतका आम हरिलोक (यूरोप)में नहीं पनप सकता ऐसे ही भारतवर्ष में यह मरु भूमि के कांटे नहीं उग सकते थे।

भारत माता बोली, भगवन ! क्या मैं यह बात सर्वज्ञदेव से पूछ सकती हूँ कि सर्वशक्तिमान होते हुए भी उस ने यह अप्राकृतिक कार्य कैसे होने दिया।

श्री भगवान बोले, देवी जी की शंका उचित ही है। परन्तु यह शंका करते हुए शायद देवी जी भूलजाती हैं कि मेरे कई बार इन वृक्षों को उखाड़ देने पर भी और वृक्षके उखड़ जाने पर भी अपने हाथों से देवी जी के पुत्रों ने हीइन वृक्षों को बोया।

भारतमाता चुप रही—और भगवान बोले हे भारत माता मैं सोच रहा था कि इसवृक्ष को कैसे उखाड़ूं। मैं ने सोचा कि इस यवन वृक्ष की जड़ें पाताल में समा चुकी हैं। एक व्यक्तिका काम नहीं उसे उखाडना—यह काम चार आदमियों का है।

(१) पहला महा पुरुष आये और इस यावनी वृक्ष की जड़ों पर पानी फैंके ! खूब पानी फैंके !! और इस प्रकार बिल्कुल ढीला

करदे इसकी जड़ को........ प्रताप

(२) दूसरा महा पुरुष आये—दोनों भुजाओंमें उस वृक्षके तनों को ज़ोर से पकड़े और हिलाय—और इस प्रकार हुचके मार कर इसे जड़ों से ढीला करदे .... शिवा जी

(३) तीसरा महा पुरुष आये और ज़ोर से ऊपर को हुचका मार उस यावनी तरुको उखाड़ कर ज़मीन पर फैंक दे ... गोबिन्द

(४) और चौथा महा पुरुष आये जो इस ज़मीन पर गिरे हुए यवन बृक्ष को उठाकर खैबर के परे फैंक आये जहां से कि फिर यह भारत वर्ष में न आये ....वैरागी

अस्तु इसी योजना के अनुसार मैं ने राजपूताना के अन्दर एक शेर को उत्पन्न किया-वह थे राजस्थान केशरी हिन्दु-पति महाराणा प्रताप :— लोहे को लोहा काटता है मैं ने सोचा मरु भूमि के पेड़को मरु भूमि का ही कोई काटने वाला चाहिये—अस्तु

श्री भगवान उवाच

बृद्धेमूले यवनज तरोः तम् विच्छेत्तु समूलम्
मरुस्थलयाम् मे मरुस्थल हरिम् भानुवंशावतंसम्
दत्तमयस्मिन् समये सुभगे वीर राणा प्रतापम् ।
तस्मिन्काले तवसुतवलैर्राज पुत्रैर्कृ तः किम् ॥

भगवान बोले, हे भारतमाता पतित पावनी कालिन्दी के वक्षःस्थल पर उगे हुए प्रकृति माता को युद्ध की चेतावनी दे रहे, उस यावनी बृक्ष की जड़ों पर कुल्हाड़ा चलाने के लिये उस रघुकुल कुमुद, भानुवंशावतंस, राजस्थान केशरी हिन्दुपति महाराणा प्रताप को तेरी गोदीमें भेजा। बता उस समय तेरे राजपूतों ने क्या किया ?

शार्दूलविक्रीडितम्

भक्तीमें जिस वृक्ष की हो तत्पर, जयपुर के भगवानदास,
बलबीरोंने रुधिर बहाके अपना,जिसका किया हो विकास।
आमेराधिपति सदैव जिस की रक्षा में तल्लीन हों
योधा वे अभिमान सिंह जैसे जिस के पराधीन हों!

* * *

रक्षा को जिस यावनी तरु की, टोडर भी टोडी बने
रक्षा को जिस की चढ़े समर में, मेवाड़ रज के जने ॥
मरुस्थल का तरुवरविशाल उपजा कालिन्दी के तीर जो,
पीकर शोणित राजपुत-कुल का क्यु न फलीभूत हो ॥

* * *

बेटी देकर के यवन–सुसर का पाया जिन्हों ने खिताब।
अकबर के सन्मुख जो हाथ बांधे कहते रहे हां जनाब ॥
वे तेरे रजपूत क्या उन्हीं की गाथायें गाती है तू?
क्या इन को ही जापान वीरता की समता में लाती है तू?

* * *

हाथों में धरके त्रिशूल करने निर्मूल इस को चढ़ा।
हल्दी घाटका शेर वीर परताप रण में जो आगे बढ़ा ॥
गंगा के तट से यह वृक्ष—अरबी निर्मूल होने को था ।
तब अपमान शृगाल मानसिंहने बतला भला क्या किया?

भारतउवाच

मानसिंह-प्रतापौ द्वौ सिंहौ वीर सुतौ मम् ।
तयोर्मध्ये कथम भगवन् प्रजातः घोर शत्रुता ॥

हिन्द माता बोली भगवन्! मानसिंह और प्रताप सिंह तो दोनों ही मेरे शूर वीर पुत्र थे! उन दोनो के बीच में घोर शत्रुता क्यों होगई ?

जित्वा गन्धर्वलोकम् येन दत्तम् यवनाधिपाय च।
स सिंहः वीरसिंहस्य शत्रु जातः कथम् प्रभो ॥

भगवन् ! मानसिंह बड़ा बहादुर था। मानसिंह ही ने तो अफ़गानिस्तान को जीत कर पठानों पर पन्द्रह वर्ष राज किया और अन्त में गन्धर्व लोक का राज्य अकबर को दिया। वह वीर मानसिंह राजस्थान केशरी से क्यं कर शत्रुता करने लगा,

श्री भगवान् उवाच

सर्वज्ञो-सर्वशक्तिमान--सर्वव्यापीश्वरोप्यहम् ।
न जानामि कथमजातः तयोर्मध्ये घोर शत्रुता ॥

सर्वज्ञपरमात्मा से कोई बात छिपी नहीं है। वह तीन काल की बातों को जानता है। परन्तु प्रताप ने मान का कुछ बिगाड़ा हो यह तो स्वयं भगवान को भी पता नहीं।

किन्तु देवी प्रवक्ष्यामि रहस्यम् परमद्भुतम्
क्वचित् तस्यैव जातेन् प्रजातः शत्रुता इदम्

हां एक छोटी सी घटना थी—सम्भवतः वही इस द्वेष का कारण होगई हो। सुन ? मैं तुम्हें संकेतमात्र वह घटना सुना देता हूँ –

बब्बर सुताय मुगलाय अकब्बराय।
सुर भक्तकाय बहु वेषधर खराय ॥
यवनाधिपाय छल-छद्म वपु धराय।
योऽसौ प्रदाय भग्नीम् यवनासुराय ॥

मानं विहाय यवनाधिपते हिताय।
भूत्वा शृगाल स हमीर-हरेश-करभः ॥
शोभाम् नवाम् प्रदर्शुम् स गतः यदैव ।
पञ्चाननस्य समुखे गिरिकन्दरायाम् ।
... ...
तन्नरपशोः कुलघ्नस्यऽति भ्रष्टरूपम् ।
न सिंहजेन् क्षणमात्रमपिऽपश्यत् ॥
मत्वा इदम् स्व अपमान् स मानसिंहः ।
परि रक्षितुं स्वअभिमान रणे प्रतस्थः ॥

हे हिन्द माता, मैं तो केवल इतना जानता हूँ कि वह मान का शेर अपना सिंह बाणा अकबर के चरणों पै धर कर अपमान का गीदड़ बन—अपनी नई शान को जब राजस्थान केशरी गूफाओं में भूके मर रहे उस आत्माभिमानी—शेर को दिखाने गया तो उस शेर ने उस गीदड़ की ओर आंख तक भी उठा कर न देखा।

और इसे अपना अपमान समझ कर वह अपमान-शृगाल ४ लाख तुरकों के दल को साथ लेकर राजस्थान केशरी से युद्ध करने के लिये हल्दी घाटी में आया।

अपने मान की रक्षा के लिए वह अपमान का टोकरा सर पर धरे हुए अमानुषिक सत्ताधारी अगणित असुर दलको साथ लिये हिन्दु-जाति के मूर्तिमान प्रताप रूपी मान के साथ टक्कर मारने के लिये आया।

हल्दी-घाट ।

बाईस ही हज़ार थे राणा के इधर ज्वाण।
दो लाख से ज़्यादा थे, उधर सिर्फ मुसलमान
हथियार इधर भाले, तबर, तीर, धनुषबान।
उस ओर अधिक था बड़ी तोपों का घमासान ॥
पर,देश की भक्ती से छके वीर इधर थे।
तनख्वाह के लालच से पके वीर उधर थे॥

जब मान ने घाटी पै दिया युद्ध का डंका।
थर्रानी हवा, फैल गया शोर अतङ्का ॥
मुंह ढांक लिया भानु ने, कुल लाजकी शङ्का।
हर्राये धराधर भी सुने वीरों की हङ्का ॥
मैदान में हर ओर मुसलमान पड़े थे।
इक तगं सी घाटी ही में, परताप पड़े थे॥

ज्यों ही सुनी परताप ने धौंसों की धुकारें।
हथियारों की झनकार व करखों की पुकारें।
जय कालिका अल्लाह व अकबर की हुंकारें॥
हिनकार भी घोड़ों की, गजों की भी चिकारें॥
और देखी जो प्रताप ने भालों की चमाचम।
आंखें हुई मगंल सी, हुआ मुंह भी तमातम॥

इक बूंद भी इस तनमें रकत बाकी है जबतक।
इक फाल भी चलने की सकत बाक़ी है जबतक॥
इक लोह की कणिका भी रहे हाथ में जब तक।
लोहा न सही दांत, व नख साथ हैं जब तक॥
तब तक जो कदम पीछे करे युद्धकता से।
बस जान लो वह क्षत्री नहीं अपने पिता से॥

बापा की क़सम पैग न पीछे को धरेंगे।
इकलिङ्ग की दाया से गज़ब मार करेंगे
सांगा का नमक खाने का ऋण आज भरेंगे।
इस, मान मुसलमान से तिल भर न डरेंगे।
प्रताप ! तुम्हारे लिये इक सीस ये क्या है।
सौ सीस के देने को हरो नेम निबाहै॥

जिस वक्त सुनी ऐसी ये वीरों की प्रतिज्ञा।
परताप का दिल सौगुना हिम्मत से उमाहा।
इकलिंग की जय बोल किया मान पै धावा।
ज्यों शेर बबर करता है गजराज पै हमला।
तुर्कों की बड़ी फौजका कुछ दिलमें न था ध्यान।
बस एक यही ध्यान था बढ़ कीजिये घमसान॥

परताप के वीरों ने जो की तीरों की बौछार।
तोपें हुईं सब मान की इक बार ही बेकार।
तीरों की सपासप से हुए तोपची बेज़ार।
बर्छों से भरे वीरों ने मुंह तोपों के ललकार!
सावन के महीने में हुई सातें को यह बात।
घाटी में हुई मानों सुरख पानी की बरसात॥

लपकी जो तरफ दोनों से तलवार की ज्वाला।
हिम्मत हुई परताप की उस वक्त दुबाला।
मुद्दत से जो प्यासा था वही खांडा निकाला।
बस मान के सम्मान को दिल अपना संभाला।
चेतक को कुदा मान के सम्मान को धाये।
उस वक्त का घमसान कहो कौन बताये॥

ऐ दुष्ट ! तू क्षत्री है कि शैतान है कोई ।
तू ने तो विमल वंश की लुटिया ही डबोई ।
संग्राम का वंशज बने तुर्कों का भिदोई ।
आ करले जो करना है अभी गर्म है लोई ।
ऐ मान मुसलमान अम्बारी में संभल बैठ ।
अब देखले क्षात्रीकी भी मूंछों की ज़रा ऐंठ ॥

चेतक को दपट हाथी के मस्तक पै उड़ाया !
और चाहा कि तलवार से कर दीजे सफाया ।
चेतक ने कदम हाथी के मस्तक पै जमाया ।
इतने ही में उस हाथी ने रुख अपना फिराया ।
और चीखके भागा कि भगे मान के औसान ।
औसान तो भागे पै रहे मान के तन प्राण ॥

परताप की शमशेर परी से भी परे थी ।
वह इन्द्र की तलवार से कुछ काम करे थी ।
सर पर जो पड़ा हाथ तो वह पैर तरे थी ।
थी ऐसी अधीरा कि नहीं धीर धरे थी ।
सर एक का काटा तो लहू और का चाटा ।
कन्धे से भरी दौड़ तो पहलू से सपाटा ॥

हे हिन्द माता ! राजस्थान की उस वीरप्रस्विणी भूमि में भारत की स्वाधीनता समर में दहाड़रहे उस रणकेशरी की दहाड़ से त्रिभुवन डोल गया—पृथ्वी माता अपने पुत्र की वीरता देख फूली न समाई । गौ ब्राह्मणका सारा संकट मानों मिट सा गया—सिद्ध और चारण अपनी अपनी वीणाएं लिये लगे मस्त हो हो कर अपने हृदयोद्गारों को सितार पर परखने—

गाईए पुनीत गीत उस वीर केशरी के,
केशरीया धार बाणा रण से हटा नहीं।
मान मानसिंह का मिटा दिया मुसलमान,
कोई भी तो लाल मांका सामने डटा नहीं।
शत्रु-सैन था अपार पारावार के समान,
किन्तु हिन्दु वीर का भी धैर्य घटा नहीं।
लोहा मान गया हिन्दुपतका अकब्बर भी,
भूला कभी राजपूती तेज की छटा नहीं॥

जब सब राजे राजी खुशी हाथों हाथ बेच,
अपनी रहे थे शान दिल्ली दरबार में।
जब हिन्दु देवियों की प्राणन से प्यारी लाज,
लुटती थी रोज़ नवरोज़ के त्योहार में।
अस्त हो चुका था जब हिन्दुओंका भाग्य भानु,
ज़ंग सा लगा था क्षत्रियों की तलवार में।
तब भी प्रताप के प्रताप से ही मातृ भूमि,
भारत का मान रहा ऊँचा संसार में॥

शीश पे उठाय अपमान का भडांर मान,
चला था बचाने राजपूती अभिमान को।
भग्नि पति का लेके चला था आर्शीवाद,
भानु कुल भानु परताप के बुझान को।
संग लिये भानजा सलीम योधा बाई-पूत,
गज तोपखाना—चार लाख तुरकान को।
सिंह के समुख भला कुत्ते की मजाल कहां,
भागना पड़ा था लेके अपनी ही जान को॥

कुल के कलंक मानसिंह का विलोक मुख,
अग्नी सी लागी मानों चेतक के तन में।
कूदा रण आंगण में जोर से दहाड़ मार,
हा-हा-कार मची झट वैरियों के गण में।
ऐसे रजपूतन के तुरकों पे ठट्ठ छूटे,
दावानल भूकी जिमी धाई सूखे बन में।
यवनों के झुन्ड माहीं कौन ऐसा लाल भला
राजपूत-केशरी के आगे आये रण में॥

तान के कमान पर असुर-संहार-बाण,
चेतक-सवार रिपु-दल पै छुटाय जो।
क्रुद्ध युद्धकेशरी की युद्ध की दहाड़ सुन,
कौन जाया लाल मां का सामने तो आय जो।
चार लाख गीदड़ों में ठाड़ा शेर भारत का,
सूरमा है कौन ज़रा आंख तो उठाय जो।
भूतल के भूप आप यवन संहार हेतु,
अन्तक-प्रताप बेश धरि आजु आय जो॥

चीखते थे हाथी हय्थ हींसते थे बार बार,
वैरियोंमें रल्ला सुन हल्ला मच जाता था।
कट्ट कट्ट रुण्ड मुण्ड गिरते तुरकन के,
झट्ट पट्ट वीरताका झंडा गड्ड जाता था।
ड़ों की हेकड़ी दबा के दुम भागती थी,
वैरियोंका सारा मद मान-भाग जाताथा।
लेकर स्वतंत्रता की तेज़ तलवारजब,
प्रणवीर प्रबल प्रताप अड़जाता था॥

कौन भयो दूजो प्रणवीर देश भक्त और
वीर ब्रतधारी रणशूर वीर बांको है।
वीर परताप जैसा भयो है प्रतापी कौन
सिंह सा सपूत वीर भक्त भयो मांको है।
जा ने जन्म भूमि हित प्राण बलिदान किया
सुयश अपार चहुं पूरी रह्यो जाको है।
फहरा रह्यौ बसुधा पँ जाही की गम्भीरताकी
धीरता की वीरता की उज्वल पताको है।

हल्दी-घाट

का

शेर

रण आंगन के चतुर चतेरे ओ परताप वीर अभिराम।
वीर धीर संग्राम सिंह के उज्वल भानु पूत ललाम॥

उन तेरे पूरव पुरषों ने राणा क्या न काम किये।
खिल्जी, लोधी, दासवंश के मानो काम तमाम किये

अकबर के चरणों पै जब सर धर बैठे थे सभी दलेर।
एक तेरा ही सर था ऊंचा ओ हिन्दुमाता के शेर॥

मान मान को बेच चुके बलहीन बने सारे बलवीर।
टोडर टोडी बने और भगवान भगे रण से तज धीर॥

स्वतन्त्रता की विजय पताका लेकर तू रण में ठाड़ा ।
झण्डा हर हर महादेव का यवनन के गढ़ पर गाड़ा ॥

चेतक पर चढ़ धनुष हाथ ले चला करन यवनन संहार ।
मनहु यवन दलन हित लीनों विश्वपति कलकी अवतार ॥

जहां चञ्चला चमकी तेरी काई सी थी फट जाती ।
पल पल प्रलय मचाती जाती सफह साफ करती जाती ॥

खण्ड खण्ड नर मुण्ड रुण्ड गिर रक्त नदी में थे बहते ।
अरि दल बढ़ लोहा लेते या बन में छुपते थे रहते ॥

पीसे कुचले रगड़े अरीदल रण के आंगन पाट दिये ।
मूली गाजर के खेतों से यवनों के दल काट दिये ॥

तोड़ तकब्बर दुष्ट अकब्बर का रण में तैं कीना ढेर ।
मानसिंह का मान हरा तैं ओ हल्दी घाटी के शेर ॥

जर्जर जीवन के तुम जीवन क्षत्रिय वीरों के सरताज ।
नस नस में वीरत्व जगाते बिजली सी चमकाते आज ॥

निर्भय त्यागी वीर वैरागी हल्दी घाटी के सरदार ।
मातृभूमि के सच्चे सेवक क्षात्र धर्म के तुम अवतार ॥

खेल खेल अपने प्राणों पै रक्खा जिस माता का मान ।
आज वही दासता पाश में करती है तेरा आह्वान ॥

—o—

१

अकबर घोर अंधार ऊंघाणा हिन्दू अवर।
जागे जगदाधार पोहरै राण प्रताप सी॥

२

माई ऐसो पूत जन जेही राण प्रताप।
अकबर सूतो ओधकै जाण सिराणै सांप॥

३

सह गावडिओ साथ एकण बाडै वाडियो।
राणा न मानी नाथ तांडै साडं प्रताप सी॥

४

हिन्दु हीं हुङ्कार, राणा जे राखत नहीं।
तो अकबर एकार पहो सदा करत प्रताप सी॥

५

हिन्दु पति परताप पत राखी हिन्दवाण री।
सहे विपत्त संताप सत्य सपथ कर आपणी॥

६

भारतवर्ष भुवान भुज, आभा जगत उदार।
पृथ्वी राण प्रताप सी, आतम सम आधार॥

७

अकबर लायो एक हा तुरक हीन्दवातान।
पाण कृपाण प्रताप सी में छा आगलमान॥

८

बाबर सूं भिडियो विहस सांगो धरम सहाय।
पड़ै न राण प्रताप सी अकबर कदमां आय॥

९

गढ़ ऊंचो गिरनार, नीचो आबू ही नहीं।
अकबर अघ अवतार, पुन अवतार प्रतापसी॥

१०

अकबर कुटिल अनीत, और विरल सिर आवरै।
रघुकुल उत्तम रीत, पालै राण प्रतापसी॥

आरती महाराणा प्रताप की ।

जय राणा परताप,

जय जय जय राणा परताप !

पुण्य भूमि भारत का तैने हरा सन्ताप ॥
तुम प्रताप सब जग के, यवनन के परिताप ।
शाप वेष धरि टूटा, यवनन पर तव चाप ॥
जय राणा परताप !

राव राणे जब भागे, रण से छोड़ बिवेक ।
एक तुही ने राखी, भारत मां की टेक ॥
जय राणा परताप !

यवन-तिमिर हरने को प्रगट्यो रवि-कुल-तार ।
तुम भानुकुल भानु, अकबर घोर अँधार ॥
जय राणा परताप !

सर पर धर कर टाँगें, भागे यवन दलेर ।
हल्दि घाटी में गरजा, जब भारत का शेर ॥
जय राणा परताप !

खिसक गई यवनन की पल भर में सब टेव ।
रण-आंगन में गूंजा जब हर हर महादेव ॥
जय राणा परताप !

तव गुणका अहिपति बिन, को कर सकता जाप ।
उपमा भी उपमेय भी, तू अपनो ही आप ॥
जय राणा परताप !

महाराष्ट्र केशरी
छत्रपति
शिवाजी महाराज

भगवान बोले, हे हिन्दमाता ! जिस प्रयोजन के हेतु उस राजस्थान की मरू भूमि में राणा प्रताप को भेजा गया था वह सफल हुआ। हिन्दुपति महाराणा प्रताप अपने मिशन में कृतकृत्य हुए, वीर बांकुरे राजपूतों के अमूल्य रुधिर से सींचा गया यह यवन वृक्ष प्रत्यक्ष रूप में तो खूब बढ़ा, फला फूला। देखने में तो ऐसा प्रतीत होता था कि मानों इसकी जड़ें और अधिक रसातलमें पहुंच गईं, हे भारतमाता ! देखनेको वास्तव में ऐसाही प्रतीत होता था और ऐसा होना चाहिये ही था—प्रकृति का नियम तो अटल है न ! जो वस्तु मिटने लगती है वह अन्तिम क्षण पर बहुत बड़ी प्रतीत हुआ ही करती है। बुझने वाला दिया बुझते समय बड़ी ऊंची लाट बढ़ाता है—मृत्यु शैय्या पर पड़े हुए एक मरणासन्न व्यक्ति को अद्भुत चेतनासी आ ही जाती है। सो, अपने नाशके श्री गणेश में राजपूतों का खून पी कर यदि यह वृक्ष अत्यन्त फैलता दीख पड़ा तो कोई आश्चर्यजनक बात नहीं थी—यह ऐसे होना ही था।

राजपूतों के खून ने यवन वृक्ष की जड़ों को ढीला कर दिया—राजस्थान केशरी के संसार में आगमन का कारण भी यही था, अब आवश्यकता थी इस जड़ से हिले हुए वृक्ष को उखाड़ कर फैंक देनेकी। इसी लिये मुझे तेरी गोद में बहुत शीघ्र छत्रपति, महाराष्ट केशरी, श्री शिवाजी महाराजको भेजना पड़ा।

गो-माता के रुधिर से रक्तवर्णी गोकुल की भूमी बनी।
बृन्दाबन के बनों पे बन के छाई प्रलय यवन यामिनी ॥
देवान् दुःख महान् दीनी असुरन सुर-गृह असुर-गृह बने।
आये छत्रपति शिवा गगन से भगतों के दुःख नाशने ॥
बद्रीनाथ, केदारनाथ, जगन्नाथ, काशीपति विश्वनाथ।
औरंगेन निशाचरेण् दलित्तः रोवें सभी हो अनाथ ॥
गो-ब्राह्मण नभचर की ओर निरखें गोपाल को आससों।
आये छत्रपति शिवा उसी क्षण भारत में आकाश सों ॥

देवल गिरावते फिरावते निशान अली।
ऐसे डूबे रावराणे सभी गये लब्ब की ॥
गौरा गणपति आप औरन को देत ताप।
अपनी जो वारी आई मारी गये दब्ब की ॥
पीराहु पैगम्बरा दिगम्बरा दिखाई देवें।
सिद्ध की सिद्धाई गई रही बात रब्ब की ॥
कासिहु ते कला गई, मथुरा मसीत भई।
शिवा जी न होते तो सुनत होती सब्ब की ॥

* * *

कुम्भ करण असुर औतारी नवरंगजेब।
किन्हों मथुरा महं कत्ल दुहाई फेरी रब्बकी ॥
खोद डारे देवी देव शहर मुहल्ला बीच।
लाखों किये मुसला माला छुटि गई सब्बकी ॥
भूषण भनत भाग्यो काशीपति विश्वनाथ।
और कौन गिनती में भूल्यो गति भब्ब की ॥
चारों वर्ण धर्म छांड़ी कलमा निवाज पढ्यो।
शिवा जी न होते तो सुनत होती सब्बकी ॥

१ २

हित्वा देवम् त्रिभुवनपतिम् अन्धतः विश्वकान्तीम् ।
हत्वा बन्धून् द्विपद पशुनौरङ्ग सौराष्ट्र शत्रुः ॥
सज्जीभूतः सुरसरी स्थितान् देशपुत्रान् विनष्टुम् ।
तस्मिन्काले तव सुत वरै राजपुत्रै कृतः किम् ॥

बता हिन्दमाता, जब औरंगजेब सरीखे नर-पशु से वसुन्धरा भगवती का उद्धार करने के लिये उस दण्डिकारण्य में छत्रपति महाराष्ट्र केशरी का प्रादुर्भाव हुआ—अपने ही बाप की संतान का गला घोटने वाले—माता के सदृश पूज्यनीय अपनी बड़ी बहन के हाथों में हथकड़ी तथा पाओं में बेड़ियां डाल देने वाले, चुन-चुन कर अपने बाप के वंश का सर्वनाश करने वाले उस मनुष्य-रूप में विचरने वाले नर-राक्षस के बोझ से पृथ्वी माता के भार को हलका करने को जब छत्रपति शिवाजी महाराज धर्म क्षेत्र में बढ़े तो उस समय जयसिंह तथा यशवन्तसिंह इत्यादि राजपूतों ने क्या किया ?

भारत माता बोली—भगवन् । अम्बराधिपति महाराणा जयसिंह तो पक्के धर्मात्मा थे, हिन्दुकुल-गौरव थे, सनातन-धर्मावतंस थे, फिर उन्होंने महाराष्ट्र केशरी के साथ नर-पशु यवन की ओर से क्यों युद्ध किया ?

श्रीभगवान् बोले, भारत माता उन्होंने युद्ध किया, केवल इसलिये कि वह विशेष आवेश में आकर एक बार औरंगजेब को कह चुके थे कि मैं तेरी सहायता करूंगा।......... बस ! इतनी सी बात पर वह दल बल सजा कर छत्रपति से लड़ने के लिये गये ।

"महाराणा प्रताप के वंशज, मराठों का,भारतीय स्वाधीनता के दीवानों का रुधिर बहाने के लिये आरहे हैं" यह सुनते ही

१ शाहजहान २ जहांआरा

शिवाजी का हृदय विदीर्ण हो उठा। क्या कहती होगी प्रताप की आत्मा, जिस वृक्ष की जड़ों को काटते काटते स्वयं प्रताप अमरत्व का प्याला पी गये उसी वृक्ष की जड़ों को सुदृढ़ करने के लिये आरहे हैं।......जयसिंह!

किन्तु, भारत माता!

छत्रपति समझदार थे, उनके अन्दर योगिराज कृष्ण की आत्मा काम करती थी। शिवा जी की तलवार यवनों के लिये है, जयसिंह के लिये नहीं। "शान" में आकर उस समय शिवाजी ने जयसिंह का गला नहीं काटा, परन्तु वे भारत के इस बूढ़े भीष्म को धर्म का यथार्थ स्वरूप दिखाने के लिये प्रस्तुत हुये। जयसिंह अपना अपार दल लिये रणक्षेत्र में पड़ा था। शिवाजी अकेले ही साधारण से भेष में जयसिंह के पास चले।

जाते ही शिवाजी ने उनके चरणों में प्रणाम किया, जयसिंह के हृदय में शिवा जी के लिये महान श्रद्धा थी। शिवाजी की उच्चतम भावना से वे अनभिज्ञ नहीं थे—परन्तु भारत माता युधिष्ठर तथा कृष्ण में अपार श्रद्धा तथा प्रेम होने पर भी भीष्म उन्हीं से रण में लड़ा था। जयसिंह ने शिवाजी को आशीर्वाद दिया—शिवाजी अपनी वेदना को अधिक रोक न सके और कुशल क्षेम पूछे जाने पर शिवा जी बोले, महाराज!

"वह हिन्दु-राजतिलक जो क्षत्रियकुलावतंस सनातन-धर्म-रक्षक हैं उनको इस समय म्लेच्छों का दास देख कर मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है।"

जयसिंह का मुखमंडल लाल हो गया। शिवाजी ने उसे देख कर भी अनदेखा कर दिया और गम्भीर स्वर से कहने लगे—

"जिन्होंने उदयपुराधीश राणा प्रतापसिंह के वंश में जन्म लिया हो, जिनकी सुख्याति से राजस्थान परिपूर्ण हो रहा हो, अम्बर राज्य छत्र जिनके सिर पर विराजमान हो रहा हो, राजस्थान की वीरप्रस्विनी भूमि पर जिनका पराक्रम देख औरंगजेब भी भयभीत हुआ हो, ऐसे हिन्दू धर्म के स्तम्भ को, जिसके लिये ग्राम ग्राम मन्दिर मन्दिर में जय मनाया जाता हो, मुसलमानों की ओर से हिन्दुओंसे लड़ना क्या अभिप्राय रखता है ? क्षत्रिय-कुलावतंस ! क्या आपका यह उद्योग हिन्दुओं की स्वतंत्रता के लिये है ? यह समस्त विजय पताका क्या हिन्दुओं के स्वराज्यको उड़ी हैं। महाराज आप विवेचना करें ! मैं कुछ नहीं जानता।"

जयसिंह सिर नीचा किये रह गये। 'शिवाजी बोले' आप राजपूत- हैं, महाराष्ट्रगण भी राजपूत-पुत्र हैं। पिता पुत्र का युद्ध सम्भव नहीं। स्वयं भवानी ने इस युद्ध का निषेध किया है। 'राजपूतों का गौरव एक मात्र आजतक भारत वर्ष का गौरव रहा है। राजपूत-यशोगीत हमारे यहां को स्त्रियां अभी तक गाती हैं। राजपूतों ही के आदर्श पर हम लोग अपने लड़कों को शिक्षा देते हैं। क्षत्रियकुल तिलक ! राजपूतों के शोणित से हमारे खड्ग रंजित होने के प्रथम ही महाराष्ट्रों का नाम लुप्त हो जायगा। राज्य को छोड़ छाड़ कर हम लोग फिर वही हल चलाना सीखेंगे, महाराज ! परन्तु हमसे आपसे युद्ध न होगा।"

परन्तु हिन्द माता तू अनुभव करती है इस का इस राजपूत पर कुछ भी प्रभाव हुआ ? जयसिंह ने आंख उठा कर धीरे धीरे कहा--"छत्रपति ! तुम्हारी कथन प्रणाली बड़ी रोचक है। किन्तु मैं दिल्लीश्वर के आधीन हूँ। महाराष्ट्रों से युद्ध जरूर करूंगा। ऐसा प्रण करके ही मैं चला हूं।

रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाये पर वचन न जाई ॥

भगवान बोले, देखा हिन्द माता ! इन राजपूतों का धर्म। वीर शिरोमणि चौधरी हेमराज को ओर से बैरमखो के साथ लड़ना सूर्यवंशियों के लिये पाप है—कष्टों से घिरे हुए विजय नगर के हिन्दुसाम्राज्य की यवनों से रक्षा करनेके लिये प्रयत्न करना पाप है। किन्तु शिवाजी महाराज के साथ औरंगजेबके आधीन हो कर युद्ध करना यह राजपूतों का धर्म है। —सुना !

"मैं महाराष्ट्रों से युद्ध अवश्य करूंगा" अम्बराधीश के ऐसे वचन सुनकर शिवा जी बोले— "फिर इस प्रकार तो शत शत स्वधर्मियों का नाश होगा। हिन्दू हिन्दुओं के सर काटेंगे, ब्राह्मण ब्राह्मणों के हृदय में तलवार झोकेंगे और क्षत्रिय क्षत्रियों के शरीर से रक्तपात करके म्लेच्छों की विजय कीर्ति विस्तारित करने का पुण्य कर्म करेंगे"

"आप हिन्दुओं में श्रेष्ठ हैं। क्या हिन्दु गौरव साधन में आपको सन्देह होना चाहिये ! हिन्दु धर्म की जय प्राप्ति के लिए आपके हृदय में भले ही इच्छा होगी—शिवाजी की आकांक्षा भी कोई दूसरी नहीं। मुसलमानों के शासन का ध्वंस, स्थान स्थान पर देवालय स्थापन, हिन्दु शास्त्रों की आलोचना, ब्राह्मणों को आश्रय दान, और गौवत्सादि की रक्षा करना ही हिन्दु जाति का गौरव साधन हैं और यही भारतवर्ष की स्वाधीनता का मूल मंत्र है। यदि इन विषयों में आप शिवाजी को सहायता देन से बिमुख हैं, तो अपने ही हाथोंसे इन कार्य्यों का सम्पादन कीजिये। आप इस देश का राजत्व स्वीकार कीजिये, यवनों को परास्त कर डालिए और हिन्दु-स्वाधीनता पुनः स्थापित कीजिये आप अङ्गीकार करें तो अभी दुर्गद्वार खोल दिये जावें। प्रजा कर देगी और शिवाजीकी अपेक्षा आपको वह सहस्र गुणा बलवान दूरदर्शी और उपयुक्त समझेगी और शिवाजी भी सन्तुष्ट चित्त से आप का एक सैनक बनकर मुसलमानों के ध्वंस साधन में दत्त चित्त होगा,"

"जिस दिल्लीश्वर ने हिन्दु-गण का नाम काफ़र रख छोड़ा है और जजिया जारी किया है क्या उस के यह कार्य भद्रोचित हैं? देश देश में जो वह हिन्दुमन्दिरों और देवालयों का अपमान करता है क्या वह भद्रोचित है?

काशी जैसी पवित्र नगरी में विश्वनाथ के मन्दिर को भंग करके उसके पलस्तर से मसजिद बनवाना क्या भद्रोचित्त है?"

"महाराज मैं बाल्यकाल ही से आप के गौरव-गीत गाकर बड़ा आनन्द पाता था। आज उसी प्रकार आप को देखता हूँ। वह गीत मिथ्या न था। जगत में सत्य और धर्मका यदि कोई आश्रय है तो वह राजपूतका शरीर है। परन्तु क्या ऐसा राजपूत कभी यवनों की अधीनता स्वीकार कर सकता है?"

क्या महाराज जय सिंह वास्तव में औरंगजेब के सेनापति हैं? जयसिंह बोले, 'शिवाजी जब मैंने दिल्लीश्वर का सेना पति होना स्वीकार किया था तभी कार्य साधन के प्रति सत्य दान किया था। इस समय हमारा गौरव स्वाधीनता नहीं है किन्तु सत्य का पालन ही गौरव है।

राजपूतों का बचन ही सन्धि पत्र है। अनेक संधि पत्रों का लंघन किया जाता है परन्तु राजपूतों का बचन कभी उलंघनीय नहीं होता। कपट नीति से अथवा छल से सत्य को त्याग कर विजय पाना गर्हित कार्य है।

शिवाजी—क्या सबके साथ सभी अवसरों पर सत्य पालन करना चाहिए? जो हमारे देश का शत्रु है, और जो हमारे धर्म के विरुद्ध आचरण करता है उसके साथ भला सत्य सम्बन्ध कैसा! क्या हिन्दु धर्म की उन्नति की चेष्टा करना गर्हित कार्य है? हिन्दुओं को भाई समझ कर उनकी सहायता करना क्या गर्हित कार्य्य है?

जयसिंह—"युद्ध में प्राण त्याग करना क्षत्रियों का सौभाग्य है परन्तु कपटाचरण क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध है।',

इतना सुनते ही शिवाजी का मुख मंडल लाल होगया। वे कहने लगे, 'राजपूत! महाराष्ट्रीय वीर भी मृत्यु से नहीं डरते। यदि इस अकिञ्चन जीवन का दान करने से हमारा उद्देश्य सिद्ध हो जाय, और हिन्दु-स्वाधीनता- हिन्दु-गौरव पुनः स्थापित हो जाय, तो भवानी की सौगन्ध, इसी समय अपने वक्षःस्थल को विदीर्ण कर डालूं। अथवा हे राजपूत! तुम्हीं अपने बर्छे से मेरे हृदय को छेद डालो। मैं हर्ष पूर्वक शरीर त्याग कर दूंगा। किन्तु जिस हिन्दु गौरव के विषय का मैं बाल्य काल में स्वप्न देखा करता था, जिसके कारण मैंने सैकड़ों युद्ध किये, बीस वर्ष पर्य्यन्त पर्वत में, उपत्यका में, शिविर में, शत्रुओंके बीच में, सायंप्रातः, गंभीर निशामें चिन्ता करता रहा, उस गौरव और स्वाधीनता को पल में त्याग देने से क्या उसकी रक्षा हो जायगी।'

जयसिंह—"शिवाजी! आप का यह बड़ा उद्देश्य मुझसे छिपा हुआ नहीं है। मैंने शत्रुओं के सम्मुख भी आप के उद्देशों की प्रशंसा की है —तुम्हारा स्वप्न निरा स्वप्न नहीं है। चारों ओर आंखें उठाकर जबमैं देखता हूँ तब यह ही निश्चय होता है कि यवन राज्य अब अधिक काल तक स्थायी नहीं रह सकता। मुसलमानों का राज्य कलंकसे सर्वथा परिपूर्ण होगया है। बालू की दीवार की भांति अब वह और अधिक नहीं ठहर सकता। महाराष्ट्रों का जीवन अंकुरित होरहा है। इस से बोध होता है कि भारतवर्ष में इसी के तेज का विकास होगा। महाराष्ट्र-गौरव और हिन्दु प्रधानता अनिवार्य्य हैं। हिन्दुओं का तेज अब अधिक दिन तक निवारण नहीं किया जा सकता। देश देशांतरों में हिन्दु गौरव के साथ साथ छत्र पति शिवाजी के गौरव और काम की प्रति ध्वनि सुनाई देगी"।

शिवाजी "परन्तु आप इस गिर रहे मकान के एकमात्र स्तम्भ रूप क्यों बने हैं ?"

जयसिंह—"सत्यपालन क्षत्रियका धर्म है। मैं औरंगजेब की सहायता करनेका वचन दे चुका हूँ। जब तक जीवन है, दिल्ली पति का यह वृद्ध सेना-पति विरुद्धाचरण नहीं करेगा"

श्री भगवान् बोले ! हे भारतमाता तू ने मुझे पूछा था मेरे इतने बड़े बड़े वीर योधा, छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे हुए, फिर भी मेरी ऐसी अवस्था क्यों हुई ! जयसिंह के रूप में उसका सप्रमाण उत्तर मैंने तुम्हें समझाया है। वह शिवाजी जिसके बारे में तत्कालीन राज कवि भूषण ने शिवाजी को सम्बोधन करते हुए कहा था……!

छत्रपति शिवाजी

वेद राख्यो विदित पुराण राख्यो सार युत
राम नाम राख्यो अति रसना सुघर में।
हिंदुन की चोटी, रोटी राखी है सिपाहियन की,
कन्धे में जनेऊ राख्यो माला राख्यो गल में।
मीढ़ी राखे मुगल मरोड़ी राखे पादशाह।
बैरी पीसी राख्यो वरदान राख्यो कर में ॥
राजन की हद्द राखी तेग बल शिवराज।
देव राख्यो देवल स्वधर्म राख्यो घर में ॥

ऐसे शिवाजी महाराज का विरोध भी इन तेरे राजपूतों ने किया और फिर भी तू कहती है "भगवन् राजपूती वीरता के सामने जापान की गौरव गाथा क्यों गा रहे हो" जापान की वीरता थी शत्रु का गला घोटने के लिये और राजपूतों की वीरता थी अपने ही भाई का सर फोड़ने के लिये।

दशम पादशाह भारतपति

श्री कलगीधर महाराज

गुरु गोविन्दसिंह जी

भाई मैं तो अपना सब कुछ,
कर आया उस पर बलिदान ।
बचा न एक तनय भी मेरा,
फल के दाता हैं भगवान ॥

श्री भगवान बोले, भारत माता! जिस वृक्ष की जड़ों पे राजस्थान-केशरी ने पानी फैंका था और महाराष्ट्र-केशरी छत्रपति शिवा जी महाराज ने जिसे अपनी भुजाओं में पकड़, ज़ोर से हुचके मार जड़ से हिला डाला था, अब उसी वृक्षको पतित पावनी भगवती भागीरथी के वक्षःस्थल से उठाकर ख़ैबर से परे फैंकना था। यह कार्य मानव शक्ति के लिये बहुत ही कठिन था और इस यवनिका पतन का अन्तिम दृश्य दिखाने के लिये मुझे भी विशेष सावधानी से कार्य करना पड़ा। जिस मार्ग से यह मध्यएशिया का पौदा भारत में आया था अब उसका वापसी पारसल भी वहीं से करना था। इस लिये सर्वप्रथम उस रास्ते को मैं ने भयहीन करदेना उचित समझा। लाईन क्लीयर होजाय और फिर बेखटके यह अर्बी वृक्ष अपनी जन्म भूमि में चला जाय। इस कार्य के लिये

मैंने क्रमशः सप्त वीरों को भेजा उत्तर-पश्चिम की ओर पंजाब में। यह पंजाब तेरी ड्योढी है और यह ख़ैबर इस ड्योढ़ी का दरबान है। इसी पंजाब की ड्योढ़ी से यह वृत्त यहां आया था और इसी से इस ने वापस जाना था। इस पंजाबने ही तो भारत को गुलाम बनाया और यह पंजाब ही भारत की पराधीनता की बेड़ियों को काट देने का गौरव प्राप्त करेगा। पंजाब के हाथों में भारत माता की जान है।

पंजाब एव हतो हन्ति,
पंजाब रक्षति रक्षितः।
तस्मात् पंजाब मा हन्तव्यम्,
मा नो पंजाब हतोवधीत् ॥

"माराहुआ पंजाब समस्त राष्ट्रको मार देगा और रक्षा किया गया पंजाब समस्त भारतकी रक्षा करेगा इस लिये पंजाबको मरने नहीं देना चाहिये, ऐसा न हो कि मरा हुआ पंजाब सारे राष्ट्रको मारदे"

हे हिन्द माता! इस तत्व को तेरे पुत्रोंने बहुत कम समझा। यह जानते हुए भी कि पंजाब से ही सिकन्दर आया, पञ्जाब से ही हुण, मङ्गोल, सेथियन्ज़, शाका इत्यादि आये। पञ्जाब से ही कासम, महमूद, गौरी, बाबर, तैमूर, चङ्गेज़, नादिर, अब्दाली आदि सब इसी मार्ग से आये, क्या तेरे पुत्रों ने पञ्जाब को मज़बूत करने के लिये कुछ किया? कुछ नहीं! और यही कारण था कि निरन्तर एक हज़ार वर्षों तक यह पञ्जाब लुटता रहा—

अस्तु! इसी लिये पंजाब को मज़बूत करने के लिये मैंने—गुरु अर्जुनदेव, गुरु हरकिशन, गुरु अमरदास, गुरु रामदास तथा गुरु तेग़बहादुर जी को भेजा। लाईन क्लीयर हो गया। दिल्ली के लाल क़िले पै खड़े होकर गुरु तेग़बहादुर ने लाल झण्डी दिखाई और उस समय—

दृष्ट्वा लोकं बहु बिध विपद, ग्रस्तमस्तं प्रयान्तं ।
घोराचार प्रबल विपदा, मास्पदं पङ्कलीनम् ॥
दुःखध्वान्तं विघटियतुम्, न्मीलितुं व्योम मध्ये ।
जातः गोपाल सुर-पति वरो स गुरुतेग पुत्रः ॥

संसार को अत्यन्त दुःखी देख कर, चारों ओर यवनोंके उत्पातों से पीड़ित हुए भारत पुत्रों की दुर्दशा को देख कर, नरपशु औरंगज़ेब के अमानुषिक अत्याचारों से संतप्त भारतीयों की आहो पुकार को सुन कर और रक्षा के लिये उन्हें गगन की ओर बड़ी ही लालसा भरे नेत्रों से दीनता पूर्वक देखते हुओं की रक्षा के लिये दशम पादशाह-कलगीधर अवतार गुरु गोविन्दसिंहजी महाराजको भेजा।

त्रातुं लोकानिव परिणतः कायवानस्त्र वेदः ।
क्षात्रोधर्मः घृतमिव तनुं, ब्रह्म कोपस्यगुप्त्यैः ॥
सामर्थ्यानामिव समुदयः संचयोवा गुणानाँ ।
प्रादूर्भूयस्थित इवजगत्पुण्यनिर्माण राशीः ॥

तीनों लोकों के तारणे के लिये मानों क्षात्र धर्म साक्षात गुरु गोविन्द सिंह जी के रूप में संसार में प्रकट हुए। वेदों का ज्ञान, यवनान्धकार में जो विलीन हुआ जा रहा था, उस के उद्धार के लिये —गौ ब्रह्मण के कल्याण के लिये सर्वगुण सम्पन्न, पूर्ण पुरुष शाक्त रूप नृसिंह गुरुदेव का भारत माता की वीर प्रस्विनी गोदी में प्रादुर्भाव हुआ।

विद्युत्वन्तं दिनकररिव तेजवन्तं ज्वलन्तं ।
अश्वारूढं कलियुग प्रभुम् रौद्ररूपं सचापम् ॥
इन्द्रं, वृष्णं, भग घृष्णुणाम् सेन्द्रचापोग्र धन्वाम् ।
गोविन्दम् तम् जगतजननी प्रेषिता त्वद्धिताय ॥

विद्युत का सा कमल मुख पे तेज जिस के सुहाता, ।
घूमा योधा यवन दल में क्रान्ति के गीत गाता ।।
अश्वारोही नरसिंह चला जो असुर दल सों लड़ने ।
त्रिपुरारी ले, दल बल चले विश्व संहार करने ।।

हाथों में ले खड्ग, रण में जो चढ़ा तेग-पुत्र ।
सन्मुख ठाडे रण माहींभला था, असुर-वीर कुत्र ।।
कल्गीधारी, असुरदल पर जो प्रलय बन के छाया ।
रजपूतों ने जगत जननी उस समय था किया क्या ?

जब उस वृक्ष को उखाड़ने के लिये वह पंजाब का शेर रण में दहाड़ा —और उसकी दहाड़ से यवन-शृगालों के दिल तक टूट गए—उस समय ब्रह्मा विश्णु महेश त्रीमूर्ति, गुरू तेगबहादुर, गुरू गोविन्द तथा बन्दा बैरागी आए और जिन्हों ने न केवल उस वृक्ष को ही खैबरके परे फैंका अपितु उस दरवाज़े को भी बन्द करदिया और उस पंजाब की ड्योढी में चालीस लाख वीर शेरों को खड़ा कर दिया ——...उस समय इन तेरे राजपूतों ने क्या किया ?

श्री भगवान बोले, हे भारत माता ! गुरु-देव का उपकार तो तुझ पर और तेरे पुत्रों पर इतना है कि यदि संसारमें कृतज्ञता भी कुछ चीज़ होती है और उस कृतज्ञता का कुछ अंश तुझ में और इन तेरे पुत्रों में होता, तो तेरे पुत्र और वही राजपुत्र यवनोंके साथ मिल कर गुरुदेव के रास्ते में बाधा न डालते ।

गुरुदेव के अन्दर मैं ने अपार शक्ति दी थी कि वे इन सब प्रकार की आपत्तियों को ठोकर मार कर परे हटा देते और उन्हों ने ऐसा किया भी । गुरुदेव का तो कुछ न बिगड़ा वह तो अमर होगये और जिस वीर ने भी उन का लड़ पकड़ कर अमृत छका

वह भी अमर होगया।—वे छोटे छोटे बच्चे जोरावर सिंह और फ़तह सिंह भी अमर होगये। परन्तु यह संसार चन्द सरीखे पहाड़ी राजपूत राजे मर गये और सदा के लिये अपने वंश को कलंकित करके चले गये।

हे हिन्द माता! मैं ने तेरा दिल दुखाने के लिये यह वृत्तान्त तुझे नहीं सुनाया। मैं ने तो तेरे उन शब्दों को तुझे भली भांति सुनाया है कि देख जिन राजपूतों के तू गुण गाती है उन्हों ने क्या किया। जब सारा संसार सो रहा था, राजपूत जागते थे। जब सारा संसार जाग पड़ा यह राजपूत लम्बी तान कर सो गये।

श्री भगवान बोले, भारत माता! राजपूतों के अधार्मिक कृत्यों के निरन्तर बाधित होने पर भी यह यावन वृक्ष तो उखड़ गया परन्तु मुझे इस के लिये अत्यन्त ही परीश्रम करना पड़ा।

भारत माता बोली, भगवन! आप तो सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ सर्वव्यापक हैं फिर आप को चिन्ता और निराशा क्यों। जो भगवान एक क्षण के अन्दर बिहार की भूमि को जल-निमग्न कर सकता है, जो भगवान कोयटाकी बड़ी बड़ी अट्टालिकाओं को एक आंख की झपक में ही भूतल में राख के ढेर बना सकता है, जो ईश्वर इन बड़े बड़े ज्वाला-मुखियोंके जबाड़ोंको दो टूककर सकता है, जो परमात्मा हिमालय जैसे गुरुतम भारको अपने वक्षःस्थल पे उठाये हुए हैं, जो परमप्रभु सूर्यरूपी प्रज्वलित अग्नि कुण्ड को अपनी आंखों में छुपाये हुए हैं। जो जगदीश्वर अपनी सत्ता से इस समस्त ब्रह्माण्ड को धारण किये हुए है, जगत की सृष्टि, लय प्रलय, जिस के बांए हाथ का एक खेल मात्र है—क्या वह सर्व शक्तिमान सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, दयालु परमात्मा उस यावनी-वृक्ष को उखाड़ कर नहीं फैंक सकता था?

श्री भगवान बोले, भारत माता ! तू ठीक कहती है। पतित पावनी भगवती भागीरथी के तट पर पाश्विक बल के आश्रित उस यावनी-तरु को उखाड़ फैंकना तो विश्व-पति के लिये एक साधारण सी बात थी———परन्तु ....तेरे पुत्रों का पाप—घोर पाप समदर्शी, सर्वज्ञ, दयालु, न्यायकारी जगत पिता परमात्मा को उस यावनी-तरु के बारे में अपने विशेषाधिकारों (Emergency powers) के प्रयोग करने में बड़ी बाधा डाल रहे थे।

हे भारत माता ! जातियें ऐसे नहीं गिरती जैसे वृक्ष से पत्ता गिर जाता है अथवा कोठे से ईंट गिर पड़ती है,किन्तु कौमें कुछ पाप करती हैं-और वह कौमों द्वारा किया हुआ पाप ही क़ौमों को गिराने के लिये काफ़ी होता है।

यस्याम् यस्याम् अवस्थायाम् यत् यत पापम् करोति यः
तस्याम् तस्याम् अवस्थायाम् फलम् तस्याप्नोति सः ॥

जिस जिस अवस्था में जो भी कोई कुछ पाप करता है, उस पाप का फल उसे अवश्य ही भोगना पड़ता है। और हे भारत माता !

एकः पापानि कुरुते फलं भुंक्ते महाजनाः

कई कई अवस्थाओं में तो एक ही व्यक्ति के किये हुये पापों का फल सारी को सारी क़ौम को भोगना पड़ता है।

उद्वेजनीयो भूतानां नृशंसः पाप कर्म कृत्
त्र्याणामपि लोकानामीश्वरोऽपि न तिष्ठति ॥

हे भारत माता ! तीनों लोकों का स्वामी भी क्यं न हो—वह अपने किये हुए पापों के फल भोगे बिना कभी बच नहीं सकता। और कोई भी जाति चाहे वह कितनी भी उत्कर्षकी सीमा तक चढ़ी हुईहो अपने पापों के द्वारा आकाश से जा पाताल में समाती हैं।

भारत माता बोली, भगवन् ! इस धर्म-क्षेत्र भारत-क्षेत्र में जहां धर्म की रक्षा के लिये भारत-वीरों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। जिस पुण्य भूमि की कोटिशः वीरांगणाओं ने अपने धर्म की रक्षा के लिये कुसुमित शरीर उद्यान को अग्नि देवी में स्वाहा कर दिया। जिस वीर भूमि के लाखों नर सिंहों ने धर्म की बलि-वेदी पर हँसते हँसते अपने शीश तक बलिदान कर दिये और हे भगवन् जिस धर्म भूमि में कपिल, कनाद, गौतम, दधीची, राम कृष्ण, कर्ण से धर्मात्मा पैदा हुए। उसी भूमि में आप कहते हैं बहुत से पाप होते हैं। भगवन् समझ में नहीं आता।...

धरम के हेतु प्रणवीर ज्येष्ठ पांडु पुत्र,
धर्मावतार धर्मराज पद पायो है।
धरम के हेत बिके डूम घर हरिचन्द्र,
आपु बिके अरु दारा सुत भी बिकायो है।
धरम के हेतु छोड़ा राज पाट राम जी ने,
राकशों के बीच बन में ही डेरा लायो है।
धरम के हेत मेरे कोटि कोटि राजपूत,
प्राणन को दे के अपि प्रण को निभायो है।
धरम के हेतु गुरु देव ने कटायो शीश
असुर संहारा जिन केशरी-प्रताप सों।
धरम के हेतु मारा गया वह बैरागी वीर
जाही ने जलाया यवनों को निज शापसों।
धरम के हेतु मेरे छोटे से हकीकत ने
कुसुम-सुदेह जारो यवनानुताप मों।
सब कुछ जानते भी देव यही आखते हैं
भारत का नाश भया भारत के पापसों।

और यदि इन बातों को भगवन् अतीतकाल की कल्पना ही कहते हैं तो इस युग में भी हे भगवन्! मेरे पुत्र तो साक्षात धर्मावतार हैं। संसार के अन्य देशों में रहने वाले तो निःसन्देह हाड, मांस, चाम, रुधिर इत्यादि के ही बने होंगे परन्त मेरे पुत्र तो शत प्रतिशत धर्म की ही बनावट हैं। मेरे पुत्रों को तो सदैव धर्म ही की चिंता बनी रहती है। इनके सोने में धर्म, इनके जागने में धर्म चलने, फिरने, खाने, पीने, उठने, बैठने सब में धर्म ही धर्म नज़र आता है।

दूर से आरहे किसी व्यक्ति को देख लिया धर्म भ्रष्ट हो गया--सड़क में चलते हुये अकस्मात कोई अछूत नामधारी जन्तु साथ छूगया बस धर्म सिंधु की बोतल का लेबल टूट पड़ा--एक सौ गज़ पर जारहे किसी अभागे चतुर्थ वर्ण के पुरुष पर धर्मावतार की दृष्टि पड़ गई बस धर्मदेव कूच कर गये। किसी अपने ही भाई के हाथ का पानी तक पी लिया धर्म बिगड़ गया--किसीके हाथ की पकी रोटी खा ली--बस धर्म देव नष्ट हो गये।

भगवन्! मेरे पुत्रों में तो धर्म के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं--धर्म की इतनी अधिकता है, वह तो उछल उछल कर बाहर निकल रहा है। कितनी वीरता है मेरे पुत्रों में कि उसे बड़ी शक्ति से रोक रक्खे हैं। और भगवन्! क्या कभी मेरे धर्म पुत्रों के गाते हुए मुखार बिन्द से वह धर्म ध्वनि निकलती नहीं सुनी।

"सिर जावे तो जावे, मेरा प्यारा धर्म न जावे।"

मेरे देश में धर्म कदापि नहीं होता है धर्म क्षेत्र--भारत क्षेत्र में पाप!

शिवो३म्, शिवो३म्, भगवन्! जिस दिन पुण्यक्षेत्र में पाप होने लगेंगे धरती माता का वक्ष: स्थल फट जायगा। और हे भगवन् वे धर्मावतार अपने धर्म के लिये तेरी रची हुई सृष्टि का नाश तक करने से नहीं हिचकते--बात की बातमें तेरे ही द्वारा पैदा किये गये वे धर्म ध्वजाधारी अपने भाईओं का गला तक काटने से नहीं डरते। भगवन! मेरे पुत्र पाप कदापि नहीं करते हैं।

धर्म के हेतु मेरे तपी, त्यागी धर्म-वीर।
भूके पेट रहके भी तो जावें हरिद्वार को।
धर्म बिकैयों से लूटा के घर बार देव,
बार बार धक्के खा न मानते जो हार को।
पकड़ के रूढ़ियों को छोड़ते न छोड़ के भी,
बेवकूफियों से जो हंसावें संसार को।
ऐसे मेरे धीर वीर धर्मावलम्बी सुत,
प्रभो! काहे पापी कहें धर्मावतार को।

भगवन! मेरे पुत्रों को तो धर्मकी इतनी चिंता है कि वे देखो कैसे हरिद्वार, बद्रीकाश्रम, अमरनाथ, द्वारिकानाथ इत्यादि में तेरी खोज में पागलों के सामान फिर रहे हैं। खाते नहीं, पीते नहीं, बच्चों को पढ़ाते नहीं, क्यु! क्यों कि जो कुछ भी वे कमाते हैं उसे वे धर्म रक्षा में लगाने की प्रतीक्षा में हैं, कब गृहण लगे और धर्म का रेट सस्ता हो, कब कुम्भ लगे और टके सेर धर्म बिके। भगवन लाखों करोड़ों मेरे पुत्र नित्य ऋषिकेश और हरिद्वार में पण्डों, तथा गुण्डों द्वारा अपना कितना अपमान करवाते हैं! परन्तु केवल धर्म की इच्छा से सहन कर लेते हैं।

हे भगवन् इस देशमें पाप नहीं होता—कदापि नहीं होता यहां पर साक्षात बद्रीनाथ रहते हैं—यहां पर केदारनाथ, यहां पर

त्रीयुगीनाथ का बासहै— अमरनाथ भगवान भी अपना दल बल साजे इसी देशकी फ्रान्टियर पर विराजते हैं-इस देश को तो चारों ओरसे इन तेरे बाईसरायों ने घेर रक्खा है। उत्तरमें बद्री केदार-उत्तर पच्छिम में अमरनाथ--पच्छिम दक्षिण में द्वारकानाथ सोमनाथ, दक्षिणमें रामेश्वरनाथ, पूर्व में जगन्नाथ--और मध्य में साक्षात विश्वनाथ और वैद्यनाथ हैं'-भगवन ! इन तेरे इतने वाईसरायोंके होते होते पाप हो जाय !

भगवन् ! सात हजार मील से मुझपर शासन कर रही जो यह आंगल जाति है उसका एक वायसराय, पेश नहीं जाने देता आपके यह इतने शक्ति शाली राज--दूत सोमनाथ,विश्वनाथ और जगन्नाथ सरीखे क्या यह पाप को रोक नहीं सकते ?

जहाँ बद्रीनाथ सदल बल सीमा पर डटें ।
जसु के ध्याने सों जगतीतलके पातक कटें ॥
जहां त्रैयुगीनाथ त्रिभुवनकी बाधा को हरते ।
वहां मेरे पुत्र किस बिधि भला पाप करते ॥

अनाथानाम् नाथो प्रभु जगत् नाथो जह रहें ।
धरम रक्षा हेत नित्य करमें जो करवर गहें ॥
जगन्नाथो स्वामी अर्णव-तटे जहं विचरते ।
वहाँ मेरे पुत्र किस विधि भला पाप करते ॥

जहां रामेश्वरनाथ, श्री अमरनाथ, द्वारिकानाथ ।
खड़े देवाधिदेव, धरम प्रतिपाली स्वबल साथ ॥
विचरते तेरे लाट, भरत खण्ड में जो सर्वतः ।
उन्हींके आगे क्युं इस विधिके होते अघ भला ॥

खण्ड तीसरा

[३]

धर्म के नाम पर

अधर्म

पाप

छल — तुमने ही तो रल मिलकर,

कपट — भारतका सत्यानास किया।

झूठ — स्वर्ग तुल्य इस देवलोक,

पाखण्ड — भारतको भूता-वास किया॥

लूट

हत्या

दुराचार

देश के कलङ्क

अनाचार

व्यभिचार

मुफ्तखोरी

भ्रूणहत्या

बेवकूफी

धूर्तता

ठगी

साधू, सन्त,

महन्त, मठाधीश,

मन्दिर-पुजारी,

धर्म-ध्वजा-धारी,

तीर्थ-पांडे

श्री भगवान् बोले, बता भारतमाता—

(१) अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए समस्त जाति को पराधीन बना देना। अपने सगे सम्बन्धियों को धोका देकर आततताईयों के साथ मिल जाना--अपने ही हाथों से अपने आपको, अपने देश बन्धुओं को, अपनी जननी जन्म-भूमि को तबाह--व बरबाद करना, क्या यह पाप नहीं है !

(२) भारत मां के स्वाधीनता समर में भारत के शत्रुओं के साथ युद्ध कर रहे, भारतमाता के एक सच्चे सपूत की सहायता करना तो अपने कुल--गौरव की हानि समझना और भारत द्रोही गोधाती म्लेच्छों का उसी लड़ाई में साथ देकर भारत माँ के पराधीनता–पाशों को भलि भांति दृढ़ कराना और तिसपर भी, धर्मावतसं--धर्म--रक्षक--हिन्दू--कुल भूषण, सत्यावतार की डींगें मारना क्या यह पाप नहीं है ?

(३) जिस नर--पिशाच ने अपने सगे बाप के हाथों में हथकड़ो और पाओं में बेड़ियां पहना दीं--जिस मानव-पशु को माता के तुल्य बड़ो बहिन पर दया न आई, पिता के सदृश्य बड़े भाईयों को जिस दुष्ट ने खुले बाज़ार में कत्ल कर दिया। ऐसे दुष्ट के लिये, सनातन

धर्मावतार का, छत्रपति महाराष्ट्र केशरी सरीखे वीर से लड़ने जाना —क्या यह पाप नहीं है ?

(४) भाईयों से जिसने धोका किया। पिता से जिसने छल किया। बहिनों से जिसने कपट किया। आर्य देवियों पर जिसने बलात्कार किया। गौ, ब्राह्मण का सार्वजनिक संहार किया। ऐसे नराधम के लिए दिल्ली के एक हिन्दु-मलिक काफूर का अपने ही हाथों से देवालयों को गिराना, -कमलादेवी तथा देवलदेवी प्रभृति आर्य ललनाओं को कामान्ध अलादीन के लिये बल पूर्वक उठा लाना क्या यह पाप नहीं है ?

(५) जिसने हिंदुओं पर केवल हिंदु होने के नाते से ही जुर्माने किये। गंगा जी तथा काशी इत्यादि तीर्थस्थानों पर जिसने टैक्स लगाया--विश्वनाथ सरीखे देवस्थनों को गिरा कर उसी के स्थान पर नराधम ने मसजिद खड़ी की। लोकोक्ति के अनुसार सवा मन यज्ञोपवीत और चोटियां उतरवा कर ही भोजन करना जिस का मज़हब कहा गया है। ऐसे दुष्ट की सब बातों को जानते हुये भी भारत सपूतों का, हिंदु--कुल पति राजस्थान केशरी महाराणा के वंशजों का उसके प्रत्येक दुष्कृत्य में उसको सहयोग देना; तिस पर भी अपने आप को धर्मावतार कहना क्या यह पाप नहीं ?

(६) शहाबू के हाथों कुल द्रोही जयचन्द की, अला-उद्दीन के हाथों वैश्य-वंश द्रोही मलिक काफूर की-बाबर के हाथों मिथ्याचारी सिलाजी की, अकबर के हाथों राजा मानसिंह की--जहांगीर के हाथों महावतखां की वीभित्स पूर्ण--अन्तिम दुर्गति को जानते हुए भी भरत-कुल भूषणों का इस से कुछ भी शिक्षा प्राप्त न करना और नर--पशुओं के साथ भी—

रघु कुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जायें पर बचन न जाई॥

की रट लगाते रहना क्या यह पाप नहीं है !

(७) जिन गुरुदेव ने भारत माता के चरण कमल पर अपना सर्वस्व चढ़ा दिया। पिता की, पुत्रों की सब की स्वाधीनता यज्ञ में आहुति दे दी। अपने नन्हें नन्हें पुत्र जीवित ही जिस गुरुदेव ने हिन्दु धर्म की रक्षा के लिये दीवार में चिनवा दिये और जिस धर्म के लिये गुरु के सच्चे प्यारों ने हँस हँस के शीश कटाये–सिर को बली देकर भी निरन्तर गाते रहे—

सूरा सोई, जो लड़े दीन के हेत सूरा सोई।
पुरजा पुरजा कट्ट मरे, कभी न छोड़े खेत सूरा सोई॥

ऐसे वीरों के बलिदान की कदर करना, उनके प्रति कृत-ज्ञता का पालन करना उनकी वीरता के लिये उन

की स्तुति करना तो दूर रहा--उल्टे उनको हिंदुओं से भी पृथक मानना और स्वयं सारी हिंदु जाति का बेड़ा ग़रक करते हुये भी अपने आप को हिन्दुओं का लीड़र मानना क्या यह पाप नहीं है ?

(८) अपना भाई जब तक वह अपना भाई है-वैदिक धर्मी है--राम कृष्ण का मानने वाला है--गो माता के लिये जिसके हृदय में बड़ी ही श्रद्धा तथा प्रेम है-रामायण, महाभारत इत्यादि वीर कथायें सुन कर जिसका सिर सन्मान् से भूतल को छूकर भी पुनः गौरव से आकाश तक ऊंचा उठ जाता है, उसे अपना बैरी समझना--हिन्दु होते हुए भी अपने से छोटी जात का पता लगते ही उसे छूना तक भी सहन नहीं कर सकना । परन्तु उससे भी हज़ारों गुना नीच हिन्दु जात के हिन्दु के इसाई हो जाने पर अथवा कलमा पढ़ लेने पर उस के साथ बैठ खाने तक को तैयार होजाना क्या यह पाप नहीं है ?

(९) "इस वोट-युग में एक चतुर्वेदी, षटशास्त्री, अष्टादश पुराणी, सांख्य वेदान्ततीर्थजी की भी वही स्थिति है जो एक कल्लु घसियारे की है । (Show hands) हाथ खड़े करो ! एक दो तीन ... जिसके हाथ अधिक उसी की जीत, चाहे वे हाथ बनावटी क्यों न हों—चाहे वे हाथ अन्धों के, लंगड़ों के, जाहलों के,

चोरों के, ठगों के, दश नम्बर के बदमाशों के क्यों न हों। और यह धूर्त-समुदाय (Majority has Authority) बहु-मताधिकार की तलवार से चाहे सारे देश का बेड़ा गरक करदें "यह सब कुछ जानते हुए भी और व्यवहारिक जगत में नित्य नित्य क्रियात्मिक रूप से घटते देख कर भी" समाज के बड़े २ सरपंचों का जाति बहिष्कार रूपी कोर्ट मारशियल (Court martial) दण्डसे अपना सर्वनाश करते जाना क्या यह पाप नहीं हैं ?

(१०) हे भारत माता ! ब्राह्मणके घरमें पैदा हुआ एक जीव कितना भी पतित होजाए, वह तो पूजा ही के योग्य समझा जाय और शूद्रकुल में पैदा हुआ एक व्यक्ति पढ़ लिख कर कितना ही विद्वान होजाय परन्तु वह अछूत ही समझा जाय, क्या यह पाप नहीं है ?

(११) "हम दिन प्रति दिन घटे जा रहे हैं। यदि घटने की रफ्तार यही रही तो आने वाली पांच शताब्दियों में हमारा चिन्ह तक न रहेगा। (Majority) बहु मताधिकार की तलवार से साम्प्रदाय-वादी समस्त भारत को दबा बैठेंगे"—यह सब कुछ जानते हुए भी... जाति की उन्नति की प्रत्येक बात में रोड़े अटकाना क्या यह पाप नहीं है ?

WEIGHTAGE (बन्दर—बांट)

प्रान्त	हिंदुओं की संख्या प्रति सैकड़ा	राजनैतिक % अधिकार	मुसलमानों की संख्या प्रति सैकड़ा	राजनैतिक % अधिकार
पञ्जाब	२६	२५	५१	५७
यू० पी०	८६	५७	१४	३०
सी० पी०	९०	६४	४	१७
बङ्गाल	४५	३७	५७	४८
बम्बई	८१	६०	१७	१९
मद्रास	५४	९५	५	१४
बिहार	८५	६०	९	२५
उड़ीसा	९०	६०	३	१२
आसाम	६०	४०	२४	३०

विश्व जातियों में हिन्दुओं का स्थान

संसार की जन संख्या—२०१५००००००

... ...

ईसाई ५४ करोड़	रूढ़ियों की भेंट हिन्दुओं का ह्रास
बौद्ध ४६ करोड़	१८८१.........७६%
मुसलमान २३ करोड़	१८९१.........७४%
हिन्दु २२ करोड़	१९०१.........७१ ,,
	१९११.........६९ ,,
	२१७५८६८१२
	१९२१.........६६
	२१६७३४५८३

(१२) "इन धर्म के ठेकेदारों ने, धर्म की दुहाई मचाने वालों ने—धर्म रक्षा के बड़े २ साईनबोर्ड लगाने वालों ने, धर्म के नाम पर बड़ी बड़ी दूकानें सजाने वाले इन धर्म के चीफ एजन्टों ने कभी भी, किसी समय में भी, किसी अवस्था में भी देश, धर्म अथवा जाति पर घोरतम कष्ट पड़ने पर किसी प्रकार का त्याग, किसी प्रकार का बलिदान अथवा किसी प्रकार से भी उस आपत्ति में देश की रक्षा नहीं की"—यह जानते हुए भी इन मुफ्तखोरों को बैठे बिठाय पेट पूजा करना और धर्मरक्षकके मिथ्या-नामसे इन्हें सम्बोधन करना और धर्मके सच्चे हितैषी, धर्म पे बलिदान हो जानेवाले इन निर्धन भारत-सपूतों को अछूत कहना, क्या यह पाप नहीं है ?

करता रहा हमारे हित जो मैला धारण।
बनता रहा हमारी जो शुचित का कारण॥
उसे बना डाला अछूत हा: हृदय विदारण।
मानव होकर मानवता को किया निवारण॥
यह कलंक है, हिन्दुओ इसको शीघ्र मिटाईये।
प्रायश्चित में अब उन्हें अपने गले लगाईये॥
रामकृष्ण शिवशंकर जिनको गले लगायें।
समव शरण में तीर्थङ्कर जिनको अपनायें॥
ब्रह्मा विष्णु महेश समान जिन्हें बतलायें।
हा: हम होकर ज्ञान हीन उनको ठुकराएं॥
वे समान हैं, मानना तुमको भी पड़े समान ही।
इसका श्रेय तुम्हें मिले अच्छा यह लो जान ही॥

(१३) बीसवीं शताब्दी के इस दूसरे पन में जबकि ब्राह्मण का दिमाग़ बाबुओं के बरतन साफ़ करने में ही समाप्त हो गया—जब कि क्षत्रिय वीरों की वीरता ऑफिस नामधारी कुरुक्षेत्र के चेयर (Chair & table) पट पर साहिब लोगों की तनखाहों का हिसाब किताब करने में ही बस खत्म हो गई। इस वोट युग में जब कि राजनैतिक तौर पर जात-पात अथवा वर्णाश्रम धर्म की अन्त्येष्टी कर दी गई—सब कुछ देखते और जानते भी एक मरी हुई वस्तु को नाम मात्र के लिये जीवित रखना क्या यह पाप नहीं?

(१४) सात पुश्त तक बावर्ची का काम करके भी एक निरक्षर भट्टाचार्य प्रणाम का ही अधिकारी होगा और सात पुश्तों तक प्रोफ़ेसरी के उपरांत भी एक धुरन्धर अछूत को उस निरक्षर भट्टाचार्य को प्रणाम ही करना पड़ेगा--क्या यह पाप नहीं है?

(१५) चोरी, व्यभिचार, वेश्या-गमन, भ्रूणहत्या आदि भयङ्करसे भयङ्कर अपराध करने पर भी ब्राह्मण ब्राह्मण ही रहेगा वह तो पतित हो नहीं सकता और अछूत कितनी भी तपस्या करे किन्तु वह अछूत ही रहेगा क्या यह पाप नहीं है?

(१६) जब ब्राह्मणब्राह्मण न रहे, जब क्षत्री क्षात्री न रहे, जब वैश्य वैश्य न रहे तो शूद्रों को शूद्र रहने पर बाधित करना क्या यह पाप नहीं है?

(१७) एक ओर भगवान को पतित पावन कहना और दूसरी ओर उसी पतित-पावन भगवान पर एक साधारण से व्यक्ति की छाया मात्र पड़ जानेसे उसे पतित हो गया बतलाना और फिर उसी भगवान की शुद्धी का ढोंग रचाना क्या यह दुष्टता नहीं है ?

घुसा न अन्दर '' कहते क्या हो मैं हूँ अत्यन्त नीच अछूत,
पतित दृष्टि के पड़जाने से ठाकुर को लगती है छूत।
आह पुजारी ! क्या ठाकुर भी रखते हैं यह कपट विवेक
नर तन धारी वे दोनों पर एक पुजारी अन्त्यज एक ॥
पाप करे चाहे जितना भी हो लोलुप चाहे मक्कार,
लम्बी चोटी तिलक लगाकर वह रखता पूजन का अधिकार
पर मैं दीन दरिद्र भिकारी देवभक्ति में हुं तल्लीन,
एक बिन्दु हूँ दिव्य सुधा का उस में ही होना है लीन ॥
बाधक बन कर भक्तिमर्ग में बन्द किये मन्दिर के द्वार,
अर्ध चन्द्र दे किया निरादर यह उपदेश बड़ा सुकुमार
पर कहता हूँ सत्य पुजारी भूल न जाना यह अभिशाप,
ले डूबेगा तुम्हें शीघ्र ही जाति सहित यह रौरव पाप ॥

(१८) मन्दिरों में वेश्याएं आयेंगी, भगतिनें आवेंगे, देवदासियें नाचेंगी, व्यभिचार होगा: भ्रूण हत्यायें होंगी इन से तो मन्दिर अपवित्र न होगा, किन्तु ज्युं ही एक अछूत ने मन्दिर में पैर रक्खा कि भगवान भ्रष्ट हो गये क्या यह शठता नहीं है ?

(१९) घरमें कमाने आई भंगिन से छेड़ छाड़ करने में धर्म भ्रष्ट न हो– सारी सारी रात वेश्याओं के जूठे पत्त चाटते२ धर्म-देव बराबर अड्डा जमाये रक्खें। परन्तु एक हज़ार गज़ की दूरी से बेचारे हरिजन के दर्शन-मात्रसे धर्म-भगवान कूच कर जायें क्या यह कोरी आत्म वचंना नहीं है और क्या यह पाप नहीं है?

(२०) एक भारतका लाल, जबतक वह हिन्दु है, जब तक वह भगवान राम और कृष्ण का पुजारी है--जब तक वह गौ ब्राह्मण का भक्त है--जब तक उस के सिर पर चोटी है तब तक उसे अछूत कहना-उससे घृणा करना-उस से दूर भागना परन्तु जब वही हिन्दुत्व को छोड़ ईसाई बन कर आये तो उसे माई बाप बनाना, उस से हाथ मिलाना, उसके चरन छूना ! क्या यह पाप नहीं है ?

(२१) एक ओर "समोऽहम सर्व भूतेषु न मे द्वेषोऽस्ति न प्रियः।" ईश्वर को समदर्शी मानना-"ईशा वास्यमिदं सर्वम यत्किंचित्जगत्यां जगत्" ईश्वर को घटघट वासी कहना और दूसरी ओर ईश्वर की सन्तान को अछूत कहना क्या यह पाप नहीं है ?

(२२) एक ओर जड़ पाषाण मूर्ति में भी पेट भगवान को भोग लगाने के लिये ईश्वर का आभास करना और दूसरी ओर ईश्वर की सर्व श्रेष्ठ प्रतिमा नर नारायण का तुस्कार करना, क्या यह दुष्टता नहीं है ?

हरिजन की पुकार ।

मैनु हरिजन २ आखदे हरी कहावें तूं ।
तैनू मन दी इकगल्ल आखदैं जे समझावें तूं ॥
हरिजन मैं बाकीजन किस दे सच बतादे मैनु ।
जगत्पिता तु विश्वदा स्वामी इसलेई पुछ दैं तैनु ॥
पई होराँ बनावे होर ते, मैनु बनावें तूं ।
मैनु० ॥
ब्राह्मण बने जुआरी खत्री चुईयां कोलों डरदे ।
वैश्यांने कारज छड्डे शूदर अपना कारज करदे ॥
मैनु हरों-वारा दुःख दे दस्सकी चाहवें तूं ।
मैनु०॥
एक पिता तु सच्चा जग दा, सब जग तेरा जाया ।
इक नु सिर ते लया चढ़ा इक पैरा हेठ बिठाया ॥
मैनु तू दुख दे के ईश्वर की अज़मावें तूं ।
मैनु० ॥
ओ तैनु समदर्शी कहदे ओये तू समदर्शी केहड़ा ।
मौज उड़ांदे सुख पांदें, जेड़े कौम दा डोबन बेड़ा ॥
जेड़े पिट पिट मरदे कौम ते ओनाँ सतावें तूं ।
मैनु० ॥
सर्व व्यापक नाम धरा तैं मन्दरां च लाया डेरा ।
कुल्ली छड्ड गरीबां दी बिच महल बसेरा तेरा ॥
तैनु मैं समदर्शी जाना जे घर मेरे आवें तूं ।
मैनु हरिजन० ॥

(२३) इस बुद्धिवाद की बीसवीं शताब्दी में, इस प्रजातन्त्र के ज़माने में, इस विश्व-क्रांति के युग में, इस युगान्तर में भी साहब की मेंम के कुत्ते खिलाने वाला, होटलों में वर्तन साफ करने वाला, स्कूल की घंटा बजाने वाला, रेलगाड़ियों में पानी पिलाने वाला, एक जीव अपने आपको "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्" ईश्वर का मुख, जाति का सिरमौर समझ अपने से नीच जाति के धुरन्धर विद्वानको भी अछूत समझे, क्या यह पाप नहीं है?

पापी सोई,

जो देश धर्म कुल द्रोही ।
लम्बे लम्बे तिलक लगावे ।
धरम धरम दा शोर मचावे ।
बिच मंदरां जा टल्ल खड़कावे ॥
भाईआं दा विदखोई ॥पापी सोई ओ॥

स्वारथ हेतु बने कुल-घाती ।
देश-द्रोह करदा दिन राती ॥
फेर भी चलदा कड्ड के छाती ।
ला लई जिसने लोई ।पापी सोई ओ॥

गैरां नाल परीति लावे ॥
अपन्या दे जो घरनु ढावे ।
गैरां हथ्थां देश लुटावे ॥
फेरे धर्म दी डोई ॥पापी सोई ओ॥

(२४) हे हिन्द माता ! वह मेरी वेद वाणी जिसको मैंने सारे संसार के लिये रचा था "यथेमां वाचम् कल्याणी मावदानीं जनेभ्यः ब्रह्म राजण्याभ्याम् ं शूद्राय च स्वाय चारणाय" ।

जिसको पढ़ने का, मनुष्य मात्र को अधिकार था—उसे अपनी प्राईवेट प्रौपरटी बनाकर मेरी आज्ञा की अवहेलना करना क्या यह पाप नहीं ?

(२५) वह ज्ञान जिसको प्राप्त करना मनुष्य मात्र का अधिकार है । उस ज्ञान से सात करोड़ मेरे पुत्रों को वञ्चित कर देना और इस ज्ञान का एक शब्द भी उनके कानों में पड़ जाने पर उनके कानों में सिक्का भरवा देना । उनके मुख से एक मन्त्र उच्चारन पर जिह्वा कटवा देना और उनके भगवान् के उपासक बनने पर उन्हें जीवित ज़मीन में गाढ़ देना क्या यह अमानुषिक अत्याचारों की चरम सीमा नहीं और क्या यह पाप नहीं ?

(२६) जो सृष्टि मैंने प्राणीमात्र के लिये रची है उस पर सात करोड़ अन्त्यजों का रहना तक मुश्किल कर देना । अपने कुत्ते और बिल्लियाँ तक जिन सड़कों पर भले ही मल मूत्र की वृष्टि करते फिरें परन्तु एक गरीब भाई को उसके पास तक फटकने न देना क्या यह पाप नहीं है ?

(२७) यह जानते हुए भी कि जाति के प्राण बड़े बड़े लाला, बड़े बड़े मठाधीश वकील तथा बैरिस्टर नहीं होते हैं, बल्कि जाति के प्राण होते हैं गरीब निर्धन किसान शिल्पी। जाति की मुसीबत में रक्षा करने को यही लोग अपने प्राणों को हथेली पर रख कर आगे आते हैं। यह सब कुछ जानते हुए भी जाति की आत्माओं को---अछूत समझना, हिन्दु धर्म के विशालभवन की बुन्यादों को व्यर्थ समझना, जाति के पैरों को काट कर कौम को पंगु बना देना क्या यह पाप नहीं है ?

होते निर्धन ही हैं कौम की नैया पार लगाने वाले।
दे निज जीवन का बलिदान देश पे रंग चढ़ाने वाले॥

जब जब देश पै विपदा आई।
हुए सहाई हरिजन भाई॥
यही थे शिवा संग नौरंग को बेरंग बनाने वाले।
सीता रावण लीनी चुराई।
बन बन फिरते थे रघुराई॥
यही थे निर्धन बानर भील ही लंका को जलाने वाले।
तन पर पहन फकीरी बाणा।
पर्बत पर्बत फिरते राणा॥
यही थे हल्दी घाट पै मान का अभिमान मिटाने वाले।
जब लग हो न दलित्त उद्धार।
न होगा देश का बेड़ा पार॥
कब तक जीते रहेंगे कौम की बुन्याद गराने वाले।

"यदि आज रात को सारी फ़ैक्टरियां गिर पड़ें। सब मशीनें बन्द होजावें, अनार कली बाज़ार और चांदनी चौक को आग लग जाय। बड़े २ विशाल मन्दिर ज़मीन के नीचे धस जावें और उसके मलबे में ही यह सब के सब पांडे, पुजारी, धर्म के ठेकेदार धर्मध्वजी धर्माचार्य दब कर मर जायें तो इस संसार की गति में कोई बाधा न पड़े। किन्तु यदि बेचारे किसानो पर तथा मजदूर कहीं एक दिन के लिये भी हड़ताल कर दें तो सच मुच संसार में प्रलय ही आजावे"।

हरिजनों को !

प्रिय देश बन्धुओ !

तुम्हारी अवस्था इस समय अत्यंत शोचनीय हो रही है। यह सच है कि परमात्मा ने किसी भी व्यक्ति के माथे पर कोई खास ट्रेडमार्क लगा कर नहीं भेजा। यह भी सच है कि ईश्वर की सृष्टिमें कहीं भी जहां तक स्वयं ईश्वर की सार्वजनिक वस्तुओं हवा पानी धूप इत्यादि हैं उनके बटवारे में किसी प्रकार का जाति भेद तथवा वर्ण भेद नहीं होता। यह मनुष्य की प्रकृति ही हुआ करती है कि वह अपने व्यक्तिगत सुख के लिये दूसरे के सुख की परवाह नही करता यह व्यक्ति वाद प्राणी मात्र में चलता है बड़ी मछली छोटी मछली को सदैव ही खाती रही है। जातियों का संघर्ष तो सदैव ही चलता रहा है। इसी को देवासुर संग्राम कहते हैं। अफ़रीका अमरीका तथा आस्ट्रेलिया इत्यादि नई बस्तियों में जो बुरा व्यवहार वहां के असली निवासियों के साथ गोरे लोग कर रहे हैं वैसा ही व्यवहार तुम्हारे साथ भी स्वार्थ के बन्दों ने किया था।

और वास्तव में वह व्यवहार ऐसा अमानुषिक था कि यह आप ही की सहन शीलता थी जिसने शताब्दियों तक उस अत्याचार को सहन किया। अब आप चेते हैं, मानों राष्ट्रकी आत्मा में ज्योति की उत्पत्ति होगई। यह राष्ट्र के सौभाग्य का चिन्ह है। आप लोग राष्ट्रकी आत्मा हैं, भारत माताकी सच्ची सन्तान हैं। हिन्दु जाति का गौरव हैं। तुम अब चेते हो। मैं इसके लिये बधाई देता हूँ।

किन्तु एक बात! (Beware of the danger) भय की घंटी! इस समय इस संसार में आसुरिक शक्ति का प्राबल्य है। मैं तुम्हें कहता हूं तुम लावारिस माल नहीं हो। तुम जगतके प्रतिपालक हो। तुम संसार के अन्नदाता हो। लावारिस जगत के तुम्ही एक वारिस हो। बहकाने वाले दर दर धक्के खाते फिरते हैं, जो कि अपने स्वार्थ के लिये तुम्हारा धर्म भ्रष्ट करते हैं।

इस समय तुम्हारा प्रश्न धर्म परिवर्तन का नहीं, बल्कि यह प्रश्न है गरीबी का, कङ्गाली का। तुम्हारी निर्धनता, क्या यह धर्म परिवर्तन से मिट सकती है? कदापि नहीं। जिन बेचारों के अपने घर में दो मिट्टी के प्याले औरतीन सेर प्याज़ के बिना कुछ है ही नहीं, वह भला तुम्हारी आर्थिक दशा क्या खाक सुधारेंगे?

जो भी तुम्हारा सच्चा हितेषी होगा वह तुम्हें यही कहेगा कि इस समय तुम्हारा धर्म हिन्दु जाति के अन्दर अपने मनुष्य के अधिकारों को प्राप्त करना है। हिन्दु धर्म कोई ब्राह्मणों की ही (Inherited Property) जायदाद नहीं, इस पर तुम्हारा भी उतना ही अधिकार है, उतना ही नही बल्कि उससे भी ज्यादा अधिकार है क्योंकि तम जाति के पैर हो, आधार हो--तुम हौसला करके आगे आओ-और इस क़ौम के ठेकेदार धर्माचार्यों कोकान से पकड़कर बाहर निकालकर स्वयं जातीय नौकाके कर्णधार बनो।

(२८) जो तो सुबह से शाम तक जेठ आषाढ़ की कड़कती धूपों में खून पसीना एक करके खेतोंमें हल जोत ईंटें ढोए अथवामेज़ पर आँखे नीचे किये बराबर दश घंटे तक कलम घिसाता रहे उस बेचारे को तो पेट भर कर दोनों समय दो टुकड़े भी नसीब न हों। और बेकार मुफ्तखोरों के गले से सिवाय हलवे मांडे के कुछ उतरे ही न, क्या यह पाप नहीं है ?

(२६) जिस देशकी निर्धनता अपनी चर्म सीमा को पहुंच चुकी हो। २५ करोड़ में से १७ करोड़ भारत के अन्न दाताओं को जहाँ एक रोटी का सूखा टुकडा भी पेट भरने को मिल न सके, अकाल रूपी काल की भेंट ही जिस देश के करोड़ों बच्चे प्रतिवर्ष चढ़ जयें, बेरोज़गारी से तंग आय नौजवान जहाँ रेल की पटड़ी पर सर को चढ़ा देने में ही अपना कल्याण समझें। उस गरीब देश पर ६० लाख मुफतखोरोंका खीर–पूड़ी उड़ाना क्या यह पाप नहीं है !

(३०) जिस देशकी रोज़ाना आमदनी पाँच पैसे से भी कम हो, जिस देशवासियों का व्यवसाय नष्ट हो चुका हो। हिन्दु होने के अपराध में जिन्हें न नौकरी मिले, न ज़मीन ही खरीद सकें और न ही जो किसी प्रकार

का व्यवसाय ही कर सकें उन पर ६० लाख ब्रम्म भोले नाथों का भार लाद देना क्या यह पाप नहीं है ?

(३१) अपने बच्चों को उच्च विद्या तथा दूध दही न दे सकने के बहाने में अपनी गरीबी का रोना रोना–अपनी विधवा बहु को अथवा बेटी को एक सूखी रोटी का टुकड़ा देते भी छाती पीटना–परन्तु मुफतखोर बदमाशों को अपना सारा घरबार सौंप देना, दूध, दही घृत बादाम, मिश्री से उनकी पालना करना–क्या यह पाप नहीं है ?

(३२) यह जानते हुए भी कि धेलेके गेरुसे कपड़े रंगाकर तो हर कोई चोर बदमाश तक भी पहन सकता है। यह जानते हुए भी कि हिन्दु नवयुवक तथा नवयुवतियों का अपहरण करने वाले इन्हीं गेरुवे वस्त्र में लिपटे हुए कसाई हुआ करते हैं। यह जानते हुए भी बराबर इनसे घर बार लुटवाते रहना क्या यह पाप नहीं है ?

(३३) यह जानते हुए भी कि इन स्वाधुओंने किसी समय भी किसी प्रकार से भी हिन्दुओंकी रक्षा नहीं की। गौमाताकी रक्षा करने में, हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों को बन्द करवाने में इन्होंने कभी कुछ नहीं किया इन सब बातों के जानते हुए भी प्रत्येक गेरुआ कपड़े वाले को साक्षात् भगवान मानना क्या यह मूर्खता नहीं है ?

है नहीं जिनको तनिक भी ध्यान अपने देश का।
जिनके दिलों पर कुछ असर होता नहीं उपदेशका॥
एक अक्षर भी पढ़े लिखे नहीं होते हैं जो।
आज कल घरबार तज कर साधू बनजाते हैं वो॥
बांध लंगोटी जटा सिर भस्म सारे गात में।
रंग लिये कपड़े कमंडल भी लिया इक हाथ में॥
कन फटा कानों में खप्पर हाथ चिमटा भी बड़ा।
राह चलते टंटनाता एक घंटा भी पड़ा॥
हाय नब्बे लाख ऐसे मुफ्तखोरे आज हैं।
जिनके घर पर गांव गाड़ी घोड़े हाथी साज हैं॥
खान हैं पापों की बेपरवाह हैं कानून के।
हिन्द के रक्षक हैं या प्यासे हमारे खून के॥

(३४) जिस देश में चालीस वर्ष के भीतर सतानवै अकाल पड़े और उनसे डेढ़ करोड़ आदमी भूखसे तड़प२ कर मरजायें, जिस देशमें प्रति वर्ष दस लाख, प्रति मास ८६ हजार, प्रति दिन२८८८, प्रति घंन्टे १२०,प्रति मिनट दो मनुष्य " हाय अन्न! हाय अन्न!!" कह कर मर रहे हों, जहाँ प्रत्येक मनुष्यकी आयु २२ वर्षसे भी कम हो, जहाँ १७ लाख भिखारी द्वार२ टुकड़े माँगते फिरते हों- जहां दस करोड़ किसान एडी चोटी का पसीना बहा कर भी मुश्किल से रूखा सूखा आधा पेट भोजन पाते हों वहां ८० लाख साधु दो करोड़ रुपया रोज हजम कर जायें क्या यह पाप नहीं है ?

(३५) जिस देश और जाति का व्यवसाय नष्ट हो चुका हो। विदेशी सरकार की मुस्लिम नवाज नीति से सताये हुये जिस जाति के नवयुवक हताश हुये आत्म-घात में ही शांतिकी तलाश करें, जिस जाति की निर्धनता चरम-सीमा तक पहुंच चुकी हो, उस जातिके ऊपर करोड़ों साधु नाम धारी मुफ़्त खोरों का भार लाद देना क्या यह पाप नहीं है ?

(३६) देश पर विपत्ति आने पर, भारतमाता पर कष्ट पड़ने पर—गौ माता को रक्षा के लिये-हिन्दु-देवियों के कल्याण के लिये—जब सूर्यमऽपश्या देवियाँ तक रणभूमि में उतर आईं--स्वर्ग—भवन के सदृश्य आनन्द-भवन में रहने वाले सुभाष, जवाहर, भगत, यतीन्द्र जब जेलों में चले गये—फाँसी के तख़्ते पर लटक गये---जब बड़े बड़े कुटुम्बों का भरण पोषण करने वाले गरीब गृहस्थी तक अपने बच्चों को बिलखते छोड़ राष्टकी रक्षाके लिये कारागार की यातनाएँ सहने को तत्पर हुए—उस समय ईश्वरके अङ्गरक्षक (Body—guards) कलियुगी-कृष्ण गोविन्द-भवन में नई नवेलियों को स्वर्ग का पास पोर्ट ही देते रहे— क्या यह पाप नहीं है ?

(३७) सब प्रकार से शहन्शाही ठाठ से जीवन-व्यतीत करना। अपने ठाठ में बङ्गाल के मीर जाफर

को भी मात करना, अपनी विलासता में अवध के बाजिदअली शाह के भी कान काटना—अपनी ऐय्याशी में मुगल-सम्राटों को भी पीछे छोड़ जाना। मोटरों की, हाथियों की, घोड़ों की सवारी करना। दीन दुःखियों की रक्षा करना तो दूर उल्टे अपनी रक्षा के लिये अपने साथ बन्दूकधारी शरीर रक्षक रखना—सोने चाँदी के बरतनों में नाना प्रकार के भोजन करना—ज़री, कमखाब, मखमल के रेशमी कपड़े पहनना। लाखों रुपयों के कीमती रत्न जडित आभूषण धारण करना—सुन्दर, सुखकर मकानों, बङ्गलों तथा कोठियों में रहना। नित्य २ बढ़िया सुन्दर ३६ प्रकार के भोजन करना—मखमली गद्दों पर सोना—पचास तथा सौ सौ रुपये तोले के इतर और तेल लगाना। बीड़ी, सिगरेट, गांजा भांग, कस्तूरी, केशर, मोती का चूना, सोने के वरक खाना—रात्रि के समय अपने अन्तःपुर में बिजली की धीमी धीमी रौशनी में सुन्दर सुन्दर कुमारियों का राधा बना कर स्वयं कृष्ण का अभिनय करना—और यह सब कुछ करते हुए भी अपने आपको श्री श्री श्री १००८ वीत राग श्री स्वामी...योगाचार्य–यतिवर प्रकाशित करना क्या यह शठता नहीं है ?

(३७) हलवा पूरी खाने के समय तो यहधूर्त शहरोंमें डेरा आ जमावें, और भक्तराज का घरवार नीलाम करा-कर ही उठें। परन्तु जब भक्तराज पर कोहाट में, दिल्लीमें कानपुर में मुसीबत पड़े तो यह धूर्त ठाकुरजी को बगलमें दबा जंगल को भाग निकलें, क्या यह पाप नहीं है ?

(३८) जो तो हैं सच्चे देवता, जातिका धन, गरीब निर्धन किसान, जो सदैव ही भारत की विपदा को हरने में आगे रहे। अपने प्राणों तककी बाजी लगाकर जिन्हों ने देश और धर्म की रक्षा की उन्हें तो परे दुत्कारना, भूकों मारना और सारा धन इस पथरीले--प्रभु की आड़ में बैठ कर मुफ्त खोरों को खिला बैठना, क्या यह पापा नहीं है ?

यह......साधू

यदि यह हमारे साधु ही कर्तव्य अपना पालते,
तो देश का बेड़ा कभी का पार यह कर डालते ॥
पर हाय इन में ज्ञान तो बस राम का ही नाम है।
दम की चिलम में लौ उड़ाना मुख्य इनका काम है ॥
जब कामिनी कञ्चन न छूटा फिर भला वैराग क्या ।
पर चिन्ह तो वैराग का अब है जटाओं में धरा ॥
भूकों मरे कि जटा रखा कर साधु कहलाने लगे।
चिमटा लिया भस्मी रमाई मांगने खाने लगे ॥

साधु-सन्तों को !

भारत के धर्म गुरुओ ! तुम्हारे होते २ जाति की ऐसी दुर्दशा ! तुम ८० लाख हो । दुनिया की सारी हकूमतों की फौजें मिल कर तुमसे आधी भी नहीं हैं । तुम हिन्दूमाता की फौज हो । तुम आर्य माता की सैना हो । तुम्हारा निर्माण तो राष्ट्र की रक्षा के लिये हुआ था तुम वैरागी हो, तुम सन्यासी हो, तुम उदासी हो, तुम निर्मल हो, तुम त्यागी हो, तुम तपस्वी हो । राष्ट्र की रक्षा के लिये यह सब कुछ ही चाहिये । यह सब कुछ ही तुम में होना चाहिये । तुम्हारे पूर्वजों ने इन सब गुणों को अपने जीवन में धारण करके सारे संसार को अपना ऋणी बना लिया । महात्मा बुद्ध, स्वामी शंकराचार्य, गुरु नानक देव, संत शिरोमणी तुकाराम-भक्त शिरोमणी कबीर, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य, गोस्वामी तुलसी दास, भक्त सूरदास समर्थ गुरु रामदास, गौरांग महाप्रभु, चैतन्य महाप्रभु प्रभृति महान आत्मायें जिनकी बदौलत आज तुम्हारा भी वैसे ही मान हो रहा है, तुम्हें चाहिये अपने जीवन को उन्हीं महान पुरुषों के जीवनानुसार बनाओ ।

इस समय आर्य जाति पर बड़ा भारी संकट पड़ा है । गौ ब्राह्मण का जीवन दुःख मय बना हुआ है । गोपाल कृष्ण की यह गोचर भूमि गौ माता के रुधिर से आज रक्त वर्णी हो रही है ग्राम २ कसबे २ में गौ हत्थेखुल रहे हैं, जिनमें लाखों गौओं का प्रति दिन बध किया जाता है । जिस भारत क्षेत्र में दूध की नदियां बहती थीं, वहां अब पानी भी मोल बिकने लग गया । शुद्ध घी का तो बस नाम ही सुनाई पड़ता है ! क्या गौ माता की रक्षा करना आपका धर्म नहीं है ! यदि आप लोग थोड़ा सा भी त्याग करें

सौ २ की टोली बना कर प्रत्येक गौ हत्थे के सामने धूनी रमा दें तो एक दिन के अन्दर भारत वर्ष से गौ बध का नामो निशान तक मिट सकता है। पाकस्तान के स्वप्न देखने वाले संप्रदायिकता के रंग में रंगे हुए स्वदेश-भक्ती भारत-द्रोही म्लेच्छों ने आर्यवीरों का तथा आर्य वीरांगणाओं का जीवन संकटमय बना रक्खा है। सीमान्त पे आर्य देवियों के अपहरण की घटनायें क्या आपसे छुपी हुई हैं? कोहाट, भोपाल, हैदराबाद, बहावलपुर तथा पश्चिमी पंजाब के अन्दर हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों को क्या आप नहीं जानते हैं? इस ब्रह्मावर्त्त, आर्यवर्त्त के अन्दर म्लेछों द्वारा किन २ अमानुषिक कृत्यों से आर्य देवियों को पतित किया जाता है, क्या आपको इसका भी कुछ पता नहीं है?

क्या आपने कभी सोचा भी कि आखिर आप इस संसार में कर क्या रहे हैं? मुफ्तखोरी सबसे बड़ा भारी पाप है और विशेष करके ऐसे देश में जिसकी रोजाना आमदनी पांच पैसे से भी कम हो उसमें मुफ्तखोरी करना तो फांसी पर लटका देने वाला अपराध है। तुम गरीब-किसानों का खून पीते हो, विधवाओं के आंसुओं से नहाते हो। तुम कहोगे हम ईश्वर भजन करते हैं हमें मुक्ति मिलेगी। मैं कहता हूँ तुम एक ऐसा पाप कर रहे हो जो तुम्हें प्रलयकाल तक नरक से निकलने नहीं देगा। ईश्वर का भजन करना कोई पेशा नहीं है। ईश्वर की भक्ति के लिये कोई अलग महकमा खोलने की जरूरत भी नहीं है। ईश्वर को तुम्हारी भक्ति की भी जरूरत नहीं है--तुम जैसे ढोंगी बगलाभक्तों के ईश्वर २ रटने से ईश्वर की महत्ता बढ़ती नहीं ईश्वर तो जैसा है वैसा ही रहेगा। मैं तुम्हें कहता हूँ कि यदि गरीबों का खून चूस कर ही तुम ईश्वर भक्ति करना चाहते हो, यदि निर्धन देश पर असह्य बोझा लाद कर ही तुम ईश्वर भक्ति का ढोंग

रचाना चाहते हो, यदि दुःखी जाति के दुःख को बढ़ा कर ही तुम लोग ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हो तो मैं कहता हूँ तुम ईश्वर को भी और अपने आपको भी धोका दे रहे हो। ईश्वर कोई विशेष प्रकार के रंगदार कपड़े पहिन कर ही याद नहीं किया जाता। ईश्वर जानता है तुम यह रंगदार कपड़े क्यों पहिनते हो। तुम इसकी आड़ में अपने पापों को, अपने ऐबों तथा दुष्कृत्यों को छिपाना चाहते हो। तुम कईयों को धोका देकर, कईयों के रुपये मार कर, कईयों के जीवन को नष्ट करके, जूये में सब कुछ हार कर साहूकार के कर्ज़ से बचने के लिये यह दिवालियों की गेरू की पोशाक पहिर कर किसी सज़ा से बच जाने की कोशिश करते हो। सारा संसार तुम्हारे लच्छनों को जानता है। भला हो इन गेरुए कपड़ों का जिसने किसी ज़माने में बहुत बड़े २ काम किये होंगे और जो आज भी बराबर सांसारिकों के दिलों पर अपनी सच्चरित्रता की छाप जमाये हुये है। गुण गाओ इन गेरुए कपड़े के जो तुम्हारे सब पापों को ढांप लेता है।

मेरे कड़वे शब्द को बुरा मत मानो। मैं ने यह सबके लिये नहीं कहे हैं। मेरा अब भी विश्वास है कि गेरुए कपड़ों में आज भी कोई रामदास छुपा होगा इसलिये मैं उन सच्चे संतों को कहता हूँ कि इस समय तुम्हारा परम धर्म है कि तुम खाली राम राम रटने को छोड़ कर आर्य जाति की क्रियात्मिक सेवा करो।

देव वाणी हिन्दी पर कुठारा घात होरहा है, तुम्हारा परम धर्म है हिन्दी माता की रक्षा करना।

आज कल के तीर्थ व्यभिचार के अड्डे बने हुये हैं, आप इन तीर्थों के धर्म गुरू हो। आपका परम धर्म है इन तीर्थों के आदर्श को पुनः स्थापित करना।

तुम्हारा आदर्श त्याग तथा तपस्या होना चाहिये। आज तुम राजसी ठाठ से रहते हो, क्या फिर भी तुम्हें साधू कहलाते शर्म नहीं आती ? तुम्हारा यह परम धर्म है, कि तुम आदर्श त्यागी बन कर अपने घोड़े गाड़ियों को, सजे हुये सुखकर मकानों को इन कीमती पोशाकों को और इन छत्तीस प्रकार के भोजनों को गंगा जी के अर्पण कर एक लट्ठ, एक कमण्डुल, एक लंगोट, एक चोला धारण कर रणक्षेत्र में उतरो, तनिक तुम ही सोचो जो नित्य नित्य जाति पर आफ़तें आरही हैं वह कैसे मिटेंगी ? तुम्हें यह जानलेना चाहिये कि जब तक तुम्हारे यह खिलाने वाले ज़िन्दा रहेंगे तब तक तुम्हारा यह खाना भी ज़िन्दा रहेगा यह बेचारे गृहस्थी लोग किधर२ होवें, अपने कुटुम्बको भी पालें संसार संघर्षसे भी टक्कर लें जेल भी यही जायें, डंडे भी यही खांयें, सत्याग्रह भी यही करें और अस्सी लाख मुफ्तखोरोंको दो करोड़ रुपया रोज़ का खिलाते भी रहें क्या तुम ने कभी सोचा भी कि इस जाति का बनेगा भी क्या ? ज़मीनें इनको नहीं मिलतीं, खेती यह नहीं कर सकते। नौकरी से इनको जवाब मिलगया। दफ्तर इनके लिये बन्द होगये। साहूकार क़ानून ने लेन देन का ब्योपार भी कठिन कर दिया, ब्यापार इनके हाथमें नहीं रहा, कोई छोटा मोटा हाथका काम करना यह अपने लिये पाप समझते हैं जो थोड़ा बहुत बाप दादा का जोड़ा हुआ है वह कब तक चलेगा। स्वयं इनके पास खाने को न रहेगा तो तुम को क्या खिलायेंगे। इस लिये मैं तुम्हारे भले के लिये कहता हूं कि इस नाम जपन के ढोंग को छोड़ कर काम जपन अपनाओ इस से तुम्हारा भी भला होगा, जातिका भी भला होगा, ईश्वर का भला भी इसी में है।

तुम्हारी जाति ही तुम्हारा ईश्वर है। जब तक तुम्हारी जाति ज़िन्दा है, तब तक तुम्हारा ईश्वर भी ज़िन्दा है, जब तुम्हारी जाति मर जायगी तो तुम्हारा ईश्वर भी मरजावेगा।

(39) Him, O' fool !
You are searching for,
within the painted four-walls.
Get-out--! He is not a State--Prisoner.
He is free-- much more than a free Breeze.
See ! He is flying there amidst the Harvests.

श्री भगवान बोले !

(४०) और हे भारत माता ! जो तेरे लिये मरे, तेरे लिये कष्ट भोगें, इन तेरे पाशबन्धनों को छिन्न भिन्न करने के लिये जो तेरे पुत्र आजीवन जेल काटें– फाँसीके तख्ते पर चढ़ें--वह तो मरते मरें परन्तु यह बेकार देशद्रोही सन्त, महंत, पुजारी, मठाधीश गरीबों के खून से होली खेलें क्या यह पाप नहीं है ?

(४१) यह जानते हुए भी कि ईश्वर कोई हिन्दुओं की जातिगत सम्पत्ति नहीं। वह जगत् पिता है। यह जानते हुए भी और सर्वव्यापक न्याय-कारी, समदर्शी के नामों से उसे पुकारते भी उसे "मनुष्य के वेषमें हिन्दु बन कर आया" ऐसा कह कर उस सर्वव्यापक का अपमान करना क्या यह पाप नहीं है ?

(४२) जिन महापुरषों ने अपना सर्वस्व अर्पण कर इस देश का उद्धार किया, अपने त्याग तपस्या से डूबती हुई धर्म की किश्ती को मँझधार से निकाला ऐसे महापुरष योगीराज को भरी सभा में नचाना क्या पाप नहीं है ?

(४३) और जिन विधर्मियों को न तो राम से मुहब्बत न कृष्ण से प्यार, ऐसे दुष्टों को राम कृष्ण के स्वांग बना उन से भीक मगंवाना क्या यह पाप नहीं है ?

(४४) महापुरषों के जीवन में से जिन घटनाओं को तेरे पुत्र अपने जीवन में धारण कर अपना जीवन सुखी बना सकते हैं उन घटनाओं को तो बिल्कुल छोड़ देना और अपनी ओर से मनघड़ंत घटनाएं घड़ कर अपनी विलासता को पूरा करना और उस विलासता को हरी-कीर्तन की पूंछ लगाना क्या यह दुष्टता नहीं है ?

(४५) जिन महान आत्माओं का एकमात्र लक्ष्य राष्ट्रकी प्रगति रहा हो जातीयता जिन के जीवन का सार रहा हो, ऐसे महापुरषों के जीवन के आधार पर देश के अन्दर पारटियां बनें क्या यह पाप नहीं है ?

(४६) हे हिन्द माता तेरे देश में करोड़ों ही स्त्री-पुरुष महात्मा कृष्णके उपासक होंगे जो कि कृष्ण के दाईं ओर अथवा बाईं ओर मुकुट रखने पर ही लड़ते हों, परन्तु उनके होते होते गोबध होता रहे क्या यह दुष्टता नहीं है ?

(४७) एक ओर अपने आप को राम जी के परम भक्त प्रसिद्ध करना-तुलसी दास जी की रामायण को पढ़ते न थकना। दूसरी ओर सारा सारा दिन अपने भाईओं तथा अन्य सम्बन्धियों के बारे में कचहरियों में खज्ञल होते रहना क्या यह पाप नहीं है ?

(४८) भगवान राम की आदर्श पितृ-भक्ति को मानते हुए भी औरगंज़ेब का अनुकरण करना—भरत के भ्रातृत्व को आदर्श रखते हुए भी सारा सारा दिन कचहरियों की मिट्टी झोंकना, राम और सीताके दाम्पत्य को मुख्य रख कर भी सारी २ रात वैश्याओं में बिताना क्या यह पाप नहीं है ?

(४९) घर में क्लेश ननदों से द्वेष, सम्बन्धियों से वैर--पति से खट पट-घर में सारा दिन मातम--विधवा बेटी का संताप--विधवा बहु का विलाप और स्वयं सब कुछ धर्म--गुरुओं से मोक्ष का सौदा करने में लुटा देना क्या यह पाप नहीं है ?

(५०) जीवित माता पिता को पानी के गिलास तक के लिये भी न पूछना--बात बात पर कलह करना डंडे सोटों से उनकी सेवा करना और मरने पर उनका ब्रह्मभोज रचाना श्राद्ध करवाना अपनी भक्ति का ढोंग करना क्या यह पाप नहीं है ?

(५१) घर पर कुछ लुटेरों के आजाने से पंडित जी उनका सामना करने की बजाय जान बचा कर भाग निकलें या खाट पे सोते २ ही जीवन दान की याचना करें परन्तु एक अबला यदि हौसला करके चण्डिका-रूप धारण कर, दुर्गा को याद कर उन गुण्डों का सामना करे तो उस देवी का मान करने के बजाय उसे उसकी वीरता के दंड स्वरूप जातच्युत कर देना और विधर्मी बन जाने पर बाधित करना, क्या यह पाप नहीं है ?

(५२) हे हिन्द माता तेरी पुत्रियाँ जन्म से ही सती साध्वी होती हैं। उन में सीता सावित्री पद्मा का रक्त होता है। साहस, धैर्य, दया ये तेरी पुत्रियों में कूट कूट कर भरे हैं। ऐसी तेरी देवियों के बारे में एक गुण्डा झूठ मूठ कह दे तो उस गुण्डे को सज़ा देने की अपेक्षा उस बेचारी अबला पर अत्याचार किया जाय क्या यह पाप नहीं है ?

(५३) बड़े बड़े पंचायताधीश छिप छिप कर जो दिल में आये पाप करते फिरें। एक समाज का व्यक्ति अपने धन-बल पर जो चाहे मन मानी करता फिरे, वह तो प्रधान ही रहेगा--उस का पाप भी धर्म माना जायगा परन्तु एक गरीब आदमी यदि भूल से थोड़ी सी भी गलती कर दे और अपनी गलती पर क्षमा भी माँगले तो भी उसे जातिसे बाहिर करदेना क्या यह पाप नहीं है ?

(५४) भारत वर्ष पराधीन क्यों हुआ ? इन मन्दिरों के तहखानों में गड़ी हुई विपुल धनराशि के कारण से। महमूद क्यों आया ? सोमनाथ के पेट में घुसे हुए अमूल्य हीरे जवाहर की ख्याति सुन कर— न यह मंदिर होते और न यह गज़नी के लुटेरे आते।" यह जानते हुए भी बराबर मन्दिरों में देश का रुपया बरबाद करते रहना क्या यह पाप नहीं है ?

(५५) "वाइसराय अढ़ाई लाख लेता है—उसे कम लेना चाहिये, मन्त्री ३००० लेते हैं यह बहुत ज़्यादा है, तीन पैसे रोज़ की आमदनी वाला देश इतनी बड़ी बड़ी तनखाहें नहीं दे सकता। सब कर्म-चारियों की तनख्वाहें घटनी चाहियें।" ऐसा कह कर देश की बेबसी का रोना रोना, परन्तु जो धूर्त वास्तव में जोंकों की तरह देश को खा रहे हैं, जिनका रत्ती भर भी देश को लाभ नहीं, और जो बेकार बैठे बैठे वाय-सराय बहादुर से भी कई गुणा विपुल धन दाब लेते हैं, उन मठाधीशों का, धर्म के नाम पर जिनकी दूकानों ने देश का सत्त्व चूस चूस कर उसे शक्ति हीण कर दिया उन बड़ी बड़ी जोंकों को सूखे ही मज़े करने के लिये छोड़ रखना क्या यह पाप नहीं है ?

(५६) एक ओर—

रघुपति राघव राजा राम ।
पतित पावन सीता राम ॥

की माला जपना। ईश्वर को पतित पावन मानना। दूसरी ओर एक पतित को उस पतित पावन के पास जाने से रोकना, इस भय से कि कहीं हमारा देवता ही भ्रष्ट न हो जाय क्या यह दुष्टता नहीं है और क्या यह पाप नहीं है ?

(५७) "मन्दिर में ईसाई जा सकता है। मुसलमान भी मन्दिर में जा सकता है। अंगरेज़ भी बड़ी शान के साथ जा सकता है अर्थात् वे सब जा सकते हैं जिन्हें उन ईंटों से और उस जयपुरी प्रभु से दूरका भी लगाव नहीं। परन्तु जो उस भगवान का सच्चा भगत प्रेम से जाना चाहता है, अपने इष्टदेव के दर्शनों के लिये उसे वहाँ जाने से रोकना क्या यह पाप नहीं है ?

(५८) एक गौमाँस भक्षी यवन अपने गंदे से गंदे तथा जूठे बरतनों से कुएं में पानी भरता रहे। सारा २ दिन सारी २ रात चाम की मश्कें कुएं में डाल पानी खींचता रहे इससे तो कुआं अपवित्र नहीं होगा, परन्तु एक गौ भक्त हिन्दू के उस कुएं से निकले एक चुल्लू पानी को पी जाने से वह कुआं भ्रष्ट हो जायगा। क्या यह मूर्खता नहीं है ? और क्या यह पाप नहीं है ?

(५६) जो तो अपने से डरे उसे दबाना, जो अपना सिर फोड़े उसके चरण चूमना यह दुष्टता नहीं? और क्या यह पाप नहीं है ?

(६०) जिन विधर्मियोंने देवालयों की ईंट से ईंट बजाना अपना परम धर्म समझ रक्खा है उन्हीं दुष्टों के हाथों से भगवान् के मन्दिर को बनवाना, उन्हीं के हाथों से बनी हुई मूर्तियों को अथवा तसवीर चित्रों को मन्दिर में बिठा कर पूजना क्या यह मूर्खता नहीं? और क्या यह पाप नहीं है ?

(६१) जिन विधर्मियों का जीवनोद्देश्य ही इन मन्दिरों में रक्खी हुई मूर्तियों को तोड़ना है और जिन के धर्म गुरुओं ने पता नहीं कितनी बार इन मूर्तियों को तोड़ा, उन्हीं म्लेच्छों से भगवान् की मूर्तियों को बनवाना क्या यह पाप नहीं है ?

(६२) और हे भारत! जो परमेश्वर घट २ वासी है, अणु प्रमाणु तकमें जो व्याप्त है उस सर्व व्यापक परमदेव को एक तंग कोठड़ी के अन्दर बन्द कर रखना क्या यह पाप नहीं है ?

[६३] और उस असह्य ग्रीष्म में भी उस अपने पेट पालक भगवान को - जिस गर्मी में महन्त जी महाराज शिमले और मंसूरी की हवायें खाते हों और बिजली के

पंखों के नीचे नरम नरम गधेलों पर विराजित हों, ऐसे समय उस भगवान को गरमी में उबलनेके लिये एक बन्द कमरे में बन्द कर छोड़ना क्या यह पाप नहीं है ?

[६४] जो परमात्मा समस्त जगतका रचने हारा है, जिसने इस द्यौ लोक की रचना की है, वह हिरण्य गर्भ प्रभु जिसके सूर्य और चन्द्र युगल नेत्र हैं, यह अन्तरिक्ष जिसका उदर है, दिशायें जिसकी भुजायें हैं और यह समस्त धरणीतल जिस महादेव के पैर हैं उस भगवानको दो ढाई इंच की लम्बाई का बनाकर उसकी रक्षाके लिये सिपाही रखना और उस व्यापारिक प्रभु के दर्शनों पर टैक्स लगाना क्या यह पाप नहीं है ?

[६५] जो भगवान साक्षात सच्चिदानन्द के नाम से विख्यात है-सत्यम् शिवम् सुन्दरम् जिसकी उपाधि है, जिसकी समस्त प्रकृति ही सुन्दर है, उस आनन्द स्वरूप भगवान की भोंडी काली बदसूरत मूर्तियां बनाना क्या यह पाप नहीं है ?

(६६) और हे भारत ! जिन मन्दिरों ने तुम्हें गुलाम बनाया, जिन मन्दिरोंकी लक्खों लक्ख धनराशिने ४ हजार मील गज़नी; से महमूद, अहमद तथा नादर को खींचा उन्हीं मन्दिरों पर फिर भी अपना सर्वस्व लुटाते रहना क्या यह पाप नहीं है ?

(६७) जिन पाषाण की मूर्तियोंने तेरा सर्वनाश किया तेरे पुत्रोंको सर्व प्रथम उत्साह देकर अन्तमें धोखा दिया- जिन पाषाण—हृदयी देवों ने तुझे बिलखती हुई को रोती हुईको महमूदके हवालेकर दिया फिर आज भी उन दूधा-हारी महा प्रभुओं को पेड़े लड्डू खिलाना क्या यह पाप नहीं है ?

(६८) जो काल्पनिक सोमनाथ महमूद गौरी के सामने चूर चूर हो गये, जो जगन्नाथ बख्त्यार खिलजी के पाँओं पर गिर 'त्राही माँ, त्राही मां' कहने लगे और जो विश्वनाथ औरंगज़ेब के खौफ से भाग कर एक कूप में जा घुसे उन पूर्वानुभूत बे जान पत्थरों से अपनी रक्षाकी बराबर आशा रखना क्या यह अज्ञानता नहीं है ?

(६९) हे हिन्द माता ! जिस देश की निर्धनता अपनी चरम सीमा को पहुंच चुकी हो, बेरोज़गारी से तंग आये हुये जो तेरी आंखों के तारे आत्म हत्याएं कर रहे हों, उस देश की अगणित धन राशिको मन्दिर की तह ज़मीनमें गाड़ रखना क्या यह पापनहीं है ?

(७०) जब कि मनुष्य की सन्तान, ईश्वर की सर्व श्रेष्ठ प्रतिमा नर नारायण भूखों मर रहे हों तो उन ज़िन्दा भूखोंके मुहँ से छीन कर एक पत्थरकी काल्पनिक वस्तु को सब कुछ देते जाना क्या यह पाप नहीं है ?

(७१) या देवी सर्व भूतेषु दयारूपेण तिष्ठति
नमस्तस्यैः नमस्तस्यैः नमस्तस्यैः नमोनमः ॥
या देवी सर्व भूतेषु मातृ रूपेण तिष्ठति
नमस्तस्यैः नमस्तस्यैः नमस्तस्यैः नमोनमः ॥

एक ओर यह पाठ करना और दूसरी ओर उसी दया रूपिणी देवी के सामने सैंकड़ों ही मूक प्राणियों का बध करना क्या यह पाप नहीं है ?

(७२) यह जानते हूए भी कि देशको अब इन मूक पाषाणी प्रभुओं के निवास--स्थानों की आवश्यक्ता नहीं है देश को इस समय आवश्यक्ता है (Industrial colleges.) की, शिल्प महाविद्यालयों की, फिर भी नये२ मन्दिरों पर लाखों रुपया खरचते जाना क्या यह पाप नहीं है ?

(७३) बृन्द्राबन के श्री रङ्गनाथ के मंदिर में सवा दो सौ मन सोना दबा रक्खा पड़ा है। अयोध्या के हणुमान गढ़ी के मन्दिर के नीचे चांदी के दीनार दाब रक्खे हैं---विश्वनाथ जी की जायदाद का कुछ हिसाब ही नहीं---इन मन्दिरों के तह खानों में इतना धन पड़ा है कि उस धन से चौसठ बड़े बड़े इन्डस्ट्रीयल विश्व-विद्यालय चल सकते हैं। एक ओर देश की निर्धनता का रोना रोना और दूसरी ओर देश की दौलत को ज़मीन में गाड़ रखना क्या यह पाप नहीं है ?

भारत माता बोली !

भगवन् यदि यह पाप ही है तो इस पाप का फल भी कम से कम ८० प्रतिशत आप को ही भोगना पड़ेगा।

श्री भगवान् बोले !

भारत माता ! मुझे क्यु' भोगना पड़ेगा ?

भारत माता बोली !

अवश्य "क्यूं कि वह सारा का सारा धन आप ही के नाम पर उन मन्दिरों में सुरक्षित (Safe Deposit) है। मन्दिर आप का घर है तभी वहां इतना द्रव्य दबाय रक्खा है। यदि आप वहां न हों तो फिर सम्भवतः यह धन वहां न गाडा जाये।

श्री भगवान् बोले !

भारत माता ! जैसे तू कहती है कि मन्दिरों में भगवान ही बैठे हैं तो ले मैं तो जाता हूं, तेरे घर में तीस लाख मन्दिर हैं। इन तीस लाख मन्दिरों में कम से कम पचास लाख तो सर्वशक्तिमान होंगे ही। संसार का नाश करने को तो एक ही प्रभु काफी है फिर यह पचास लाख मिल कर तो पता नहीं इस संसार का किस प्रकार से कचूमर निकालें गे। सो मैं तुम्हें कहता हूँ कि जा उन पचास लाख सर्वशक्तिमानों की सैना बनाकर अपने कार्य को सिद्ध कर—व्यर्थ में मुझे क्यों खज्जल कर रही है।

(यह कह कर भगवान् अन्तर्ध्यान होगये)

गंगा जी का तट एकदम तमोमय हो गया। हाथ को हाथ सुझाई नहीं पड़ता था। भागीरथी की धाराओं से भी सां सां की आवाज़ आने लगी। बनचर भी इधर उधर घूम कर भांति भांति की बोलियां बोलने लगे ! भारत माता का कलेजा दहल उठा।

Some people can be deceived for some times,
Some people can be deceived for all times,
All people may be deceived for some time
But all people can never be deceived for all times.

खुदा-फरोशों को!

मेरे प्यारे देश बन्धुओ !

तुम्हें किसी भद्र पुरुष के द्वारा कही हुई ऊपर की पंक्तियों को ध्यान पूर्वक पढ़ना चाहिये, और इनसे शिक्षा भी ग्रहण करनी चाहिये। यह बीसवीं शताब्दीका युग है। तुम इसे कलियुग कहते हो, मैं इसे क्रांतियुग कहता हूं, यह संसार है ही क्रांतिका दूसरा नाम। समयकी तरंगे बड़ी प्रबल हुआ करती हैं। जो जाति अथवा जो व्यक्ति इस समय के बहाव को पहिचानता नहीं, आंखें बन्द किये कबूतर की तरह बैठा रहता है उसकी अन्त में बड़ी ही दुर्गति होती है इसलिये मैं तुम्हें तुम्हारे भले के लिये ही कहता हूं। मानोगे सुख पाओगे नहीं तो याद रखो हाथ में डंडे लिये सब के सब ही 'राम राजा राम परजा' करते फिरोगे।

तुम ईश्वर के अंग रक्षक हो। और तुम्हें इस बात का अभिमान है कि तुम दूसरों को परमात्मा के दर्शन कराने का ठेका लेते हो, क्या तुम ईश्वर का अपमान नहीं कर रहे हो? क्या तुम्हें इतनी भी समझ नहीं है कि यदि तुम ईश्वरकी नुमायश करके ही दुनिया को धोका देना चाहते हो, तो दुनिया तुम्हारी इन बातों को कब तक सहन करती रहेगी।

यह तर्क का युग है। शिक्षा के साथ साथ तुम्हारी पोल भी खुलती जा रही है। तुम्हें देखना चाहिये कि रूस जर्मनी इत्यादि देशों में तुम्हारे ही पेशे वाले लोगों की क्या दुर्गति बनी। सब के सब गिर्जों को पाठशाला बना दिया गया, बड़े २ पादरियों को कान से पकड़कर देश के बाहर निकाल दिया गया। और तुम अपनी उसी पुरानी बे ढंगी चाल में चल रहे हो। वह दिन आ रहा है, जबकि भारतवर्ष में भी रूस जैसी अवस्था आ जावेगी! मैं नहीं चाहता, वास्तव म कोई भी भारत हितैषी नहीं चाहता कि ऐसी अवस्था आये। लेकिन तुम्हारे जो लक्षण हैं उनसे तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह अवस्था अवश्यमेव आकर रहेगी। इस सयय देश भूखा मर रहा है। क्या तुम्हारे पथरीले भगवान् उन्हें रोटी दे सकते हैं? देश इस समय आर्थिक सामाजिक, अथवा राजनैतिक आपत्तियों से पीड़ित है, क्या तुम्हारे पथरीले प्रभु इस समय देश की रक्षा कर सकते हैं, यदि तुम कोई जवाब नहीं दे सकते हो तो मैं तुम्हें अभी से चेतावनी दे देता हूं कि इस तुम्हारे प्रभु की ज़िन्दगी बहुत थोड़ी है। इस समय ईश्वर का भाव मारकेट में बहुत गिर चुका है। ईश्वर टकेसेर बिकता है। बड़े २ खुदा फरोश हाथोंमें कैंची और उस्तरा लिये बाज़ारों में घूमते हैं और ईश्वर का भाव इतना सस्ता हो जाने पर भी बेचारे खुदा फरोशों को कोई ग्राहक नहीं मिलता। "हमारी साढ़े तीन रुपयेकी गोल्डेन रिस्टवाच लेने पर खरीदार को १०) रुपये की चौदह वस्तुएं मुफ्त"। यह हालत हो रही है खुदा फरोशों की। खुदा भी लो और उसके साथ कुछ और भी...... तमाशा यह कि खरीदने वाले का एक धेला न लगे, बताओ ईश्वर के इस सस्ते पन में तुम्हारे मंहगे ईश्वर को कौन पूछेगा। इस लिये मैं तुम्हारे भले की कहता हूं, कि तुम संसार की अवस्था

देखते हुये भी अपने आपको धोके में मत डालो, कोई समय था जबकि तुमने धर्म भीरुओं को मन माने ढंग से लूटा, उस समय अकेली तुम्हारी ही दुकान थी। परन्तु आज ईश्वर की मारकेट में एक से एक बढ़िया दूकानें सजी हुई हैं।

H. H: the Radhaswami God show Coy.

(राधा स्वामी खुदा–दिखानी कम्पनी)

Arabian Heavenly Transport society.

(फलस्तीन बहिश्त पहुंचाऊ सोसाइटी)

Mr: Tommy's celestial Parcel Office.

(टौमी स्वर्ग यात्रा कम्पनी)

H: H:the Aga Khans's God. Communication Bureau.

(आगाखां खुदा भेंट कराऊ कम्पनी)

TheMascowValley GodfightingAssociation.

(खुदा–तोड़–सभा वाल्गा)

(competetion) मुकाबला बड़ा जबरदस्त है। इस लिये अधिक न कहता हुआ संकेत मात्रमें तुमसे यही कहता हूं।

(१) अपनी फज़ूल खर्चियां बन्द करो।

(२) भगवान् को भोग लगाने के नाम पर निर्धन देश के लाखों रु० को बरबाद करना छोड़ दो।

(३) पतित-पावन भगवान् को 'किसी मनुष्य के देखने मात्र से पतित हो जाता है' ऐसा कहकर अपने ईश्वर का उपहास मत उड़ाओ।

(४) परमात्मा के दर्शनों के लिये किसी प्रकार का प्रतिबंध अथवा टैक्स लगाकर संसार की आंखों में अपने परमात्मा को अपमानित मत करो।

(५) मन्दिरों में किसी प्रकार का सुल्फा, गांजा अथवा तम्बाकू पीना बन्द करदो।

(६) देव दासियों का अथवा वेश्याओं का अपने प्रभु की प्रतिमा के सामने नाच करवा कर अपनी और अपने भगवान की मृत्यु को नज़दीक मत बुलाओ।

(७) मन्दिरों की आय को अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति मत समझो। इन अपने मन्दिरों को राष्ट्र की सम्पत्ति समझो। और मैं तो तुम्हें बड़ा ही उत्तम परामर्श दूंगा, कि तुम इस रुपये से देश के अन्दर शिल्प शालायें खोलो।

किसी महान आत्मा ने कहा है:—

"सारा जाता देखिये आधा दीजिये बांट"

इस समय तुम्हारा ईश्वर खतरे में है। पाश्चात्य शिक्षा में पला हुआ, आज कल के स्कूलों तथा कालिजों में पढ़ा---नवयुव आज इस तुम्हारे प्रभु का मखौल उड़ाता है। गरीब किसान मज़दूरों को पेट पालने को ही कुछ नहीं मिलता, वे तुम्हारे ईश्वर को क्या करें। सात करोड़ मुसलमान इस तुम्हारे प्रभु को ही समूलचे निगल जाने को तैय्यार हैं—बाकी रह गये कुछ एक धर्म-भीरू इन्हीं मूंडी हुई भेड़ों को बार २ कब तक मूंडते रहोगे!

इसलिये मैं तुम्हें कहता हूँ "ऐ धर्म के ठेकेदारो! अपने प्रभु की दुकान को सुधारो, नहीं तो याद रक्खो दो ही दिन में तुम्हारा भी और इस तुम्हारे दूध पीने वाले भगवान का भी जनाज़ा निकल जायगा।

निराशाके सागरमें गोते खा रही—वह जगन्माता—उस अनाथों के नाथ, बेआस की आस, दीनानाथको आकाश में न देखती हुई फिर चिल्लाई—

देवादिदेव सर्वेश महेश शम्भु,
विश्वादिमूल सर्वज्ञ प्रभु स्वयंभु।
आनन्द-कन्द सर्वोच्च प्रकाश-रूप,
अजरामरादिपुरषः जगदेक भूप॥
आदित्यचन्द्र दो नयन युगल हैं तेरे,
'नक्षत्र' भाल पर चिन्ह लगे घनेरे।
बाहु दिशाएं, ब्रह्माण्ड तेरा शरीर,
पृथिवी है पाद अरुश्वास तेरा समीर॥
ऐ चक्षुहीण तव नाम है विश्वचक्षू,
एकस्थितोऽपि सर्वत्र विराजता तू।
ज्योतिः स्वरूप ब्रहमाण्ड निकेत काया,
सर्वत्र ही रम रही इक तेरी माया॥
तू है अनन्त क्यों सान्त कहूं तुझे मैं,
तू शान्त है क्युं विभ्रान्त कहूं तुझे मैं।
बन्दी बना के तुझ को घर में बिठाऊं,
तो क्युं न मूढ़ मति मन्द ही मैं कहाऊं॥
माखन मिलाई मिश्री मधुपर्क नाना,
है काम एक जिनका दिन-रात खाना।
पर भूलके भी जो शौच कभी न जाते।
आश्चर्य है, वे सब माल कहां खपाते॥

वह दूध पीने वाले मजनूं भला क्या,
सर्वज्ञ विश्व प्रभु की करते हैं समता ॥
कोई मरे जगत में अरु कोई—जीवे,
सुथरा मज़े से नित्य घोल पतासा पीवे।

ऐ नाथ भोग तुझको यदि मैं लगाऊं,
हल्ला मचा के तव गौरव गान गाऊं।
तुझ को कराऊं गज-मूषक की सवारी,
तो सांचहू मैं करती इक पाप भारी ॥

तू प्रेम रूप सब को हिय से लगावे,
ऐसा ही तू पतित-पावन है कहावे।
पाषाण–नाथ जो मन्दिर में हैं सोते,
हरिजनको देख वे आप पतित हैं होते॥

जो अपनी आप रक्षा नहीं कर सके हैं,
जो देख के यवनको टुक टुक तके हैं।
वे तीस लाख मजनुँ किस भाँति नाथ,
आपत्ति काल में देंगे भगत का साथ ॥

त्वमेव विश्वं सचराचरं च,
त्वमेव सर्वं प्रवदन्ति सन्तः।
नमोऽस्तु ते कारण कारणाय,
नमोस्तु कैवल्य फल प्रदाय।

अनन्त विश्वेश हरे मुकन्द,
श्री वल्लभानतं जगन्निवास।
त्वया सनाथं कुरु मामनाथं
नाथ प्रभो दीन दयालु मूर्ते,

सर्वज्ञ शम्भु शिवशङ्कर विश्वनाथ,
मृत्युञ्जयेश्वर मृडप्रभृतीनिदेव ।
नामानितेऽन्य विषयेफलवन्तिकिंतु,
त्वंस्थाणुरेव भगवन्मयिमन्दभागे ॥

तावत्प्रसीद कुरु नः करुणाममन्द,
माक्रन्द मिन्दु धरमर्षयमा विहासीः ।
ब्रूही त्वमेव भगवन्करुणा र्णवेन्,
त्यक्त्वास्त्वया किमपरं शरणंव्रजामि ॥
अज्ञान का तिमर है छल-छन्द छाया,
बाढ़ा प्रगाढ़ उत्पात् पाखण्डियों का ।
ज्योति स्वरूप स्वतेज पुनः प्रकासो,
फैला हुआ जगत में तमतोम नासो ॥
वैकुण्ठनाथ विश्वेश जगन्निवास,
भागे कहां स्व पुत्री की बंधा के आस ।
विश्वात्मजा को न देव अधिक दुखाओ,
आओ! अनाथ, के नाथ गगन में आओ ॥

आवेश में आकर भगवान अन्तर्ध्यान तो हो गये, परन्तु पुत्री पे पिता का क्रोध ही क्या? बेटी की पुकार को सुनते ही भगवान शांताकार प्रभु अपने रौद्र रूप को भूल गये। आकाश फिर ज्योति स्वरूप के दिव्य तेज से देदीप्यमान हो उठा, नक्षत्रमन्डल तेजस्वी का तेज पा कर फिर से चमकने लगा। गंगा माता अपने आंचलको समेटकर अपने कर्तव्य पालनमें लगगई। और फिर एक बार आकाशमें ध्वनि उठी क्या यह पाप नहीं है?

(७४) ग़रीब किसानों के, भारत के पच्चीस करोड़ अन्न दाताओं के, मुंह से रोटी का टुकड़ा छीन कर बेजान पत्थरों के मुंह में दूध, दही ठोंसते जाना क्या यह पाप नहीं है?

(७५) जो ईश्वर घट घट बासी है, जिसे सृष्टिकर्ता कहा जाता है उस ज्योति स्वरूप प्रभु से भिक्षा मंगवाना, उसे अपनी आजीविका का साधन बनाना, सिनेमा-स्टारों के ज़िन्दा नाचों के समान उस पर टिकट लगाना क्या यह पाप नहीं है?

(७६) इन्हीं धर्मध्वजियोंकी करतूतोंसे तंग आ कर ७ करोड़ हरि के भक्त, राम कृष्ण की सन्तान, गौतम कपिल के वंशज आज विधर्मी बने और बाकी दिन प्रति दिन बनते जा रहे हैं और फिर भी यह सब कुछ जानबूझ कर भी इन खुदा फरोशों की मान प्रतिष्ठा को वैसा का वैसा ही बना रहने देना क्या यह पाप नहीं है?

(७७) ईश्वर पूजा की आड़ में मढ़ियों, मसीतों, कबरों, मकबरों की पूजा करना क्या यह पाप नहीं है ?

(७८) ईश्वर को सृष्टि कर्ता मानते हुए भी पीरों फकीरों घुमक्कड़ साधु सन्तों से गंडे तावीज़ बन्धवाना—उन से पुत्रोत्पत्ति की फरमाईश करना क्या यह पाप नहीं है ?

भारत माता बोली भगवन् ! आपका कथन सर्वथा सत्य है। मैं आपकी प्रत्येक बात से सहमत हूं। परन्तु भगवन् ! मैं आपसे सादर पूछती हूं क्या आप मन्दिर में नहीं रहते ?

भगवान् बोले, देवी ! मन्दिर से तुम्हारा तात्पर्य क्या है? यह सारा जगत-क्या मन्दिर नहीं है ? मंदिर का मतलब क्या है ? यह मनुष्यका शरीर क्या मेरा बनाया हुआ मंदिर नहीं है "मनुष्य का बनाया हुआ मन्दिर क्या उस महान् विश्वकर्मा जगत-पिता परमात्मा के द्वारा रचे हुये मंदिर से कोई बहुत उत्तम है ? क्या परमात्मा मन्दिर रुपी ईंट और पत्थर के एक जंगी किले में पांड पुजारियों की निगरानी में एक शाही कैदी (State Prisoner) के सामान रहता है" ऐसा कहकर क्या तू परमपिता परमात्मा का निरादर नहीं कर रही ?

येन् द्यौरुग्रा पृथिवञ्चदृढ़ा ।
येन् स्वस्तभितं, येननाका ॥
योऽन्तरिक्षेरजसो विमानः ।
कस्मैः देवायहबिषाविधेम् ॥

तू मुझे पूछती है 'क्या मैं मन्दिर में नहीं रहता हूं !' मैं उसका जवाब देता हूं, परमात्मा उस मन्दिर में रहता है

यह धरती माता जिसका फर्श है, दसों दिशाएं जिसकी दीवारें हैं, यह अन्तरिक्ष जिसका एक बड़ा भारी (Hall) कमरा है, यह गगन जिसकी छत है और यह तारागण जिसकी छत पै अङ्कित सुन्दर २ चिन्ह हैं......वह विशालकाय परमात्मा उस बड़े मन्दिर में रहता है।

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति,
नो चेदवेदीन्महती विनष्टीः।
भूतेषु भूतेषु विचिन्त्यधीराः,
प्रेत्यास्माँल्लोकादमृताभवन्ति ॥

श्रीभगवान् बोले, भारत माता वह मन्दिर ऐसा अद्भुत है कि—

न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति न मनो।
न विद्मो न विजानीमो यथैतदनुशिश्यात् ॥

वहां आंख नहीं जा सकती, न वहां आवाज़ पहुंच सकती है, न वहां मन रूपी रेड़ियो ही काम कर सकता है। वह ईश्वर का मन्दिर बड़ा ही अद्भुत है।

यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषिपश्यति।
तदेव ब्रह्म त्वम् विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥
यन्मनसा न मनुते येनाहु मनो मतम्।
तदेव ब्रह्मत्वम् विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥
यच्छ्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्रमिदं श्रुतम्।
तदेव ब्रह्मत्वम् विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥

उस परमात्मा को आंख नहीं देख सकती—उसे हाथ नहीं छू सकता—उस तक पैर नहीं पहुंच सकते, उसे वाणी से बुलाया भी नहीं जा सकता।

हिन्दमाता बोली, भगवन् ! यदि मन्दिर में परमात्मा नहीं रहता, तो उन में कौन रहता है ?

श्री भगवान् बोले मन्दिरों में रहते हैं स्थानापन्न परमात्मा जिसे यावनी भाषा में कहते हैं। "कायमुकाम खुदा" और आज बीसवीं शताब्दी की परिभाषा में (Officiating Gods......)

भारत माता चकित रह गई···(Officiating gods) 'कायमुकाम परमात्मा ! क्या स्वयं परमात्मा छुट्टी ले कर चला गया अथवा रीटायर हो गया !

भगवान् बोले, देवी ! न तो छुट्टी ले गया और न ही पेंशन पाकर चला गया बल्कि संसार के दीनदारों ने डंडे मार २ कर परमात्मा को दुनिया से बाहिर निकाल दिया।

भारतमाता बोली, भगवन् ! आप तो कहते हैं कि परमात्मा को कोई छू नहीं सकता, कोई देख नहीं सकता, कोई पकड़ नहीं सकता, फिर डंडे किसे मारे और निकाला किसको !

श्री भगवान् बोले भारतमाता !

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः
धीराः स्वयं पण्डितम्मन्यमाना ।
जंघन्यमानाः परियन्ति मूढ़ः
अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः ॥

अविद्या के तमोमय पथ पर भटक रहे यह मूढ़ लकीर के फकीर एक नकली वस्तु को ही असली समझ कर बस मान लेते हैं कि जीवन का उद्देश्य पा लिया। परन्तु परमात्मा को पाना तो बहुत ही कठिन है।"...........भारत माता बोली,

भगवन् ! आपको यह पता है कि मनुष्य के जीवन का मुख्य उद्देश्य है परमात्मा की प्राप्ति। और जो रूप आपने बताया है ऐसे प्रभु को कोई पा नहीं सकता।

भगवन् ! आप कहते हैं—परमात्मा मन्दिर में नहीं मिलता, मस्जिद में, गिर्जा में, सभा में, समाज में नहीं मिलता तीर्थों में, तपोवन में—गङ्गा में, काशी में, मथुरा में, प्रयाग में आप कहते हैं कि परमात्मा कहीं नहीं मिलता—गाने से चिल्लाने से, कानों में उंगलियां ले कर गला फाड़ने से—आंखें मूंदकर ऊठक बैठक करने से—पागलों के समान नाचने कूदने स। माला जपने से, बहुतेरे नाम लेने से परमात्मा नहीं मिलता यदि ऐसे नहीं मिलता तो आप ही बतलाइये कैसे मिलता है। श्री भगवान बोले, हिन्द मात !

मेरी बात ध्यान से सुन! मैं तुम्हें कई बार कह चुका हूं कि ईश्वर कोई मिट्टी का खिलौना नहीं है, जिसे प्राप्त करना है। तेरे देश-पुत्रों ने इस रहस्य को समझा नहीं तभी तो दुकानों पर घूम घूम कर ईश्वर को खरीदना चाहते हैं। परमात्मा को पाने का प्रयोजन है, अपने जीवन को सुखमय बनाना। परमात्मा को पाना कोई ज़बानी जमा खर्च (Theoretical) नहीं वल्कि यह एक प्रेक्टिकल, (Practical) क्रियात्मक साधन है।

हे हिन्दमाता तू बड़ी इच्छुक है परमात्मा को प्राप्त करने का राज-मार्ग जानने की—ले ! मैं तुझे बताता हूं सुन !

हिताय सर्व लोकानां निग्रहाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय सं ग्रे हेतु पौरषम् महत्त ॥
ग्रामे ग्रामे सभा कार्यः ग्रामे ग्रामे कथा शुभाः ।
पाठशाला मल्ल शाला प्रति पर्व महोत्सवः ॥

सब प्राणियों के उपकार के लिये, बुराई करने वालों को दबाने और दण्ड देने के लिये, धर्म स्थापन करने के लिये, सब प्रकार के मत रखने वालोंक गांव २ में एक संयुक्त सभा बनाओ।

संघे शक्ति कलयुगे

बीसवीं शताब्दीके जातीय सङ्घर्ष में सङ्गठन ही एक बल है।

न वै भिन्ना जातु चरन्ति धर्मं, न वै सुखं प्राप्नुवन्तीहि भिन्नाः ॥
न वै तेषां स्वदते पथ्यमुक्तं, योग क्षेमं कल्पते नैव तेषां ॥

सर्व प्रथम संगठन अत्यावश्यक है और वह संगठित शक्ति अपने अपने ग्राम में पाठशालाएं, व्यायामशालाएं तथा अखाड़े खोलने में लगानी चाहिये। शहर में जो व्यक्ति कुछ भी दान देना चाहें वह इन अखाड़ों को ही दें और इस अखाड़े तथा व्यायाम के शूरवीर बच्चे मिल कर राष्ट्रीय उत्सवों को मनाएं। ऐसे उत्सव पर आडम्बर नहीं रचाना चाहिये। खर्च बहुतही कम। रामलीला तथा कृष्ण लीला पर पचास रूपये से अधिक व्यय करना बड़ा भारी पाप है।

भारत माता बोली, भगवन्! मेरे सिर पर तो प्रति दिन कोई न कोई उत्सव सवार रहता ही है। भगवान् बोले, भारत माता! बहुत उत्सवों का होना बुरा नहीं, यदि वे उत्सव निरर्थक न हों। मैं जानता हूं तेरे देश में बहुत से उत्सव तथा पर्व व्यर्थ हैं........उन की गणना करना व्यर्थ समय खोना है। जिन उत्सवों की इस समय अत्यन्त आवश्यक्ता है वह मैं कहता हूं।

बैषाखी—बुद्धनिर्माण-दिवस (ज्येष्ठ पूर्णमा) राणा प्रतापजयन्ति (अषाढ़) कृष्णजन्माष्टमी विजय-दशमी--गान्धीजयन्ति (आश्विन) दीपावली—शिवाजयन्ति (मार्ग शीर्ष) गोविंदजयन्ति (पौष) शिवरात्री—होली—रामनौमी"

इन पर्वों पर इन वीरों की कथाएं हों, तथा व्ययामके खेल हों।

सनातनीयाः सामाजाः सिक्खः जैनाश्चसौगताः ।
स्वे स्वे कर्मण्यभिरताः भावयेयुः परस्परम् ॥

सनातन-धर्मी, आर्यसमाजी, ब्रह्मसमाजी, सिक्ख, जैन और बौद्ध आदि सब हिन्दुओं को चाहिये कि इन सब उत्सवों को मिलकर मनायें और एक दूसरे के साथ प्रेम तथा आदर से रहें।

विश्वासे दृढ़ता स्वीये परनिन्दा विवर्जनम् ।
तितिक्षा मतभेदेषु प्राणिमात्रेषु मित्रता ॥

अपने विश्वास में दृढ़ता, दूसरे की निन्दा का त्याग, मतभेद में व्यक्तिवाद को न लाना, व्यक्तिगत द्वेषसे जातिको हानि न पहुंचाना, सहनशीलता और प्राणीमात्रसे मित्रता रखनी चाहिये।

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चाप्यवधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ॥

सुनो धर्म के सर्वस्वको और सुनकर इनके अनुसार आचरण करो। धर्म को ठीक ठीक समझना चाहिये। ठीक न समझा हुआ धर्म मनुष्य का नाश कर देता है।

"धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः"

जो काम अपने को बुरा या दुःखदाई जान पड़े वैसा ही काम दूसरे के साथ भी कभी नहीं करना चाहिये।

यदन्यैर्विहितं नेच्छेदात्मनः कर्म पूरुषः ।
न तत्परस्य कुर्वीत जानन्नप्रिय मात्मनः ॥
न कदाचिद्द्विभे त्वन्यान्न कश्चन बिभीषयेत् ।
आर्यवृत्तिं समालंब्य जीवेत्सज्जन जीवनम् ॥

मनुष्य को चाहिये जिस काम को वह नहीं चाहता है कि कोई दूसरा उसके साथ करे, उस काम को वह भी किसी दूसरे के

प्रति न करे। क्योंकि वह जानता है कि यदि उसके साथ कोई ऐसी बात करता है जो उसको प्रिय नहीं लगती तो उसे कैसी पीड़ा होती है।

त्याज्या ननुपरभाषा परराज्यमिव भारत।
अस्मात्त्यक्त्वा ह्यपरभाषा स्वभाषाम् पठेन्नरः॥

विदेशी तलवार के शासन से भी बुरा होता है विदेशी भाषा का शासन। भाषा का सम्बन्ध आत्मा के साथ होता है। आत्मा के गुलाम बन जाने से तो मनुष्य पशु के सदृश्य हो जाता है। इस लिये सभी विदेशी भाषाओं को छोड़कर अपने देश की भाषा को ही पढ़ना चाहिये। यह है ईश्वर प्राप्ति की छटी सीढ़ी।

असूर्या नाम ते लोकाः अन्धेन तमसा वृता।
तांस्ते प्रेत्या भिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनः॥

हे भारतमाता! जो दुष्ट अपनी आत्मा की आवाज़ के विरुद्ध कार्य करते हैं उनका वास प्रलय काल तक घोर अन्धकार में रहता है।

मातृभाषाम् परित्यज्य पर भाषाम् पठन्ति ये।
तत्र यान्ति हि ते पापाः यत्र सूर्यो न भासते॥

हे भारत! अपनी प्यारी मातृभाषा को छोड़ कर जो मूर्ख दूसरे देश की भाषा को अपनाता है वह पापी मरने के अनन्तर वहां जाता है जहां सूर्य नहीं चमकता।

जिस देश के जल वायु से मनुष्य का शरीर बना हो, उसी देशके जल-वायु की भाषा उसकी मातृ भाषा होती है। अपनी भाषा को छोड़ कर विदेशी भाषा में बोलने का तथा लिखने का प्रयत्न करना क्या यह प्रकृति माता की अवज्ञा करना नहीं है? और क्या यह पाप नहीं है?

यत्पापम् ब्रह्म हत्यायाम् यत्पापं कपिलावधे।
तत्पापम् समवाप्नोति यो भाषाम् अवगच्छति॥

हे भारत ! जो पाप ब्रह्महत्यारे को लगता है और जो पाप कपिला गौ के बध करने वाले को लगता है उससे भी अधिक पाप उस पापी को लगता है जो अपनी मातृ भाषा को छोड़ कर दूसरों की भाषा अपनाता है।

आंग्लजाणांयथांग्रेज़ी फ्रेंचफ्रांसीसीणाँयथा।
अर्बजाणाँ यथोरदू स्यात् तथैव हिन्दीश्च हिन्दुणाम्॥

हे भारत जिस प्रकार अंग्रेजों की भाषा अंग्रेजी है, फ्रांसीसियों की फ्रेंच है, अरबियों की अरबी है, ऐसे ही हिन्दुस्तानियों की भाषा हिन्दी है।

ये स्वभाषाम् परित्यज्य पर भाषामुपासते।
कामधेनुम् परित्यक्त्वा वाँच्छन्ति दुर्भगाः खरीम्॥

हे भारत ! पतित पावनी भागीरथी के तट पर बैठा जैसे कोई प्यासा गङ्गा जल को छोड़ किसी छप्पड़ के पानी से अपनी पिपासा को शान्त करना चाहता है; कामधेनु गौ को छोड़ एक गधी के पीछे जैसे भागा फिरता है ऐसा ही मूर्ख है वह जो देववाणी हिन्दी को छोड़ कर उर्दू अथवा अंग्रेज़ीके पीछे पागल होरहा है।

(७९) एक ओर देश की आज़ादी का ढंढोरा पीटना और दूसरी ओर अपने ही हाथों से अपनी भाषा का नाश करना क्या यह मूर्खता (पाप) नहीं है ?

(८०) जब अंग्रेज़ अंग्रेजी नहीं छोड़ सकता, जब एक मुसलमान हिन्दुस्तान में रहता हुआ भी अरबी

फारसी का त्याग नहीं कर सकता, तो पच्चीस करोड़ हिन्दुओंका हिन्दी जैसी मधुर, निर्मल, सुगम तथा प्राकृतिक भाषाको तिलाञ्जली दे देना क्या यह पाप नहीं है?

(८१) *जिन कम्बख्त लिपियोंका न सिर है न पैर है, न यम है न नियम है—ऐसी बहुरंगी लिपियों को जो दिखाई कुछ देती हैं और पढ़ने को कुछ और ही पढ़ी जाती हैं, ऐसी बेहूदा बनावटी तथा बेढंगी लिपियों को तो सरपर बिठा देना और हिन्दी जैसी सरल, सुगम तथा सीधी सादी साधारण लिपि को परे ठुकरा देना क्या यह पाप नहीं है ?

(८२) जिस भाषा के निर्माण में बड़े २ महर्षियों को पता नहीं कितना कष्ट उठाना पड़ा। जिस देववाणी का उत्पत्ति में बड़े २ मुनियों ने अपने जीवन तक लगा दिये। हिमालय की गोदी में रहते हुये नियम पूर्वक यम नियम का पालन करते हुए, सैकड़ों वर्षों तक पूर्ण ब्रह्मचर्य्य को धारण करते हुए महान् आत्माओं ने अपने तपोबल से जिस भाषा का प्रकाश किया उस भाषा को कुछेक टुकड़ों पे नीलाम कर देना क्या यह पाप नहीं है ?

---

*But=बट Put=पुट No=नो Know=नो Knowledge=कनौलैडगे नहीं किन्तु नौलेज read = रैड्ड भी रीड भी। بالکل بادمل = बिल्कुल

(८३) जिस लिपि में साक्षात् भगवान् ने अपनी वेद वाणी को प्रगट किया, आदिकवि ने जिस लिपिमें राम चरित को गाया; जिस लिपि में महर्षि व्यास-देव ने महाभारत के रूप में भारतीय गौरव का वर्णन किया, जिस लिपि में महान् कवि कालीदास ने अपनी कविता का चमत्कार दिखाया, जिस लिपि में भर्तृहरि भवभूति, भारवी, बाण तथा कल्हण प्रभृति कवियों ने वीर चरितों का वर्णन किया, उस लिपि को एक तुच्छ सी वस्तु समझ कर छोड़ देना क्या यह पाप नहीं है?

(८४) जिस भाषाको कविकुल-शिरोमणी चन्द्रवरदायी ने अपनी शक्ति से पैदा किया, साधू शिरोमणी कबीर, गुरु नानक तथा रामदास सन्तों ने जिस भाषा में अपनी भक्तिका प्रकाश किया, गोस्वामी तुलसीदासजीने अपने रामचरितमाणस रूपी अमृतका प्याला जिस भाषा को पिलाया। भक्त सूरदासने अपने सुललित हृदयोद्-गारोंको जिस भाषामें प्रकट किया और भारतेन्दुहरिश्चंद्र ने जिस भाषा की सेवा में ही अपना जीवन लगा दिया उस भाषा को कतिपय ठीकरियों के लिये त्याग देना क्या यह पाप नहीं है?

चन्द, सूर, तुलसी, कबीर, भारतेन्दु हरि,
नानक, रहीम, गुरु गोबिन्द, ने मानी है।
गङ्ग, देव, भूषण, बिहारी मतिराम बृन्द,
कालीदास, रसखान, केशव की बाणी है।
उर्दू, अरब्बी, फ़ांसीसी हु को नाम काहो,
अपि अंग्रेज़ी जाको नित्य भरो पानी है।
उर्दू अरब्बी श्याम भाषा है गंवारन् की,
भाषण में भाषा मोरी हिन्दी महाराणी हैं।

भारत माता बोली, भगवन्! आप ठीक कहते हैं। हिन्दी भाषा का पढ़ना पढ़ाना तो प्रत्येक भारतीयका परम धर्म है, परन्तु करें क्या "हिन्दी पढ़ने से नौकरी नहीं मिलती, कचहरियों में भी काम नहीं चलता। भगवन् जैसा राजा होता है उसी के अनुसार प्रजा को भी बनना पड़ता ही है।

भगवान् बोले! भारत माता! यदि यही बात है तो फिर भारतवर्ष की स्वाधीनता का ढोंग, अडमान को क़ुर्बानियां, यह कारागारों की यातनायें, यह फांसी के तख्ते, यह कठिन कारावास के कष्ट, यह सब कुछ किस लिये। यदि यह किन्तु परन्तु के बहाने ही बनाने हैं तो फिर

"राम भरोसे बैठ कर, रहो खाट पे सोय
अनहोनी होवे नहीं, जो होनी सो होय।"

हे हिन्द माता—वही जाति जीवित रह सकती है, जो अपने छोटे से छोटे अधिकार के लिये भी मर मिटने को तैय्यार रहती है। क्या कारण है कि अंग्रेजी उर्दू लिपि वाले तो हिन्दी पढ़ना अपने मज़हब के खिलाफ समझें और तेरे यह सुविधा वादी लोग दो रोटियों के लिये चाहे इन से सारे संसार की रद्दी पढ़वालो।......

और जो तू ने नौकरी की बात कही ! सो भी सुन—

मैट्रिक मरने से बचे बी० ए० हैं बेहाल ।
एम० ए० मरन पधारिये यह शिक्षा का हाल ॥

... ...

अखियांन की ज्योति किताबन पै ।
जिभिया गिट पिट पै वार दिये ॥
बल तेज खपायो रटन्तन में ।
तन आवत ताव सिगार पिये ॥
सबिगाज परै अंग्रेजी पै कन्त ।
कितीकन साल तपस्या किये ॥
जब वीत जवानी का जोश गया ।
तब आन लिये दुई हर्फ बी० ए० ॥

... ...

चसमा लगे आंख दुरुस्तहु पै ।
अरु वाच सुशोभित रिस्टके ऊपर ॥
दिन रात डटाय रहे बाबू जी तो ।
सदा घर में निज पैरों सलीपर ॥
नहीं नेकहु भेद अभेद गिने ।
कभी ब्राह्मण कौन है कौन स्वीपर ॥
नये फैशन के कुछ बाबुओं पे ।
यह भूत सवार चढ़ा है शनीचर ॥

... ...

सर्विस की तिसनामें परे ।
निज उद्यम में विश्वाश करें न ॥
कीट किताबन के बन के ।
मन के छिन दूर विलास करें न ॥

छुट्टिनहु तक में करै सैर ।
घरों में कभी भी निवास करै न ॥
एम० ए० पास की है अभिलाष ।
हा आस हमारी को पास करै न ॥

... ...

चातुर्य चाकरी मात्रे कौशलं बूट पालिशे ।
भाले लिखति चेतावत् शिक्षा पाश्चात्य चालिता ॥
बी० ए० पर्यन्त शिक्षायां सहस्राणाम् तुविंशति ।
व्ययी भवतु वित्तन्तु केवलं दास वृत्तये ॥
यदि वार्धुषिकादेतद् धनमादाय पठ्यते ।
उष्ट्रान वयैव वृद्धिस्यात् प्रतिमासं शतशतम् ॥
यदि स्यात् मुसलस्थूल भाग्यं प्रीताश्चदेवताः ।
तदा बाबू समाप्नोति वेतनं खटशरां कितम् ॥
एम० ए० पर्यन्त मुत्तीर्ण इतिहासे प्रतिष्ठितः ।
छात्रो वक्तुं न शक्नोति भीष्मःकस्यसुतोऽभवत् ॥
आँगलजानांतु को राजा किमद् व्याख्याभ्रमयात् ।
इति सर्वं बिजानाति न जानाति स्वकं गृहम् ॥

... ...

वह आधुनिक शिक्षा किसी विध प्राप्त भी कुछ कर सको ।
तो लाभ क्या बस क्लर्क बनकर पेट अपना भर सको ॥
लिखते रहो जो सिर झुका कर आपनो को गालियां ।
तो दे सकेगीं रात को दो रोटियां घर वालियां ॥

सुनो सुनो ऐ भारत वीरो, तुम को यही सुनाना
तुम ने ही तो भारत मां का है दुःख ताप मिटाना।
भारत हमारी मातृ-भूमि है इस का प्रेम निभाना,
दुःख में सुख में, हर हालत में इस के ही गुण गाना ॥
जिस भाषा में वेदव्यास ने पंचम वेद बखाना।
जिस भाषा में आदि कवि कियो रामचरितका गाना,
जिस भाषा का केशव तुलसी सूर कियो रस पाना,
उस भाषा को भारत वीरो तुम न कभी बिसराना॥
हिन्दी हमारी मातृ भाषा है इसका प्रेम निभाना।
परम धर्म है हिन्दी भाषा पढ़ना और पढ़ाना॥

Rise up ! young India !! rise up !!;
You are the hopes of the nation !
You are the fathers of a gereration !
Rise up ! young India !! rise up !!!
For thy chain-bound Holy Mother.

नवयुवकों को !

हिन्द महाराष्ट्र के कर्णधार : नवयुवको !! तुम परेशान क्यु हो ? तुम्हारे चहरों पर निराशा का निशाचर कियुं क़ब्जा किये बैठा है ? तुम्हारे अन्दर से आत्म विश्वास का क्यों-लोप होगया तुम ऋषियों की सन्तान हो—उन ऋषियों की जिन्हों ने इसी आत्मविश्वास तथा सदाचार की शक्ति से बड़े बड़े साम्राज्यों को हिला दिया। तुम आज क्यों निराश हो ! अपने अन्दर छुपी हुई शक्तियों का विकास करो।

तुम सर्वशक्तिमान हो तुम्हारे अन्दर बड़ी शक्ति है। उस सर्वशक्तिमान परमात्मा ने तुम्हें अपने रंग में रंग कर ही संसार में भेजा है। तुम सब कुछ बन सकते हो—प्रताप, शिवा, गोबिंद तिलक, गान्धी, तुम सब कुछ बन सकते हो। केवल तुम्हारे अन्दर आत्म विश्वास की जागृति होने की देर है (He Can who says he can) तुम उन ऋषियों की सन्तान हो जिन्होंने एक घूंट में सागर को पी लिया—तुम उन वीर पुरषाओं की स्मृति हो जिन्हों ने सागर को मथ डाला—तुम उस शक्ति सत्ता का चिह्न हो जिन्हों ने एक उंगली पे समस्त पर्वत को उठाये रक्खा तुम उन वीर बांकुरों के वंशज हो जो समस्त धरती को पांडे जी की पोथी के समान बगलमें दबा कर निश्चिंत हो सोरहे, तुम उन शूरमाओं के अंश हो जिन्हों ने एक छलांग में सागर को पार कर लिया—तुम उन योधाओं की यादगार हो जिन्होंने केवल दस दिन के अन्दर इतने शक्ति शाली रावण को पछाड़ मारा। तुम ने कभी स्वप्न में भी उस गुप्त शक्ति को चेताने का विचार किया? यदि ऐसा किया होता तो आज दर दर जूतियां चटखाते—तथा धक्के खाते न फिरते। यदि अपने वास्तविक स्वरूप को पहचाना होता तो रेल के नीचे सर न देते। यदि अपनी शक्तियों को समझा होता तो आज पांच पांच रुपये के (most obedient servant) अत्यन्त आज्ञाकारी किंकर न बनते।

अब भी समय है कि तुम चेतो! स्वयं चेतो औरों को भी चेताओ। भारतीय नौका के तुम कर्णधार हो—जब कर्णधार ही डूब गये तो नाव बेचारी तो जायेगी रसातलमें न? इस लिये राष्ट्र के कर्णधार नवयुवको, जागो? उठो और उखाड़ कर फैंक दो इस भारतीय उपबन में चारों ओर फैली पनीरी को। उन पौदों को कि जो अपने आप ही उग पड़े—जिन का लाभ कुछ भी नहीं और

उल्टे जो दूसरे पेड़ों की खुराक स्वय खा कर दूसरे को भी बढ़ने नहीं देते। यह जोकें हैं भारत के धर्म जीवी मठाधीश, जिन्हों ने राष्ट्र की आत्मा को स्वार्थ की बेड़ियों से जकड़ रक्खा है। भारत की लक्ष्मी को जिन्हों ने ज़मीन के नीचे गाड़ रक्खा है। इन लोगों का कोई लाभ नहीं। यह धरती माता की छाती पर एक असह्य बोझ हैं। इस भारत-क्षेत्रमें उगे हुये असंख्य निरर्थक पौदे स्वयं सारी की सारी खाद को समेट कर सार्थक पेड़ों का जीवन भी हराम कर रहे हैं। इस लिये सब से पहला काम है इन मुफ्त ख़ोरों को जड़ से उखाड़ फैंकना। यह कार्य बहुत सुगम है। केवल तुम्हारे अन्दर आत्मा की दृढ़ता होनी चाहिये .... सत्याग्रहकी शक्ति होनी चाहिये, सच्चाई केलिये प्राण तक देने की हिम्मत होनी चाहिये। अपने लिये मानव अधिकारों के प्राप्त करने के लिये बड़ेसे बड़ा त्याग करनेको तैयार रहना चाहिये। यदि तुम में से पांच पांच सदाचारी नवयुवक भी अपने २ मुहल्लों को इन रजिस्टर्ड मुफ्त ख़ोरों के चंगुल से छुड़ाना चाहें तो यह कार्य कठिन नहीं है। तुम्हारे अन्दर आत्म-विश्वास होना चाहिये जिस का तुम में अत्यंत अभाव है। तभी तो तुम नौकरियों के पीछे पागल होरहे हो। तुम्हारे पुर्वजों ने तो नौकरी करना अंत्यजों, अपाहजों तथा शूद्रों के लिये लिखा है।

क्या तुम समूचे भारत को शूद्रोंसे ही भर देना चाहते हो? क्या तुमने कभी यह भी सोचा कि वह सरकार जिस के पास सीमित नौकरियां हैं, वह करोड़ों नौजवानों को कहां कहां भर्ती करे। सरकार के पास एक चपरासी से लेकर वायसराय तक कुल नौ लाख नौकरियां हैं। और वह भी सब की सब रुकी हुई हैं तुम नौकरी लिये बिना रहोगे नहीं और बेचारी सरकार तुम्हें नौकरी देगी नहीं। बताओ इसका परिणाम क्या निकलेगा?

इसी संघर्ष का परिणाम तुम्हारे अपमान के स्वरूप भारत माताके उज्ज्वल मुख को कलङ्कित कर रहा है। एक गधेकी क़ीमत भी सौ सौ रुपये पड़जाती है। एक घोड़े की क़ीमत भी बारह सौ रुपये तक पड़जाती है। एक दर्जी भी तीन तीन रुपये तक रोज़ कमा लेता है। एक साधारण बूट पालिश करने वाला भी दो दो रुपये रोज़ाना से कम क्या कमाता होगा।

और तुम एक छः आने रोज़पर भी (Your most obedient servant.) आज्ञाकारी नौकर! इसीलिये मैं तुम्हें कहता हूं—

Youngmen! if You want to preserve thy dignity, preserve the dignity of labour.

नवयुवको! यदि तुम सम्मान से जीना चाहते हो तो नौकरी का ख्याल छोड़ कर दस्तकारी की ओर बढ़ो। संसार में तुम्हारा सर्व प्रथम धर्म है, सम्मान से जीना। सांस लेना भी कोई जीना है! मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ, कि यदि तुम भारत लक्ष्मीको साधू, संतो, महन्तो, मठाधीशों तथा पूंजीपतियों से— आज़ाद करादोगे तो तुम्हारे कष्ट स्वयं कट जायेंगे।

दूसरी बात जिसने तुम्हारे जीवन को दुःखी बना रक्खा है, वह है रूढ़ियों की उपासना। इन रूढ़यों का गला घोटने के लिये तुम्हें रणक्षेत्र में आना चाहिये।

आर्य पुत्रो—

(१) क्या तुम जानते हो कि तुम्हारा देश कितना निर्धन है और क्या आप को पता है इस की निर्धनता का मुख्य कारण है परलोक की सरकार के टैक्सों की भरमार तथा मन्दिरों के तहखानों में गडे धन के अंबार।

(२) क्या आप को पता है इस देश में दो करोड़ से भी ऊपर रजिस्टर्ड मुफ्त ख़ोर फिरते हैं जिन का पेशा है धर्म भीरुओं को धमका कर उनकी कमाई पर हलवापूरी उड़ाना।

(३) क्या आप को पता है कि दुनिया में जितने भी पाप होते हैं सब धर्म के परदे में ईश्वर के नाम पर होते हैं ?

(४) क्या आप को पता है कि आज कल के तीर्थ रेलवे की आमदनी तथा इस्लामी तबलीग़ के साधन के बिना कुछ नहीं ?

(५) क्या आप को पता है कि ईश्वर के अस्तित्व को मानते हुए भी किसी को ईश्वर में विश्वास नहीं और कि एक ब्रह्म को छोड़ दुनिया मढ़ियों, क़बरों तथा नाना प्रकार के काल्पनिक देवी देवताओं के पीछे भाग रही है ?

(६) क्या आप को पता है कि इस अभागे देश में हरिजन नाम धारी ७ करोड़ जीव बसते हैं जो इन्सान कहाते हुये भी पशुओं से बदतर समझे जाते हैं ?

(७) क्या आप को पता है इस देश में २ करोड़ बाल-विधवायें हैं जिन का काम ही है अपनी आहोंसे हिन्दु-माता की अन्तरात्मा को दग्ध करना ?

(८) क्या आप को पता है आप की हिन्दी माता पर कितना कष्ट पड़ा है ? क्या आप को पता है कि भाषा को मारने से जाति कभी बच नहीं सकती ?

(९) क्या आप को पता है कि बड़े बड़े साईनबोर्ड धारी लीडर स्वार्थ वश हुए बिल्लियों की तरह सरकारी टुकड़ों पर लड़ रहे हैं और—

(१०) क्या आप जानते हैं कि जातियां उठा करती हैं—सच्चे त्यागी, तेजस्वी, तपस्वी, नवयुवकों की तपस्या से—
और क्या मुझे तुम्हें यह कहने की आवश्यकता है कि तुम जातीय, सेवक बनकर उठ जाओ मैदान में—

भारत के नवयुवको उठकर खड़े नहीं हो जाते क्यों।
वृथा विलासी जीवन में फंस निज उपहास कराते क्यों॥
पद पद पर हो रहे पराजित खोते हो अपना सम्मान।
फिर भी ध्यान न आता तुमको जाती है पुरुषोंकी शान॥
निद्रा तन्द्रा को तज करके स्वत्व समर में आ जाओ।
दासपाशको छिन्न भिन्न कर फिर स्वतन्त्र कहला जाओ॥
एक बार सब मिल जावें तो सारा विश्व हिलादें हम।
विश्व सरोवरके तट पर अब एक सरोज खिलादें हम॥
तुम भविष्य के निर्माता हो अतः न होना कभी निराश।
बिफल मनोरथ आजहुए तो कल निश्चय हो सफल प्रयास॥
द्वार द्वार पर अलख जगाते राष्ट्रगीत की छेड़ो तान।
जन्मसिद्ध स्वाधीन सभीहों यह गाओ तुमभी सब गान॥
जगे जाति हो यही कामना सब कुछ त्याग फकीर बनो।
दीन जाति पर मर मिटने को जाति हितैषी वीर बनो॥

नौजवानो प्रतिज्ञा करोः—

(१) मैं नित्य प्रति कम से कम एक घन्टा आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय किया करूंगा। प्रतिदिन यथा शक्ति व्यायाम करूंगा और इस प्रकार आत्मिक तथा शारीरिक उन्नति के द्वारा इस अपनी शरीर रूपी मशीन को समाज तथा राष्ट्र के लिये अधिकाधिक उपयोगी बनाऊंगा।

(२) मैं अपना समस्त पत्र व्यवहार तथा निजी कारोबार केवल हिन्दी भाषा में ही करूंगा। अपने बच्चों को तथा अपने छोटे भाइयों को हिन्दी अवश्यमेव पढ़ाऊंगा।

(३) अपनी आजीवकोपार्जन का मैं कुछ भी साधन अपनाऊं परन्तु प्रत्येक परिस्थिति में मैं अपने राष्ट्र अथवा जाति के भले को अपना आदर्श बनाऊंगा।

(४) जन्म गत जात-पात को मैं राष्ट्रोन्नति तथा हिन्दु-संगठन के मार्ग में एक बाधा समझता हूँ। मैं सच्चे दिल से प्रण करता हूं कि अपनी सन्तान का, अपने छोटे भाइयों का अथवा स्वयं अपना विवाह केवल गुण-कर्म-स्वभावकी समानता को दृष्टि में रखते हुए हिन्दु-मात्र में करूंगा।

(५) छुआ-छूत तथा ऊंच-नीच के भेद भाव को मैं अत्यंत भद्दा समझता हूँ। मैं यथा-शक्ति निर्धन हरिजन भाइयों की आर्थिक तथा सामाजिक अवस्था को सुधारने का प्रयत्न करूंगा।

(६) और विधर्मियो. तथा आततायों द्वारा सताये जा रहे किसीभी स्त्री अथवा बालक की रक्षाको मैं सदैव कटिबद्ध रहूंगा।

(७) मैं अपनी अनावाश्यक आवश्यक्ताओं को यथा संभव कम करूंगा। विलासता से दूर रहूँगा तथा अपने देश वासियों के द्वारा बनी हुई वस्तुओं को ही अपने प्रयोग में लाऊंगा।

(८) सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने में मैं कोई कसर उठा नहीं रक्खुंगा। विवाहादि संस्कारों पे कमसे कम रुपया खर्च करूंगा और फजूल खर्ची से बचे हुए रुपये को राष्ट्र-निर्माण के कार्यों में लगाऊंगा।

(९) मैं कभी कोई ऐसा कार्य नहीं करूंगा जिससे समाज की अथवा राष्ट्र की हानि हो और न ही मैं कभी ऐसे सामाजिक नियम का उलङ्घन करूंगा जिससे स्वयं मुझे दुःख हो और देश की अवनति हो।

(१०) मेरा यह शरीर भारत माता की अमानत है। जब चाहे देश-माता इस शरीर का बलिदान मांग सकती है।

मैंने इन प्रतिज्ञाओं को ध्यान पूर्वक पढ़ लिया है। और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ वह इन्हें पालने की मुझे शक्ति दें।

हस्ताक्षर..............................

श्री भगवान् बोले, भारत माता:—

राष्ट्र-भाषा के बारे में मैंने विस्तार से तुमसे कहा है क्यों कि ईश्वर प्राप्ति के साथ २ भाषा का बड़ा सम्बन्ध है। यदि तेरे पुत्र हिन्दी ही न पढ़ेंगे तो फिर ईश्वरीय ज्ञान—वेद कौन पढ़ेगा--शास्त्र--गीता रामायण महाभारत को कौन पढ़ेगा। हिन्दी न पढ़ने से तो तेरा सारा ही साहित्य बेकार हो जायगा।

भारत माता बोली—भगवन् आप ठीक कहते हैं तभी तो किसी कवि ने कहा है:—

अपनी भाषा है भली भलो आपुनो देश।
जो कुछ अपनो है भलो यही राष्ट्र सन्देश॥
देशन में भारत भलो हिन्दी भाषन मांहीं।
जातिन में हिन्दु भलो और भलो कछु नांहि॥

यानि कानि च तीर्थानि धर्मक्षेत्र स्थितानिवै।
तानि सर्वाणि शुद्धयन्तु सच्चिदानन्द प्राप्तये॥

हे हिन्द माता! ईश्वर प्राप्ती की अगली सीढ़ी है इस समस्त भारत क्षेत्र रूपी तीर्थ को आज़ाद करना तथा इस बड़े भारततीर्थ के अन्तर्गत छोटे छोटे हरिद्वार जैसे तीर्थों की पहली सी मर्यादा को स्थापित करना—

(८५) पतित पावनी भगवती भागीरथीके पवित्र तट पे हरिद्वार जैसे पवित्र क्षेत्र में बड़े २ तिलक धारियों का अमानुषिक कुकर्म करना भागीरथीके तट पर गोमाता का बध होना, पञ्चपुरी के अन्दर प्रत्यक्ष गो-मांस की बिक्री करना सुरसरी के जल में गोघातियों का गोअस्थियों का मार्जन करना क्या यह पाप नहीं है?

(८६) हरिद्वार जैसे पवित्र क्षेत्र में बिधर्मियों का दबदबा हो, हर की पौड़ी पर विधर्मियों का नियन्त्रण हो यह सब कुछ सहते हुए भी "मात गंगे, मात गंगे ! हर हर गंगे, हर गंगे ! का हल्ला मचाना क्या यह अपने आप को धोका देना नहीं है और क्या यह पाप नहीं है ?

(८७) हिन्दुओं के सबसे बड़े तीर्थस्थान के भाग्य का निर्णय भी गङ्गा माता के प्रबल शत्रुओं के अपने हाथों में हो, स्वयं गंगा माता के अपने ही रजिस्टर्ड भक्त प्रत्येक बात में गोघातियों का साथ दें और हिन्दू जनता यह सब कुछ जानती हुई भी इन धर्म के ठेकेदारों कीपूजा बराबर करती रहे, क्या यह पाप नहीं है ?

(८८) हरिद्वार जैसी ऋषियों की तपोभूमि में, जहाँ कभी यज्ञ-धूम के साथ ब्रह्मघोष की मनोहर ध्वनि उठा करती थी, जहां सच्चे ज्ञान निष्ठ महात्माओं के उपदेशामृत की गंगायें बहती थीं वहां गर्भ-पात, भ्रूण-हत्याएं जैसे पैशाचिक कृत्यों का होना क्या यह पाप नहीं है ?

(८९) शताब्दियों से गंगा जी के तट पर रहते हुए यवन गंगा जी के शत्रु ही बने रहे । उन के हजारों पापों को देखती हुई भी गंगा जी उन का तो कुछ नहीं बिगाड़ सकी और फिर भी यह कहते जाना कि गंगा जी में नहानेसे सभी पाप कटजाते हैं क्या यह मुर्खता नहीं है ?

श्री गंगा-महात्म्य

तुम किस स्वर्ग हेतु करते हो,
अपनी वसुधा से वैराग्य।
जहाँ जन्म पाने में सुरभी,
समझा करते थे निज भाग्य॥
बद्ध दासता के बन्धन में,
पड़े करोड़ों भाई बन्ध।
लेने जाते हो एकाकी,
कौन मुक्तिका तुम आनन्द॥
तुम किस धर्म कर्म का पालन
करते हो स्ववंश अवतंस।
अरे तुम्हारा धर्म कर्म तो
मिटा रहे हैं म्लेच्छ नृशंस॥

आश्रम धर्म छोड़ कर तुमने, सीख लिया बस एक वैराग्य।
क्यों न विदेशी हाय लूटते, विभव हमारा भव का त्याग॥

गंगा गंगेति यो ब्रूयात्, योजनानाम् शतैरपि।
मुच्यते सर्व पापेभ्योः, विष्णु लोकं च गच्छति॥
दृष्ट्वा जन्य शतं पापम् पीत्वा जन्म शतत्रयम्।
स्नात्वा जन्म सहस्राणि हरति गङ्गा कलौयुगे॥

भारत माता बोली! भगवन्! तो क्या यह झूठ है! शास्त्रकारों ने भी तो गंगाजी की बड़ी महिमा गाई है। जहां कहीं भी इसका नाम लिया है इसे पतित पावनी जगज्जननी मातेश्वरी भगवती भागीरथी कहकर ही सम्बोधन किया है।

हज़ारों मीलों से भी यदि कोई गंगा जी का भक्त हर २ गंगे, हर २ गंगे कह देता है, उसके भी जन्म जन्मांतरों के पाप कटजाते हैं और वह सीधा ही स्वर्ग में जाता है। भगवन् इस जाह्नवी का तो प्रादुर्भाव ही जगत को तारने के लिये हुआ था। भारत पुत्रों ने अपने तपोबल से इस गगन-गा सुरसरी को इसमृत्यु लोक में खींचा था।

महाराज सगरके साठ हज़ार पुत्रोंको अमृतवाहिनी मातेश्वरी ने जीवन दान दिया। अपने दिव्यालोक से मेरे घर को जिसने प्रकाशमान किया, वह मेरा कंठहार कभी ऐसा मलिन हो सकता है जैसा भगवान् कहते हैं। गंगा जी के साथ तो मेरा साहित्य बंधा हुआ है। यही तो मेरी सहचरी है। लाखों ही वर्षों से इसने मेरे उत्थान और पतन को देखा है। मेरे दुःख सुख में यह सदैव मेरे साथ रही है। गङ्गा जी की निन्दा करके क्या भगवान इस मेरे गले के हार को भी तोड़ देना चाहते हैं!

भगवन्! आप तो सारे संसार को समझाने वाले हैं, फिर आप को कौन समझाये। यदि साक्षात भगवान का वाक्य सुनकर सांसारिक लोग ऐसा ही मानने लग जावेंगे तो फिर हिन्दुत्व का तो नामो निशान ही मिट जावेगा।

गंगा जी के साथ मेरी संस्कृति का सम्बन्ध है और तीर्थों के साथ हिन्दुत्व बंधा हुआ है। यदि मेरे पुत्र मुझ से प्रेम करते हैं, श्रद्धा और भक्ति के वशीभूत हुये यदि वह मेरे दर्शनों को आते हैं तो भगवन् इस में बुराई क्या है! तीर्थों की निन्दा कर के क्या आप देश भक्ति का नाश करना चाहते हैं! और यदि भगवान्, काशी, हरिद्वार, मथुरा, बृन्दाबन इत्यादि से घृणा करते हैं तो क्या मेरे पुत्रों के मक्के और मदीने की हज्ज को जाने से भगवान् को सन्तोष होजावेगा।

श्री भगवान् बोले—भारत माता तेरे हृदयोद्गार वास्तव में प्रशंसनीय हैं। तू माता है, तू माताओं की माता है; तुझे वास्तव में मेरे शब्दों से चोट लगी ही होगी। मैं ने जो कुछ कहा था वह तेरा दिल दुखाने के लिये नहीं था।

परन्तु वह एक सच्चाई थी। मैं एक बार फिर कहता हूं। बता भारत माता! तेरे पैंतीस करोड़ पुत्र जो हर गंगे, हर हर गंगे कहते थकते ही नहीं उन की आँखों के सामने उनकी माता के अंग अंग काटे जाते हैं; उन की आंखों के सामने विधर्मी लोग उन की माता का निरादर करते हैं: उन के देखते देखते गो-घाती यवन इस अमृत वाहिणी देवी के मुंह पर रुधिर के छांटे मारते हैं, इन गंगा जी के भगतों को गंगा जी के तट पर बैठ कर कथा वार्ता तक करने देते नहीं—धर्मोपदेश में बड़ी बाधा डालते हैं। सारे संसार का मैला, गन्दा नालियाँ इस अमृत सागर में उन के सामने लाकर डाली जाती

हैं और यह करोड़ों चान्डाल हाथ पर हाथ धरे "हर हर गंगे, हर हर गंगे ही करते रहते हैं क्या यह पाप नहीं है?

हे भारत माता! जो शब्द मैं अब तुझे कह रहा हूं यही शब्द एक बार देवादिदेव कैलाशपति ने अपनी जीवन सगिनी हिमाचलसुताके प्रति कहे थे—सुन! पूरी घटना मैं तुम्हें सुनाता हूँ।

यह भागीरथी देवी जिस के तट पर तू बैठी है, यह पहिले आकाश में बहती थी। एक दिन आकाश में जाते जाते इसने नीचे मर्त्य लोक में चमकती हुई एक वस्तु को देखा। उस वस्तु ने इसको मोह सा लिया और उसी क्षण मर्त्य लोक में जाने की इच्छा इसके हृदय में उत्पन्न हुई। और वह इस बात की आज्ञा लेने देव-सम्राट के पास गई। विष्णु भगवान् देवताओं की सभा में बैठे थे। उस समय एकाएक गंगा जी ने सभा में पांव रक्खा पीयुपवाहिनी भगवती के स्वागत में सब देवता लोग खड़े हो गये। गंगा जी आई और विष्णु भगवान् से बोलीं, तात! मर्त्य लोक में कुछ दिनों के लिये भ्रमणार्थ जाने की मेरी इच्छा है, मुझे आज्ञा दीजिये। गंगा के मुखारबिन्द से ऐसे शब्द सुन कर देवता लोग बिस्मित हो उठे। स्वर्ग को छोड़ कर गंगा जी मर्त्यलोक में जाना चाहती हैं। भगवती को यह मृगतृष्णा इसके जीवन को दुःख भय बना देगी। विष्णु भगवान ने गंगा जी को मर्त्य लोक में जाने नहीं दिया। इस पर भी गंगा जी रुठ सी गई और बोलीं, तात्! मेरे मर्त्य लोक में जाने से मर्त्य लोक का कल्याण ही होग। परोपकार महान आत्माओं का धर्म है। मेरे मर्त्य लोक में जाने से यदि मर्त्यलोक स्वर्ग सदृश्य बन जायगा तो इसमें दोष ही क्या। मर्त्यलोक के बासियों की विपदाओं का नाश करके मैं शीघ्र ही यहां लौट आऊंगी।

"गंगा, यह ठीक है कि तुम मत्य लोक को स्वर्ग तुल्य बना दोगी, परन्तु मर्त्य लोकके संसर्ग में आकर तेरा तो सर्वस्व ही लुट जायेगा। उस समय तू रोवेगी और लज्जित हुई फिर स्वर्गमें आने का नाम तक न लेगी। क्यों व्यर्थ ही आपत्तियों का पर्वत सिर पर मोल लेती है ?" देवताओं ने बहुत समझाया। गंगा जी नहीं मानीं। अब गङ्गा जी स्वर्ग लोक छोड़ कर जायेगी---देवलोक में हाहाकार मच गया। किस प्रकारसे इसे समझाया जाय!

देवाधिदेव, महादेव का हृदय कांप उठा—"मैं इस अबोध गंगा को स्वर्ग लोक में जाने से एक बार फिर रोकूंगा और उसे समझा बुझा कर स्वर्गलोक में फिर भेजदूंगा।" इतना कहते ही शिव जी महादेव पार्वती को साथ लिये कैलाश की ओर बढ़े, जहां पर गंगा जी ने उतरना था भोले बाबा वहीं टिक गये। आकाश से एक प्रकार की गर्जना सी हुई। अब गंगा जी आकाश से मर्त्य लोक में गिरेंगी—शिवजी महाराज ने अपनी जटाओं को खोल दिया। मैं इसे मर्त्यलोक में नहीं जाने दूंगा...

शिवजी की जटाओं में बैठी हुई गंगा जी बाहर निकलने को उछलने लगीं। जटाओं में कैद की हुई गंगा जीका दम घुट सा गया—मुंह से झाग सी बहने लगी—और वह बाहर निकल भागने का बड़ा ही प्रयत्न करने लगी।

गङ्गा जी की ऐसी अवस्था देख कर पार्वती को दया आ गई और वह हाथ जोड़ कर महादेव से बोली भगवन्! यदि यह नहीं मानती तो फिर इसे व्यर्थही क्युं तंग करते हो। छोड़ा इसे —जाने दो जहां जाती है—संभल जायगी स्वयं ही ठोकरें खाकर!

महादेव बोले, पार्वती तेरा कहना आंशिक रूप में उचित है परन्तु मैं इसे मर्त्य लोक में जाने न दूंगा—तू भी बड़ी भोली भाली है और गंगा भी बड़ी भोली है और मर्त्यलोक है शैतान

का घर। आज तू भी कहती है और यह गंगा भी शेखियां भगारती है कि यह मर्त्य लोक को स्वर्ग तुल्य बना देगी। इस के तट पर ऋषि. मुनि तपस्या किया करेंगे—कुलपति इस के तट पर आश्रम बना कर ब्रह्मचारियों को त्रैयी विद्या की दीक्षा दिया करेंगे। मर्त्य लोक के वासी इस में स्नान कर जन्म जन्मान्तरों के पापों से मुक्त हो जायेंगे। इस के तीर पे रात दिन ब्रह्मघोष के साथ २ यज्ञ-धूम उठा करेगा, जिस से समस्त भूतल के संतापको शांति होगी। यह सब कहने की बातें हैं—जो कुछ होगा वह मैं जानता-हूँ। बड़े बड़े पर्वत इसका मुंह तोड़ देंगे। बड़ी बड़ी शिलाओं के संघर्ष से बच कर यदि यह कहीं मर्त्यलोक में पहुंच भी गई तो फिर इसकी वही अवस्था होगी जो एक स्वरूपवती सती साध्वी की बदमाशों के झुंड में हुआ करतीहै। आज यह गंगा अमृत वाहिणी है. इस की ओर देखते २ जी भरता ही नहीं; आंखों में नई ज्योति सी आती है। आत्मा प्रफुल्लित हो उठता है। परन्तु हे पार्वती! मेरी बात ध्यान से सुन ले मर्त्यलोक में जाकर इस का स्वरूप ऐसा बदल जाएगा कि इसकी ओर ताकने को दिल न चाहेगा।'

दुष्टलोग अपने स्वार्थ के लिये इसके अंग अंग काट डालेंगे। सारे मर्त्यलोक का मैला इस के सिर पर पड़ेगा। राक्षस लोग इस की छाती पर अग्नबोट चलायेंगे—संसार के कूड़े कर्कट को अपने में लेकर कुछही समय में इस का स्वरूप ऐसा बिगड़ जायगा कि यह इसी लज्जा की मारी आत्म हत्या कर लेगी।''यह मूर्ख है इस के सिर पर बाल हठ सवार हो रही है परन्तु मैं इसे अपनी जटाओं से निकलने नहीं दूंगा, परन्तु......विनाश काले विपरीत् बुद्धि,

गंगा जी ज़ोर ज़ोर से रोने लग गई शिवजी महाराज ने अपनी जटाओं को खोल दिया। और जटाओं से निकलते ही गंगा जी ऐसे भागी जैसे जेल से आजन्म क़ैद का क़ैदी।

काफी देर हो गई। कई वर्ष बीत गये। एक दिन पार्वतीने शिवजी से हाथ जोड़कर निवेदन किया "भगवन्---गंगामहारागी जो बड़ी बड़ी महत्वाकांक्षाओं को लिये हुये मृत्यु लोक की सैर को गई थी। उस की कुछ भी सुधि अभी तक नहीं आई। कई वर्ष बीत गये उस का तो कुछ समाचार मिला ही नहीं, जीती है अथवा मर गई,---कहां है कैसी है, है भी कि नहीं। भगवन! वह तो कहती थी मैं बहुतशीघ्र ही मृत्यु लोक का भ्रमण कर स्वर्ग में लौटूंगी परन्तु उसका तो कोई खत न पत्र। चलो तनिक हम ही मृत्यु लोक में जा कर उस की कुशल क्षेम पूछ आवें।

शिव जी बोले, पार्वती! मृत्यु लोक के बासी बड़े धूर्त होते हैं। भले मानस शरीफ सज्जनों को तो वहां एक क्षण भर भी सांस लेना कठिन है। गधे का दूसरा नाम उन्होंने देवता रक्खा हुआ है। जो जितना भी अधिक पागल हो उतना ही उसे सम्मानित,औलिया पहुंचा हुआ मानते हैं। वहां कदर है पागलों की, लुटेरों की, कज्जाकों की, डाकुओं की, घातकों को---ऐसे मर्त्य लोक में जाकर भला हम क्या करेंगे।

पार्वती मानी नहीं। त्रिया हठ के आगे देवाधिदेव ने सिर झुका दिया, बोले, पार्वती अच्छा, चलते हैं परन्तु एक बात तुम्हें और कहता हूं ऐसे ही रूप में यदि चले गये तो इन अन्ध श्रद्धालुओं से जान तक बचानी कठिन हो जायगी। इसलिये भेप बदल कर जाना चाहिये।

गंगा जी भाग कर बहुत दूर तक चली गई होगीं मेरा विचार है आगे से चल कर उसे पकड़ना चाहिये,

इस साल कार्तिक में गंगा जी गढ़मुक्तेश्वर आवेंगीं और गंगा जी के लाखों भक्त भी वहां आवेंगे। बता गंगा जी को गढ़

मुक्तेश्वर में पकड़ना चाहती हो अथवा हरिद्वार में"। इस वर्ष हरिद्वार में भी बैशाखमें कुम्भ लगेगा।

पार्वती बोली, भगवन्!·कुम्भ क्या वस्तु है?

शिव जी बोले-पार्वती! वस्तु तो बड़ी अच्छी थी परन्तु खराब होगई! प्रत्येक वर्ष किसी न किसी पवित्र स्थान पर एक बड़ी भारी सभा हुआ करती थी जिसमें राष्ट्रकी समस्याओं पर बड़े २ विद्वान मिल कर विचार किया करते थे...परन्तु आज तो जो कुछ होता है एक तमाशा है।

हरिद्वार में ही गङ्गाजी से कुम्भ पर भेंट करने का निश्चय हुआ। कैलाशपति ने पार्वती के साथ मर्त्यलोक की ओर प्रस्थान किया। वैकुण्ठ बासी बद्री नारायण की शैलारोही अट्टालिकाएं सामने चमकती हुई-दीख पड़ीं और उसके आंगन में लिपटी हुई सुरसरी धारा को देव--दम्पत्ति ने देखा; "गंगा जी कितनी शोभाय मान हैं। कैसी निर्मल हैं--- तुम तो कहते थे कि मर्त्यलोकमें इन का स्वरूप बिगड़ जायगा।" महादेव चुप रहे।

यह सामने ऋषिकेष के प्रासाद दीख रहे है, पार्वती... यहीं से मर्त्यलोक का आरम्भ होता है।

पार्वती का माथा ठनका। ऋषिकेश के प्रासाद या ऋषिकेश के शांति कुटीर हिमाञ्चलसुता ने एक बार ध्यान से गंगा जी की ओर देखा। हथकड़ियों तथा बेड़ियों से जकड़ा हुआ यमदूतों से घिरा हुआ एक निरापराध अपराधी अपने किसी प्रिय मित्र को देख कर उस के साथ बात करने की तीव्र इच्छा रखता हुआ भी मूक ही रह जाता है ऐसे ही पार्वती की आवाज को सुन कर गंगा एक बार ऊपर को उछलीं परन्तु अपने आप को असहाय जान लज्जासे सिर को नीचा कर के रह गई। हृदयोद्गार फिर उभरे अपना सारा जोर लगा कर गंगा जी ने धीमे धीमे स्वर से कह ही दिया।

"देवी ऋषियों के शांति कुटीर नहीं बल्कि गरीबों के निर्धन किसानों के, मज़दूरों के खून से फाग उड़ाने वाले मक्कार धर्म ध्वजियों ! के पापागार"

भगवन् ! यह फक् फक् धुंआ सा क्या निकल रहा है-क्या मर्त्यलोक में आग लग गई ।

कैलाशपति बोले ! पार्वती यह है रेलवे इंजन । गौराङ्गमहाप्रभुओं के प्रताप से धर्म का भाव बड़ा सस्ता हो गया है । हरिद्वार से स्वर्गाश्रम और स्वर्गाश्रम से हरिद्वार केवल अढ़ाई आने में ।

इतना सस्ता !............"हम फक्कड़ों को क्या, पार्वती ! हमारे पास अढ़ाई आने कहां, चलो पैदल ही ।

हरिद्वार को देख कर तू वास्तव में बहुत प्रसन्न होगी । एकाएक कानोंमें जल-प्रपातकी सी ध्वनि उठी । 'भगवन् ! इस प्रकारकी ध्वनि तो उस समय हुई थी जब कि यह स्वर्ग की बेटी आप के केशस्थल में आकर गिरी थी—क्या स्वर्ग लोक से नीचे भी अब यह किसी रसातल में गिर रही है ?,, महादेव बोले ! चलो पार्वती जिस ओर से यह ध्वनी आती है उस ओर को चलें । "यह बड़ी बड़ी रेल की पटड़ियां यह बड़े बड़े बन्ध, यह बड़े बड़े बँगले— गंगाजी के अंग २ को काटने वाले यह वैज्ञानिक पिशाच"

पतित पावनी भगवती भागीरथी के अंग अंग को काट डाला अभी तो यह बेचारी मर्त्य लोक की दहलीज तक भी नहीं पहुंची ।

सप्तसरोवर के नहर वाले पुल पर खड़े हुये शिव जी ने पार्वती को कहा "पार्वती ! वह सामने हर की पैड़ी है । देखोतो कितनी भीड़ है । बड़े बड़े श्रद्धालु हज़ारों मीलों से परिवार सहित यहां आए हैं । बड़ी श्रद्धा से आये हैं । बड़ी बड़ी यातनाएं सहन कर के आए हैं । पतित पावनी भागीरथी में मार्जन कर अपने जन्म जन्मान्तरों के पाप कटवाने के लिये आये हैं ।

अभी दिन दो घड़ी शेष रहता है। इतनी देर इसी सप्त सरोवर की शोभा को देखते हैं। वह देखो बड़ी बड़ी नावें बांध रक्खी हैं कहीं गंगा जी पानी के रास्ते ही न भाग जावे। यदि भाग जाये तो उन्हें भाग कर फिर पकड़ लिया जाये और इन नावों वाले भी हैं, गंगा मैय्या के पक्के शत्रु। मर्त्य लोक की भाषा में उन्हें मुसलमान कहा जाता है।

भगवन् ! यह मुसलमान क्या वस्तु हैं ! क्या यह आदमी नहीं हैं ? क्या यह भारतवर्ष में उत्पन्न नहीं हुए ? क्या यह गंगा जी का पानी नहीं पीते ? क्या यह भारत का अन्न नहीं खाते ? क्या इनका शरीर भी इसी भारतमाता के शरीर से नहीं बना ? फिर यह गंगाजी के शत्रु क्यूं कर बने ?

कैलाशपति देवेन्द्र ने दीर्घ श्वांस ली !!......पार्वती ! कुछ ही दिन पहले यही लोग गंगाजी के परम भक्त थे, यही लोग गंगाजी के लिये प्राण तक न्योछावर करने को तैय्यार थे...... परन्तु स्वार्थान्ध, धर्म द्रोही कुलकलङ्क, कृतघ्न, नर पिशाच, धर्म ध्वजियों ने इन्हें बल पूर्वक भारतमाता की गोदी से परे फैंक दिया। वह अपमान अभी तक इन्हें भूला नहीं। और उसी अपमान का बदला लेने की आग इनके अन्दर दहक रही है।"

"परन्तु अपनी माता को—गंगा माता को, भारतमाता को—कोसकर गालियां निकाल कर, डंडे मारकर तो अपने अपमान का बदला लेना उचित नहीं" शिवजी बोले, पार्वती ! तू ठीक कहती है।

और यह जो बड़े बड़े बन्ध बांधे हैं इन पर चौकसी रखने वाले भी हैं यही गंगा जी के शत्रु। "अब गंगा जी कभी स्वर्ग को वापिस जा सकती है, ऐसा विचार तक भी मन में लाना पाप है।

आदित्य देव अपना कर्तव्य पूरा कर अब घर को जाने ही वाले हैं। हरकी पैरी पर हम कुछ अंधेरा होने पर ही जावेंगे ताकि

कहीं इस वेषमें भी कोई हमें पहचान न लेवे। वह देखो सामने सैलानीलोग झुंड के झुंड बांधे इधर को आ रहे हैं। आओ हम तनिक दूसरी ओर हट जायें।

पार्वती बोली, भगवन्! यह समय तो ईश्वर भजन तथा आरती जपन का है। इस समय तो इन लोगों को हर की पैरी पर जाना चाहिये और यह लोग हरकी पैरी से इधर की ओर आरहे हैं।" आदित्य देव अपनी बिखरी हुई सम्पत्ति को समेट कर विश्राम करने चले गये। धीरे धीरे अन्धकार ने चारों ओर अपना प्रभुत्व जमाना शुरू किया। शिव जी बोले, पार्वती आओ हम हर की पैड़ी की ओर चलें। पार्वती का हृदय प्रसन्नता से फूल उठा। ज्योतियों ने, घन्टियों की मधुर मधुर ध्वनि ने और गंगा जी की धीमी धीमी जल तरङ्ग के साथ गंगा जी की आरतियों ने हिमाचल सुता के मन को मोह लिया। श्वेत पत्थर की सीढ़ियां और तिस पर भी निर्मल जल के अन्दर विद्युत का देदीप्यमान प्रतिबिम्ब, दक्षसुताको बड़ेही शोभायमान प्रतीत हुए।

भगवन् ---- भागीरथी देवी कैसी शोभायमान प्रतीत दे रही है,इसका कितना आदर होता है। भक्तजन चरण चूमते हैं। वृद्ध तत्व वेत्ता, ज्ञानी, योगी राज कितनी श्रद्धा से इसकी चरणरज को मस्तक पर आरूढ़ करते हैं। बड़े बड़े धर्माचार्य, धर्मगुरु नत--मस्तक हुये इसकी चरण बन्दना में ही अपना गौरव मान रहे हैं।

शिव जी महाराज हंसे। पार्वती! पिंजरे में डाले हुये पक्षीके सामने घी खांड की चूरी और दूध का प्याला देखकर तू उसे सुखी समझ रही है। आओ जरा आगे बढ़ें। दो ही कदम चले थे, पार्वती का चेहरा बदल गया। वह आशा के चिन्ह निराशा में बदल गये। प्रसन्नता के स्थान पर उदासी छा गई। भगवन् यह हरिद्वार है या हलवाईद्वार। यह इतने आलू छोले वाले

यह ३६ प्रकार की चाट वाले, यह बर्फ सोडा वाले, यह मलाई कुलफी वाले, भगवन! हरकी पैड़ी के साथ इनका क्या सम्बन्ध यह गङ्गा तो कहती थी "मेरे किनारे पर बड़े बड़े योगी यतियों के आश्रम होंगे, बड़े २ कुल पति लाखों ब्रह्मचारियों को विद्या अमृत का पान करावेंगे।"

परन्तु यह कमबख्त तो प्रत्यक्ष गंगा जी के मुंह पर थूक रहे हैं। चाट के पत्ते गंगा जी में, आम की गुठली गंगा जी में, तरबूज़ के छिलके गंगा जी में, नाक को साफ किया वह भी गंगा जी में। शिव जी बोले----पार्वती! गङ्गाजी का कहना झूठ न था। समय के फेर में आकर उस युग के धर्मगुरुओं को ही इस बीसवीं शताब्दी में हलवाईयों का रूप धारण करना पड़ा। उस युग में धर्म आत्मा में वास करता था, इसलिये धर्म गुरुओं को आत्मा का उत्थान करना था। बीसवीं शताब्दी का धर्म पेट में रहता है, इसलिये पेट पालने की विद्या को जानने वाले इन हलवाई रूपी धर्म वेत्ताओं की बड़ी भारी आवश्यकता है। पार्वती चुप हो गई। शिव जी महाराज आगे चल दिये। पार्वती एक ओर खड़ी हो गई। शिव जी ने देखा पार्वती पीछे नहीं आरही है। बोले! जो कुछ होना था वह तो मैंने तुमको पहिले ही बता दिया था। पार्वती हैरान सी हुई बोली, भगवन! मैं सोच रही हूँ कि यह लोग नाना प्रकार के कष्ट उठा कर जो यहां टहलने के लिये, आलू छोले खाने के लिये और खेल तमाशे देखने के लिये इतनी दूर आते हैं वह अपने ही शहर में इन बातों को नहीं कर सकते? शिव जी बोले पार्वती तुम्हें पता नहीं है इस हर की पैड़ी पर किनका अधिकार है। इस प्लेट फार्म पर किनका कब्जा है। यह भागीरथी देवताओं की मातेश्वरी है। परन्तु उसके पांव में पहनाई

हुई फौलादी बेड़ियां इसके शत्रुओं के हाथ में है। इस सैंट फार्म पर देवता लोग आवारा गर्दी कर सकते हैं, चाट के पत्ते चाट सकते हैं, इधर उधर की निरर्थक गप्पें हांक सकते हैं। परन्तु अपने हित की बात नहीं सोच सकते। यदि बैठकर सोचने की कोशिश करेंगे तो उनको पकड़ लिया जावेगा, और जेल में बन्द कर दिया जावेगा। यह डर की पौड़ी है। इस पर धर्म कथा तक नहीं हो सकती। वह लोग जिनको न तो गंगा माई से प्रेम है, नहीं हिन्दुत्व से जिनको लगाव है, आर्य संस्कृति से जिनको घृणा है, हिन्दु देवी देवताओं से जिनका बैर है, वह लोग इस गंगा माई की किस्मत के कर्त्ता धर्त्ता हैं। वह जो इतने घुमक्कड श्रद्धालु फिर रहे हैं इनकी इतनी तो हिम्मत नहीं कि तनिक इस अपनी मातेश्वरी को तो विधर्मियों से छुड़ाले। प्रतिवर्ष यहां हजारों ही यात्री आते हैं। जब कभी कुम्भ होता है या ग्रहण लगता है, तब तो बीस २ लाख तक गंगा माई के भक्त इकट्ठे हो जाते हैं !! किन्तु सब आलु कचालु खाने के लिये और बस !

शिवशम्भू ! लगा दे तम्बू ।
कैलाश के राजा। आ भंग पलाजा,
लगे दम...मिटेग़म...बम्म बम्म बम्म।

पार्वती चकित-नयनों से देखने लगीं। यह तन-बदन पे राख मले-नंग धड़ंग स्थूल काय भूत कहां ! भगवन् यह तो हमारी गणसैना प्रतीत हो रही है। लाखों ! भगवन् जिस गंगा माता के इतने फक्कड़ भगत हों उस गंगेश्वरी की ऐसी दुर्दशा क्यूं। क्या यह लोग अपनी राष्ट्रमाता के लिये कुछ नहीं करते हैं ? क्या गौ-ब्राह्मणके दुःख को दूर करने के लिये यह कुछ नहीं करते हैं ? आर्य देवियों की रक्षा के हेतु क्या यह कुछ नहीं करते हैं ? पतित पावनी भगवती भागीरथी के वक्षःस्थल पे अत्याचारियों के

अत्याचारों को निर्मूल करने को यह कुछ नहीं करते हैं ? जिस देश तथा जाति में ऐसी बीत-राग सैना करोड़ों की संख्या में विद्यमान हो उसकी ऐसी दुर्दशा क्यूं—?

कैलाशपति बोले; पार्वती यदि ये लोग कुछ करने धरने वाले होते तो आज यह भारतवर्ष पाप कुण्ड काहे को बना होता। इन दुष्टों ने तो साधू शब्द को ही लीक लगा दी।

बुभुक्षितः किन्न करोति पापम्।

यह सब पेट पालने के बहाने हैं। भोले भाले लोग गेरुवे कपड़े अथवा जटायें देखकर इन्हें हल्वे पूरी खिलाते हैं–तूही सोच पार्वती ! बदन पर राख मलने से यदि हल्वा पूरी मिल जाये तो सुबह से शाम तक टोकरी ढ़ोकर चने कौन चाबे।

पार्वती बोली भगवन् ! महनत तो इन्हें भी काफी करनी पड़ती है। अग्नि तापते हैं, शीत सहते हैं, नंगे रहते हैं, "रहते हैं, सहते हैं" तो क्या किसी पर ऐहसान करते हैं। राष्ट्र को इनके रहने का तथा सहने का लाभ ही क्या ? वह देखो गंगाजी के बीच में एक ऊंचा सा पत्थर पड़ा है। वह भी तो दिन रात धूप तापता ही है न' शीत भी सहता ही है न, नंगा भी रहता है। उसकी तपस्या क्या इन साधुओं से कुछ कम है ?

पार्वती बोली भगवन् ! यदि इन मुफ्त खोरों का कुछ लाभ नहीं तो इन्हें सरकार बलपूर्वक क्यों नहीं बन्द कर देती। शिवजी बोले, देवी ! यह तो अपने ही राज्यमें हो सकता है परदेसियों को क्या पड़ी है वे इस बला को सहेड़ें। केवल एक उपाय है......

इन साधु–सड़न्तों को कोई भी अपने घर में घुसने न दे, कोई इन्हें पानी तक का न पूछे—

वह देखो पार्वती एक आदमी के पीछे कैसे चीलों की तरह यह भिक्षुक लगे हैं बेचारे के पास कुछ पाईयां होंगी।

देखा यह अवस्था है उस स्वर्ण भूमि की जिसकी गगन चुम्बी अट्टालिकाओ को देख कर तू भी तो एक दम प्रसन्न हो उठी थी। यह पंच पुरी है। गंगाजो इसी पंचपुरी में से गुजरती हैं। और यह तूने अभी इस धर्मक्षेत्र की एक ही झलक देखी है। हृदय को थाम लेना, अब इस गंगा के साथ २ हमने आगे को जाना है। और सिवाय मुहल्लों के बीच में से जाने के और कोई छोटा रास्ता नहीं। परन्तु दिल को थाम लेना। यह रात का समय है। बल—पूर्वक भगाई हुई अबलाओं को चीख और पुकार तुम्हारे कानों में पड़ेगी। भ्रूण हत्या तथा गर्भपात के पाप कुण्ड में जल रहे नरपिशाचों का क्रन्दन भी तुम्हें सुनाई देगा। असहाय अबलाओं को हाहाकार भी तेरे कानोंमें पड़ेगी। परन्तु सुना अन-सुना करके चलती आना। यह तो इस तपोभूमिका प्रशाद ही है।

"गंगा जी में तो नहाने से पाप कटते हैं" बड़े बड़े शास्त्रकारों तक ने ऐसा कहा है। जो गंगाजी "योजनाणाम् शतैरपि" सैंकड़ों योजनों से भी अपने प्यारे भक्तों के पापों का नाश करने का ठेका लेती है वही गंगा जी इन अपने बगला भगतों को क्यु नहीं पवित्र कर देती! जब से यहां आए हैं एक भी तो सुख का सांस नहीं लिया! भगवन् इस हरिद्वारका नाम तो "पाखण्ड द्वार"होना चाहिये हम तो एक बार आगये सो आगये फिर तो कभी इधर मुंह तक नहीं करेंगे।

बस पार्वती पहली ही सीढ़ी पर थक गई! अभी तो गढ़मुक्तेश्वर जाना है, अभी तो प्रयागराज, बाराणसी, गयाधाम, पाटलीपुत्र में गंगा जी की शोभा देखनी है।

कैलाशपर्वत से हरिद्वार तक पैदल यात्रा तो सम्भवत: पार्वती को थका नहीं सकती थी परन्तु इन निराशाओं तथा घटनाओं ने गंगा जी की इन बिपत्तियों ने प्रार्वती को थका दिया। और उस

समय कनखल के पुल के पास एक ओर को दक्ष सुता बैठ गई और लगी गगन--सुता भागीरथी की ओर टुक टुक देखने······

तुम्हें समझाया था, मत अवनितल के दुःख सहो,
तुम्हें समझाया था मुदित मन सुरपुर माहीं रहो।
तुम्हें समझाया था मत तज के जाओ शिव-जटा,
जो कहना करती ! क्यूं--इस विधके सहती दुःख भला ॥

शिव जी ने देखा पार्वती के नेत्रों से जल की धारायें बह रही थीं, बोले ! पार्वती ग'गा देवी से मिल लिया चलो ! ! अब अपनी कैलाश कुटिया में लौट चलें।

"गंगा देवी को भी साथ ही ले चलें।"

"ले चलें ! परन्तु सप्तसरोवर के पहिरेदार और यह गङ्गादेवी की कमाई खाने वाले मक्कार धर्म के ठेकेदार क्या हाथ आई लक्ष्मी को वापिस जाने देंगे ?।

तो क्या भागीरथी देवीको अपमानित तथा पददलित्त होने के लिये ऐसे ही छोड़ जाओगे ? कदापि नहीं। ......तो फिर—

मातेश्वरी भागीरथी के पाओंमें पड़ी हुई दासताकी बेड़ियों को सर्व प्रथम छिन्न भिन्न करने के लिये मुझे कैलाश पर्वत में निरन्तर कई वर्षों तक कठिन तपस्या करनी पड़ेगी। चलो पार्वती!" देव दम्पति उत्तराखंड की ओर चल दिये। कनखल की ओर से एक धीमी धीमी समीर अपने करुणापूर्ण शब्दों में गाने लगी।

शिरः शार्वं स्वर्गात्पशुपति शिरस्तः क्षितिधरं।
महोध्रादुत्तुङ्गा दवनि भवनेश्चापि जलधिम् ॥
अधा गङ्गासेयं पदमुपगता स्तोकमथवा ।
विवेक भ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः ॥

भारत-स्तवन

अयि त्रिभुवन मन मोहिनी,
निर्मल सूर्य करोज्ज्वल धरणी।
नील सिन्धु जल धौत चरण तल।
अनिल विकम्पित श्यामल अञ्चल।
अम्बर चुम्बित भाल हिमाश्चल॥
शुभ्र तुषार किरीटिणी।
अयि त्रिभुवन मन मोहिनी॥
प्रथम प्रभात उदय तव गगने।
प्रथम सामरव तव तपोवने।
प्रथम प्रचारित तव बन भवने॥
ज्ञान धर्म कत काव्य काहिनी,
अयि त्रिभुवन मन मोहिनी।
आर्ये कल्याणमयी तुमि धन्य।
देश विदेश वितरती अन्न।
जाह्नवी यमुना विगलिताकरुण॥
पुण्य पीयुष स्तन वाहिनी,
अयि त्रिभुवन मन मोहिनी।

श्री भगवान् उवाच

इदं तीर्थमिदं तीर्थं भ्रमन्ति तामसाजनाः ।
आत्मतीर्थं न जानन्ति कथं मोक्षो वरानने ॥

हे देवी ! तमोगुण युक्त लोग इधर उधर निरर्थक ही व्यर्थ समय का, धन का तथा शक्ति का ह्रास करते हैं—परन्तु वास्तव में जिस उपाय से आत्मा का उत्थान होना है उस यम नियम का पालन कोई विरला ही करता है।

मनो वाकाय शुद्धानां राजस्तीर्थं पदेपदे ।
तथा मलिन चित्तानां गङ्गापि कीटकाऽधिका ॥
प्रथमं चेन्मनः शुद्धं जातं पाप विवर्जितम् ।
तदा तीर्थानि सर्वाणि पावनानि भवन्ति वै ॥

हे देवी ! काम, क्रोध, लोभ, तृष्णा, द्वेशराग, मद, निद्रा, ईर्षा, अहङ्कार आत्मा जबतक इस देहसे नहीं गये तबतक बेचारी गङ्गा का पानी भी कुछ नहीं कर सकता।

गङ्गा तीरे हि सर्वत्र बसन्ति नगराणिच ।
ब्रजाश्चैव करा ग्रामाः सर्वे खेटास्तथा परे ॥
निपादानां निवासाश्च कैवर्त्तानां तथा परे ।
हूणवाणाम् खसानां च म्लेच्छानां द्विजघातिणाम् ॥

इसी गङ्गा के किनारे पे इतने बिधर्मी बसते हैं, वह तो अशुद्ध के अशुद्ध ही रहे।

गङ्गा तोयेन कृत्स्नेन मृदगारैश्च नगोपमैः ।
आमृत्योः स्नातकश्चैव भावदुष्टो न शुध्यति ॥

भावदुष्टोऽम्भसिस्नात्वा भस्मना च न शुध्यति ।
भावशुद्धश्चरेच्छौचमन्यथा न समाचरेत् ॥
नृणाम् हि चित्त कमलम्प्रबुद्धमभवद्यदा ।
प्रसुप्तं तमसा ज्ञानं भानोर्भासा तदा शुचिः ॥
वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च सयंमः ।
अहिंसा गुरु सेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥

चाहे पर्वत के बराबर मिट्टी मले और गङ्गा के सारे जल से मृत्यु पर्यन्त स्नान करता रहे तो भी दुष्ट स्वभाव और दुष्ट विचार वाला मनुष्य शुद्ध नहीं हो सकता। जल के स्नान से कभी मुक्ति नहीं होती, आत्मज्ञान ही मुक्ति का हेतु है। वेद का पढ़ना, उसके आदेशानुसार तप करना, इन्द्रियों को वश में करना, किसी को दुःख न देना, गुरू की सेवा करना, सत्य बोलना यह हैं मोक्ष के मार्ग—

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन् शुध्यति ।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति ॥
सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं तीर्थं मिन्द्रिय निग्रहः ।
सर्व भूत दया तीर्थं सर्वत्रा जैत्रमेव च ॥

दानं तीर्थं दमस्तीर्थं सन्तोषस्तीर्थ मुच्यते ।
ब्रह्मचर्यं परं तीर्थं तीर्थञ्च प्रिय वादिता ॥
ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं पुण्यतीर्थ मुदाहृतम् ।
तीर्थानामपि सततं विशुद्धि र्मनसः परा ॥

मनो बिशुद्धं पुरतस्तु तीर्थं,
वाचायमस्त्विन्द्रिय निग्रहस्तपः।
एतानि तीर्थानि शरीर जानि,
स्वर्गस्य मार्ग प्रति वेदयन्ति ॥

भारतमाता बोली, भगवन्! आपका कहना तो शत-प्रतिशत ठीक है। वास्तव में इस समय तीर्थ व्यभिचार के अड्डे बने हुए हैं। परन्तु इसमें श्री गंगाजी का तो दोष नहीं है। आपने जिस अध्यात्मिक तीर्थ का वर्णन किया है, उसे तो प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवनमें धारण करनाही चाहिये, परन्तु भगवन्! मैं जानना चाहती हूँ 'क्या ऐसा करने से तीर्थों पर दहक रही पापाऽग्नि शान्त हो जायगी।'

श्री भगवान् बोले, देवी! पापाऽग्नि तो शान्त नहीं हो सकती। सहस्रों बर्षों से करोड़ों अर्बों मन गंगाजल भी इसको शान्त न कर सका। अब तो एक नया ही हरिद्वार बसाना पड़ेगा, जहां न रेल जाती हो, न तार जाता हो, न डाक जाती हो, जहां शेर दहाड़ते हों, हाथी चिंघाड़ते हों, चारों ओर गगन चुम्बी शैल शिखायें मनको अह्लादित करती हों, झोंपड़ियां, शान्तीकुटीर, तपोबन, गंगाजी के तटपर सच्चे साधु, ज्ञान निष्ठ महात्मा, त्यागी, तपस्वी, कुलपती अपने विद्यार्थियों सहित वहां विश्राम करते हों, कोई सड़क न हो, कोई प्लेटफार्म न हो, वृक्षों की छाया में इस गगन की छत के नीचे इस भूतल रूपी फर्श पे जहां वेद वेदान्त, की शिक्षा मिलती हो, ऐसा हरिद्वार बसाओ।

आओ इक हरिद्वार बसायें।

आओ इक हरिद्वार बसायें !

दुःख का जां पे लेश नहीं हो।
वैभव का अवशेष नहीं हो।
पाखण्डी सा वेष नहीं हो।
प्रकृति का इक साज सजाएं। आत्म ज्ञान की ज्योत जगाएं॥

ऋषियों के हों जहाँ तपोबन।
आह्लादित हो देख उठे मन।
निर्भय कूंज रहे पक्षिगण।
ब्रह्म घोष का नाद लगाएं। सत्य- सनातन- ध्वजा फहराएं॥

सत्य अहिंसा के दो तट हों।
सेवा त्याग तपस्या पट हों।
भक्त तीस कोटि सर-कट हों।
प्रेम की गंगा में सब न्हाएं। मन के सारे भेद भुलाएं॥

वहाँ एक मदिंर सुन्दर हो।
भारत माता का मदिंर हो।
स्वतंत्रता देवी का घर हो।
श्रद्धा के जा फूल चढ़ाएं। मातृभूमि पर बलि बलि जाएं॥

स्वतंत्रता की ज्योत जगी हो।
सदाचार हर की पैरी हो।
भक्तों की वाँ भीड़ लगी हो।
हाथ जोड़ कर सीस झुकाएं। भारत मां की जय जय गाएं॥

भारत माता बोली, भगवन् आप तो आकाश में उड़ते हुये हवाई किले बना रहे हैं। जहां मैं बैठी हूं यदि आप यहां होते तो सम्भवतः यह शब्द न कहते। चप्पा २ जमींन तो रोक रक्खी है महकमा जंगलात (Forest Department) ने। मैं हरिद्वार कहां बसाऊं !

नया हरद्वार बसाओ ! क्या नया हरिद्वर बसाने से पुराना हरिद्वार अपने आप बंद हो जायगा ? सिनेमा स्टारों के जिन्दा नाच को छोड़, कौन मूर्ख हाथियों और शेरों की दहाड़ सुनने केलिये आवेगा ! विद्युत की धीमी धीमी रोशनीमें जौरजट्ट की चमकीली साढियां, पैरसी ढंगका जैम्पर पहने हुए, भिन्नर प्रान्तों की षोडषियों को छोड़ कर कौन जटाधारी बृद्ध साधुओं को देखने आवेगा:-

नया हरद्वार बसाओ ! कितना टन्टा करना पड़ेगा। भगवान सर्व शक्तिमान हैं। लय प्रलय आप के एक खेल मात्र हैं क्यों न एक नया संसार ही बना डालो।

श्री भगवान् उवाच ।

आत्मो नदी भारत पुण्य तीर्था ।
सेवा हृदा शीलतटा देयोर्मिः ॥
तस्यां स्नातः पूयते पुण्य कर्मा ।
तस्मात् सदैव भव् देशभक्तः ॥
पुण्योऽयं भारतोवर्षो हिन्दुस्थान प्रकीर्तितः ।
वरिष्ठः सर्व देशानां धन धर्म सुखप्रदः ॥
यस्यास्तु मुखमप्रेक्ष्य जीवतिस्म सर्व जगत् ।
श्यामला सुफला भूमि स्वर्गादपि गरीयसी ॥

यस्या सागर पर्यन्ता पृथिवी वशवर्तिनी ॥
जाया सा पूर्वर्षिणां दुहिता विष्णु प्रभोः स्वयं ।
शीतलाँ सरलां सुजलां भारतीम् सुरसेवितामु ।
कामधेनुम् पत्यिक्त्वा कुता भ्रमयन्ति दुर्भगाः ॥

बन्दौं भारत भूमि सुहावन
सजल, सफल, श्यामल थल सुंदर।
मलय समीर चलत मन भावन,
हिमकर निकर प्रकाशित रजनी। कुसुमित लता ललित छबिवारी।
दिन मणि उदित मुदित मनपंछी, विकसित कमल नयन सुखकारी।
तीस कोटि सुत जा के गर्जत,
साठ कोटि करवाल उठाय।
कौन कहत तोहि अबला जननी,
प्रबल प्रताप चहुं दिशि छाये।
धर्म कर्म और मर्म तुही है, शक्ति मुक्ति देनी जय करनी।
तू जननी आराध्य हमारी, बहु बल धरनी रिपु दल दलनी।
सुस्मित सरला भूषित बिमला
धरनी भरनी जननी पावन।
सकल जगत कर जोरे बन्दन,
जय जय भारत भूमि सुहावन।
तू दुर्गा दस आयुध धारिनी, तू ही कमला कमल विहारिनी।
सुखदा, वरदा, अतुला, अमला, बल विद्या दायिनी तारिनी।

.. ..

श्री भगवान बोले, भारत माता ! भूतलका स्वर्ग यह जो भारत वर्ष है, जिस में देवता लोग भी जन्म लेने को तड़पते हैं—स्वर्ग से भी अधिक सुन्दर यह तेरा घर क्या तीर्थ नहीं है ?

यस्यामुदयते पूर्व सर्व लोक प्रभावनः
सविता यत्र सन्ध्यायां साध्यानाम् वर्तते तपः

सब से पहिले जहां हुआ था प्रकृति नटी का सुन्दर नृत्य,
देखा गया जहां धाता का पहले पहल अनोखा कृत्य।
सब से प्रथम सभ्य हो कर दी जिसने जग को भिक्षा ज्ञान,
जिसने पहिले प्रभु को पाया धन्य धन्य वह हिन्दुस्तान ॥

अत्र वेदान् जगौ पूर्वं भगवान् लोकभावनः।
अत्रैवोक्ता सवित्रासीत् सावित्री ब्रह्मवादिषु ॥
अत्र दत्तानि सूर्येण यजूषिं द्विजसत्तम्।
अत्र लब्ध वरः सोमः सुरैः क्रतु षुपीयते ॥

वेद रूप ईश्वर की बाणी जहां सुनाता है सुखमूल,
षट दर्शण के मुक्ति सुधा वर्षण से भव के मिटते शूल।
भारत रामायण शिक्षामृत जंह त्रीविध तप हारी है,
देव दुर्लभा पुण्य भूमि वह भारत माता प्यारी है ॥

अतो मूलं सुराणाम् श्रीर्यत्र शक्रोऽभ्यषिञ्चयत्
सुर राज्येन विप्रर्षे देवैश्चात्र तपश्चितम् ॥

तु ऋषियों की पुण्य भूमी है देवों का है जन्मस्थान,
तुझ में लेकर जन्म ऋषिगण गौरव माने महामहान् ॥

देवानामपि दुर्लभं स्थलमिदं पापौघना शत्तमं।
पूर्वोपार्जित पुण्य पुञ्ज गमकं पुण्यैर्जनै प्रीप्यते ॥
दुःखाम्भो निधिमग्न जन्तुनिवहा स्तेषाँकथम्ः निष्कृति,
ज्ञात्वा तद्धिविरञ्चिना विरचिता देवीत्वदयीम् गृहम् ॥

भारत तुझ में जन्म लैन को तरसें देव अदेव,
भारत पुण्य कर्म सों मिलिहैं तव पदपङ्कज सेव।
मर्त्य लोक में आर्त जनन का किस विध होगा त्राण,
त्युं ही रचा प्रभु ने भारत भूतल स्वर्ग समान ॥

एतद्धावं त्रीलोकस्य स्वर्गस्य च सुखस्य च।
पिबन्ति मुनयो यत्र हविर्धूमंस्म् धूमपाः ॥

प्रकृति जहां प्रति दिवस नवाम्बुज तम्बु तानत।
जंह जगदीश्वर स्वयं आपनो गृह कर मानत॥
शीत न जहां असह्य उष्णता अधिक न होती।
ऊषा जल कण रूप बिछावत जहं नित मोती॥

मातृभूमिः पितृभूमिः कर्मभूमिः सुजन्मनाम्।
भक्ति महन्ति देशोऽयं सेव्यः प्राणैर्धनैरपि॥

यह हमारी मातृभूमि है, यह हमारी पितृभूमि है। लोग सुजन्मा हैं—जिनके जीवन बहुत अच्छे हुए हैं, रामकृष्ण बुद्ध आदि महापुरुषों के, महात्माओं के, आचार्यों के, ब्रह्म-ऋषियों के, और राजर्षियों के, गुरुओं के, धर्मवीरों के, शूरवीरों के, दानवीरों के, स्वतन्त्रता के प्रेमी देश भक्तों के, उज्ज्वल कामों की यह कर्म भूमि है। इस देश से सबको परम भक्ति करनी चाहिये—और प्राणों से और धन से भी इसकी रक्षा करनी चाहिये।

कहते हैं कि देवता लोग यह गीत गाते हैं कि वे लोग धन्य हैं जिनका जन्म इस भारत भूमि में होता है, जिस में जन्म लेकर मनुष्य स्वर्ग का सुख और मोक्ष दोनों को पा सकता है।

अत्र देवर्षयो नित्यं पितृलोकर्षयस्तथा।
तथा राजर्षयः सर्वे निवसन्ति गतव्यथा॥

हरिश्चन्द्र सा कहां हुआ था, पैदा नृप ऋपि सत्य प्रतिज्ञ ।
कपिल कणाद सदृश थे जिसके सुवन सुभग षटशास्त्रऽभिज्ञ ॥
जिसके बच्चों का रहता था सिंहों के दांतों पर ध्यान ।
तोड़ फोड़ कर गिन लेने का, धन्य धन्य हिंदुस्तान ॥

अत्र विष्णु सहस्राक्षः सहस्र चरणोऽव्यया ॥
सहस्र शिरसः श्रीमानेका पश्यति मायया ।

बिबिध रूप धारण कर हरि ने लिये जहां थे शुभ अवतार ।
तीर्थ तपोबन जहां अमित हैं महिमा जा की अपरम्पार ॥
जहां तपस्वी कुल सुयशस्वी रहते जन हितकारी हैं ।
मातृ भूमि वह देव दुर्लभा भारत माता प्यारी है ॥

यस्यां जाताः परम पुरुषा रामकृष्णाद्य देवा ।
वन्द्यालोके विमलचरितैंब्रह्मचर्यं चरन्तः ॥

स्नेहार्द्राशा निखिलमनुजान् पुत्रवन्मण्यमाना ।
ब्राह्मी माता गुरुकुल मही माननीया मुनेन्द्रैः ॥

रामकृष्ण ने जन्म लिया था जिसमें दिखलाने को खेल ।
जहां हुआ था कुरुक्षेत्र में अनुपम योद्धाओं का मेल ॥
आज तलक भी जिन वीरों का सकल जगत करता है गान ।
धन्य धन्य उन वीरों की मां धन्य प्यारा हिन्दुस्तान ॥

गांधीदेवो वसुकुल-विधु नेहरूवंशा-वतंसो ।
यत्रास्ते सा ऋषिकुलमही वन्दनीया बुधेन्द्रैः ॥
दिव्यं ज्ञानं पय इव सदा पाययति या पवित्रं ।
दिव्या माता ऋषिकुल मही मानवैर्माननीया ॥

देवाः बाल तिलक महात्मनाश्च साबरमती ऋत्विजः,
तीरथ राज किशोर जवाहर कुमुद चन्द्रावतंसांशंजो।
लज्जा पालक लाजपत नरहरी बंगाल भानूसुमाप,
सूराणाम् जननी सुरेशमननी देवी जगत् पावनी ॥

अब भी जहां खिले रहते हैं योगी हो कर भी अरविंद।
जिनका रस चखने आते हैं दूर विदेशों से सुमलिन्द ॥
गान्धी सा नरदेव जहां है अखिल विश्व का पुरुष प्रधान।
जिस का है सबको अति गौरव धन्य धन्य है हिन्दुस्तान ॥

जिन वीरों ने किया लोक लोकान्तर में उज्ज्वल तव भाल,
वे अवशिष्ट आर्य-गुण गरिमा कीप्रचण्डतम ज्योति विशाल।
गांधी, बोस, जवाहर जैसे भारत वे तव अनुपमलाल,
जागृत हो, उठ! आजधर्म रक्षा हितनिज करवालसम्हाल ॥

याकल्याणिनजगति कृतिनामेक एवाग्रगण्या।
सतप्तानां परमशरणम् भाजनं तद्विधानाम् ॥
संस्काराणां शुभकरगुणा नान्च या संप्रदात्री।
धन्या धात्री रघुकुल मही मानवैर्चयनीया ॥

जो सदैव देदीप्यमान था विश्व गगन में सूर्य समान।
सभी देश थे जिसके आगे दीना-तारावली समान ॥
जिसकी आभा पा कर चमका अन्धकार संयुत यूनान।
खिले कमलबन नील सरित के धन्य २ वे हिन्दुस्तान ॥

अत्रमूलं हिमवतो मन्दरं याति शाश्वतम्।
अपि वर्ष सहस्रेण न चान्तोऽस्याधि गम्यते ॥

वन उपबन ऋतुराज जहां मालिन सम साजत ।
पुष्पान्वित फल नमित लताद्रुम जहां विराजत ॥
कलरव करि करि विहंग जहां मनुजन दुःखमोचत ।
चपिल चन्द्रिका जहां मेव माला विचरोचत ॥

उत्तर में है जहां हिमाश्चल औषधियों का वर भंडार ।
दक्षिण में मलयाचल सुंदर चंदनबन सौरभ सुखसार ॥
विन्ध्यमाल नीलाद्रिक गिरी की जहं प्रकृति छवि न्यारी है ।
मातृ भूमि वह देव दुर्लभा भारतमात प्यारी है ॥

अत्र राज्येन विप्राणां चन्द्रमाश्चाभ्य षिञ्चयत् ।
अत्र गङ्गा महादेवीः पतन्ति गगनाच्युताम् ॥

शीतल सुखद समीर बहत जहँ नित मन मोहत ।
कालिन्दी कल नाद गंगजल मिली जहं सोहत ॥
नदी नीर जंह विपुल भारतीयन दुःख खोवत ।
मग महं करत कलोल भव्य भारतपद धोवत ॥

अङ्ग वंग काशमीर कौशला जहं शुभराजत ।
महाराष्ट्र सौराष्ट्र राजपूताना भ्राजत ॥
साधारणतरु जहां प्रकृति उपवन सों सोहत ।
हरी हरी सी जहं घास महा मुक्तावली मोहत ॥

गङ्गा यमुना की धारायें पावन करती जिसका अङ्ग ।
कृष्णा सिन्धु नर्मदा सरजु जहां दिखाते लहर उमंग ॥
महा नदी बहती है जिसमें जल जिसका मलहारी है ।
देव दुर्लभा पुण्य भूमि वह भारत मात हमारी है ॥

गायन्ति देवाः किल गीतिकानी ।
धन्यास्तु ये भारत भूमि भागे ॥
स्वर्गोऽपवर्गस्य च हेतु भूते ।
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥

मन्दाक्रान्ता

वे ही भागी अमर सच हैं, जो यहाँ जन्म लेते ।
भद्रे ! तेरी सुखमयी अहा गोद में खेल लेते ॥
कल्याणी है तव रज यही भूति सम्भूति कारी ।
बैकुंठश्री, न तुल सकती देवी तेरे कणों से ॥

दानी तू ही सकल जग है तेरा भिक्षु निराले ।
विद्या एवं सुधन जन से विश्व सम्पोषिका है ।
शोभा तेरी अजब कुछ है लोक लोकान्तरों में ।
निर्द्वन्दे ! है अचल जग में कीर्ति तेरी निशानी ॥

शार्दूलविक्रीडितम्

श्वेताभा परिशोभिनी गगन की सम् कच्तता धारिणी ।
अभ्राभा–रजतासिता सित-शिखा उच्चोच्च ओलालया ॥
विन्ध्यै वम् जग व्यापिनी हिमवती सत्क्रान्ति धीश्रीमती ।
वक्षोजा, श्रिय गन्धमादन परा भूभारती राजती ॥

श्यामल शस्य अलंकृता, फलवती, संजीवनी-उर्वरा ।
वृक्षों से, द्रुमसे,लता अवलि से,छाया फलोत्पादिनी ॥
सद्- गंधस्य-प्रसारिणी बलप्रदा, पंथी-पथाश्रयनी ।
जीवोंकी जनका, अहा जगत की, भुक्ता व्यथा हारिणी ॥

नाना औषधि शङ्कुला, सुविमला बाधा-त्रिधा ध्वंसिनी।
माङ्गल्या, शुभदा, प्रमोद-जननी विश्वम्भरा-शोभिनी॥
पद्माकान्त-क्रिडास्थली-वसुमती, वीर प्रसु व्यापिनी।
धन्या-कीर्ति-समन्विता, अनुपमा क्षान्ता-क्षामा भारती॥

मुक्ताहार विहार-रुक्ममणि की है खानि लोलालया।
संव्यक्ता-कलरत्नदा बस यही है रत्नगर्भा धरा॥
शोभा से, बलसे, अहा विभवसे, विद्या कला बुद्धिसे।
बैकुण्ठस्थ धरा लजा छिप रही है व्योम आलोक में॥

गोदी में तुझ को हिमाद्रि-भर के बेटी बना पालता।
रक्षा से निज स्मृद्धिसे, विभव से है आपदा टालता॥
मुग्धा सी भर अङ्क में प्रकृति है श्रृंगार श्रृङ्गारती।
तेरी जो लखती विदिव्य सुषमा सर्वस्व है भारती॥

शौर्यों से बल-वीरता विभव से है काल भी कांपता।
ब्रह्मा, विश्नु महेश भी तक गये आसन्धि ही हैं जिसे॥
सींचे हैं निज वृक्ष को रुधिर से जो जन्म भू लाडिले।
सौभाग्यी बल राशी की बस यही उत्पादिका है धरा॥

धन्या मिष्ट--पयोधरा--सरवती--पादाब्धि संचुम्बिता।
पीयूषाम्बु सरोवरा, रदशुभा, पद्मा--समापूजिता॥
मुक्ता कीर्ति--कलाधि दिव्य पूषिता श्रोतस्वतीशोभिनी।
मेघों से असितासिता भरत की है मेदिनी मोहिनी॥

भारत तुम्हारे हीतो कर में है जग की पतवार।
भारत तुम्हारे जीने से ही जीता है संसार॥
तुम जगती का स्नेह द्वार हो, हो तुम जीवन दान।
तुम पालनता की प्रतिमा हो, हो तुम जयका गान॥
देवी तुम साहस शक्ति हो, हो तुम आशीर्वाद।
तुम आशा की अमरलता हो अमर गीतिका नाद॥

चालीस लाख! गुरुका वीर दल वह पंजाब में है खड़ा,
हेमाद्री तव सन्तरी हिमालय व्योमान्तरे छारहा।
गाती है तव गीत को गगनगा, धारा सुधा की वही,
पावन-पुण्य-पुणीत गौरवमयी धन्या यह भारत मही॥

तीस कोटि संतान तुझे जब कहती अपनी मात,
क्यों मिट्टी में बैठी है तु क्यों यह मैले गात।
क्यों तु इतनी दीन हुई है क्यों है तुझ को क्लेश,
क्यों लज्जा से सर है नीचा क्यों दुःखका है लेश।
युगल नयन क्यों सजल हुये हैं क्यों शर रूखे केश॥

गो रक्षक गोरखा सिपाही बीर धीर तेरे ही लाल,
चालीस लाख सिंह सूरमा तेरी पाँचाली की ढाल।
अगम अगाध सदा अपराजित अरि दलदलन काल विकराल
उठ हो जागृत आज धर्म रक्षा हित निज करवाल सम्हाल॥

ब्राह्मी स्वरूपा जन्मदात्री ज्ञान गौरव शालिनी
प्रत्यक्ष लक्ष्मी रुपिणी धनधाम पूर्णिति पालनी।
दुर्घर्ष रुद्राणि स्वरूपा शत्रु सृष्टि लयंकरी,
वह भूमि भारत वर्ष की है भूरि भवभय हारिणी॥

जय जय प्यारा भारत देश ।
जय जय शुभ्र हिमाचल श्रृंगा ॥
कलरव निरत कलोलिनि गङ्गा ।
भानु प्रताप चमत्कृत अङ्गा ॥ रहे स्वतन्त्र हमेश॥

वन्दे-मातरम्

सुजलाम्, सुफलाम्, मलयजशीतलाम्
शस्य श्यामलाम्·········मातरम् बन्दे

शुभ्र ज्योत्सनाम्, पुलकितयामिनीम्
पुल-कुसुम-मृदु-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्-
सुखदाम् - बरदाम् - मातरम् बन्दे

श्यामलाम्, सरलाम्, शुसमिताम्, भूषिताम्
धरणीम् - भरणीम् - मातरम् बन्दे
पञ्चत्रिंशकोटि कण्ठ कल कल निनाद कराले,
पञ्चत्रिंशकोटि भुजैर्विद्युत स्वर करवाले ।
के बोले मा तुमि अबले
बहु बल धारिणी,
नमामी तारणी
रिपु-दल संहारणी—मातरम्—बन्दे मातरम्

श्री भगवान् बोले !

भारत माता–यह पवित्र भारतवर्ष हिन्दुस्तान एक हरिद्वार है, जहां भारत माता का मन्दिर है, स्वाधीनता की देवी उसके अन्दर प्रतिष्ठित है। त्याग, तपस्या, बलिदान, सत्य, अहिंसा, सन्तोष तथा सदाचार के घाट हैं और हिन्दू धर्म की पवित्र गङ्गा जहां बहती है……।

उत्तमः सर्व धर्माणां हिन्दू धर्मोऽयमुच्यते ।
रक्ष्यः प्रचारणीयश्च सर्वलोक हितैषिभिः ॥
चातुर्वर्ण्यं यत्र सृष्टं गुण कर्म विभागशः ।
चत्वाराः आश्रमाः पुण्याः चतुर्वर्गस्यसाधकाः ॥

सब धर्मों से यह हिन्दु धर्म उत्तम है। अस्तु ! ईश्वर प्राप्ति के इच्छुक को इस धर्म के स्रोत में स्नान करना चाहिये और संसार के कल्याण के लिये इस धर्म का सन्देश घर घर पहुंचाना चाहिये।

भारत माता बोली !

भगवन् ! आपका कथन सत्य है।·हिन्दु धर्म की महिमा तो स्वयं प्रकृति ही प्रतिक्षण गा गा कर सुना रही है। आत्मा का विकास, जीवन का मुख्योद्देश्य त्यागवाद, तपस्यावाद सब इसी धर्म की देन हैं। भारत वर्ष ही नहीं अपितु सारे संसार की शांति के लिये हिंदु--धर्म का संदेश अत्यन्त आवश्यक है—परन्तु भगवन् ! तुम्हें पता है "इस हिन्दुस्तान में हिंदु शब्द का उच्चारण मात्र भी फिरका परस्ती समझा जाने लगा है?" आप कहते हैं संसार के कल्याण के लिये हिन्दु धर्मका संदेश घर घर पहुंचाना चाहिये, परन्तु आज पतित पावनी त्रीवेणी के तट पर यह ध्वनि उठ रही है "भारत वर्ष के कल्याण के लिये

हिंदुत्व को भूल ही जाना चाहिये" और हे भगवन् ! बन्दे मातरम् के बिमल गीत में भी जिनको विष दिखाई देता है, राष्ट्र भाषा देव बाणी हिन्दी की शक्ल तक से जिनको घृणा है —प्रताप, शिवा, गोविन्द के नाम तक को जो सुनना नहीं चाहते—अमृत प्रदायणी गौमाता से जिन को परले दर्जे का बैर है वे सात करोड़ मेरे ही पुत्र भला कैसे हिन्दु धर्म के प्रसार को सहन कर सकेंगे !

श्री भगवान् बोले !

भारत माता ! धर्म के नाश होजाने से क्या शान्ति होजायगी। धर्म तो शान्ति का कारण है। धर्म के बिना तो मनुष्य पशु के ही समान है। ब्रह्मवेत्ता ऋषियों के तपोबल का चमत्कार यह हिन्दु धर्म क्या कभी अशांति का कारण हो सकता है ?

सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्व भद्राणि पश्यन्तु माकश्चित् दुःखभाग भवेत् ॥
स्मर्तव्यः सततं देवं सर्व भूतेष्ववस्थितः ।
एकएवाऽद्वितीयो यः शोकपाप हरः शिवः ॥
कर्माणां फलमस्तीति विस्मर्तव्य न जातु चित् ।
भवेत्पुनः पुनर्जन्म मोक्षस्तदनु सारतः ॥
समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम् ।
एतज्ज्ञानं हि सर्वस्य मूलं धर्मस्य शाश्वतम् ॥
स्त्रीणां समादरः कार्यो दुःखितेषु दया तथा ।
अहिंसका न हन्तव्या आततायी बधार्हणः ॥

समः शत्रौ च मित्रेच तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्ण सुख दुःखेषु समः संगविवर्जितः ॥
अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः ।
धीर्विद्यो सत्य मक्रोधो दशकम धर्म लक्षणम् ॥

सत्य बोलो, किसी का धन मत चुराओ। ...सदाचार मय जीवन व्यतीत करो। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का परित्याग करो......यम, नियम, ब्रह्मचर्य्य का पालन करो...जो अपना अपकार करे उस का भी तुम उपकार करो...गौ माता की रक्षा करो निबलों की रक्षा करो, हिंसा से दूर रहो, तपो मय जीवन बिताओ अपनी आवश्यक्ताओं को कम करो, जीवन में सादगी लाओ... देश और जाति की सेवा करो... शत्रुओं पर भी दया करो माता पिता अथवा गुरु की पूजा करो ... विद्वानों का मान करो अतिथियों को अपना देवता समझो... अपने आपको राष्ट्र की सम्पत्ति समझो...जैसा कर्म इस जन्म में करोगे वैसाही फल अगले जन्म में भोगोगे।'

यह हैं संक्षेप में हिन्दु धर्म के संदेश! बता! इन में अशान्ति फैलाने वाली बात कौनसी है। अशान्ति का कारण धर्म नहीं है किन्तु अशान्ति का कारण है बीसवीं शताब्दी के पाश्चात्य संसार की पैदावार मज़हब।

भारत-माता चकित होकर बोली-यह मज़हब क्या वस्तु है ?

श्री भगवानबोले "मज़हब है बीसवीं शताब्दिके कुछेक निकम्मे स्वार्थियों को वासना-पूर्ति का एक साधन।"

धर्म ईश्वर की बनाई हुई वस्तु है। ईश्वर एक है, सत्य है, शुद्ध है, उस एक के ही भिन्न भिन्न भाषाओं में अथवा भिन्न २

क्रियाओं में भिन्न भिन्न नाम हैं। धर्म एक है दो नहीं, भिन्न २ भाषाओं में उसके भी भिन्न भिन्न नाम हैं।

धर्म है जीवन में धारण करनेवाली एक संजीवनी और मज़हब है मारकेट में नीलामी पर चढ़ाने वाली एक दो तीन। धर्म है सेवा का द्वार—त्याग-तपस्या का पथ··· मज़हब अपनी स्वार्थपूर्ति का साधन। ग़रीबों को, किसानों को लूटने का ट्रेडमार्क, अपने लिये कौन्सल तथा असेम्बली की सीटों की प्राप्ति का एक सुन्दर पेटेण्ट लेबल······ मैं दो लाख भेड़ों का गड़रिया हूँ, मुझे मेम्बरी दो, म्युनिस्पल कमिश्नरी दो, मैं नालायक हूं इस की कोई परवाह नहीं यह देखो मेरा लेबल, इसी के लिये मुझे नौकरी दो—मुझे कौन्सिल की मिनस्ट्री दो, म्युनिस्पल्टी की सैक्टरीशिप दो —यह सब स्वार्थ मज़हबके नाम पर ही पूरे किये जाते हैं। धर्म तो इन सब पर थूकता है।

भारत-उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचस्तस्य विष्णो लोकेश्वरस्य च।
उवाच भारतोवाक्यं स्निग्धं आश्चर्य पूरितम्॥
घटं भित्वा पटं छित्वा कृत्वा रासभ रोहणम्।
दत्वापि द्रविणं लोकाः कथं वाञ्छन्ति मैम्बरीम्॥
कामयन्ति न ते राज्यं न स्वर्गम् नाऽपुनर्भवम्।
मैम्बरीम् रमणीम् प्राप्तुं यतन्ते बहुशो जनाः॥
एतद्विज्ञातुमिच्छामि परं कौतूहलमहि मे।
एतत्सर्वं स्मर्थोऽसि वर्णितुं त्वं जगत् प्रभुः॥

भगवन्! संसार की आंखों में धूल झोंककर, ग़रीबों के खून-पसीने की कमाई को Election चुनाव-संग्राम में बर्बाद करके

अपनी, अपने कुल की, तथा अपनी जाति की निन्दा करा, देशकी तथा नगर की शान्ति को भङ्ग करते हैं, सहस्रों निर्धन गरीबों के शाप लेते हैं जिस मेम्बरी के लिये, वह मेम्बरी है क्या चीज ? और भगवन्, कौंसिल में जाते हुए अथवा जाने के लिये शोर मचाते हुए मैंने सहस्रों व्यक्तियों को देखा—परन्तु उसमें से तो कोई भी अपने स्वार्थ को पूरा करने नहीं गया। देश की सेवा के लिये, मुल्को मिल्लत के लिये, अपनी कौम के लिये। भगवन् इस म्युनस्पल्टी अथवा कौंसल में गये बिना क्या मुल्को मिल्लत की सेवा नहीं हो सकती ?

श्री भगवानुवाच

शृणुध्वं संप्रवक्ष्यामि मैम्बर्याः निखिलान्गुणान् ।
येषु मुग्धः जनास्तस्याः प्राप्त्यर्थं प्रयतन्तिवैः ॥

भारतमाता ! ये मेम्बरी क्या है और इसको पाने के लिये मूर्ख लोग क्यु मरते फिरते हैं। ले मैं तुम्हें विस्तार पूर्वक इस रहस्य को कहता हूं।

कलौ कामदुधा चुंगी सर्वैश्वर्य प्रदायनी ।
तस्याः प्रसादता शीघ्रम् प्रसिद्धः पुरुषोभवेत् ॥

हे देवी इस कलि काल में चुङ्गी की मेम्बरी सब प्रकार के ऐश्वर्यों को देने वाली काम धेनु गौ है। इस मेम्बरी के प्रताप से मनुष्य की सब मनो कामना पूरी हो जाती हैं।

मैम्बरस्यतु यावन्तो जगत्यां बन्धु बान्धवाः ।
सर्वेषां चुंगीमध्येतु सुलभा भवति नौकरी ॥

सब से पहली बात तो ये होती है कि चुङ्गी के मेम्बर के सब सम्बन्धियों के लिये बे रोजगारी मिट जाती है। हर एक को चुङ्गी में कोई न कोई काम मिल ही जाता है।

सर्वेश, सर्वशक्तिमान !! ग्रामे म्युन्स्पलकमिश्नरो ।
भूतं भव्यं भविष्यं च हस्ते तस्यैव तिष्ठति ॥

और हे देवी ! चुङ्गी के मेम्बरों का दब दबा अपने मोहल्ले में लाटसाहब से भी अधिक होता है।

मेम्बरोंमें इतनी शक्ति होती है कि पल भरमें यदि वे चाहें तो बनी बनाई ईमारत को गिरादें। यदि चाहें तो ढेरों के स्थान पर महल बनादें। चुङ्गी के मेम्बर कलि काल के विश्व कर्मा हैं।

यदा ग्रीष्म ऋतावन्येपानीयं नाप्नुवन्तिहि ।
तदापि मैम्बरस्य द्वारे वर्षा भवति प्रतिक्षणम् ॥

और हे देवी ! मेम्बरी में एक और बड़ी भारी मौज है। जिस समय ज्येष्ठ आषाढ़ की गर्मी से लोग एक २ बूंद पानी के लिये तड़पते हैं, उसी समय मेम्बर के घर के सामने वर्षा हो रही होती है।

कृष्णपक्षेऽपि अन्यत्र प्रकाशाऽभावतो जनाः ।
यातायातं प्रकुर्वन्ति खड्डेषु निपतन्तिवैः ॥
मैम्बरस्य गृहस्याग्रे शुक्लपक्षेऽपि प्रत्यहं ।
त्रिशतानां च वोल्टानां विद्युद्दीपः प्रकाशते ॥

जबकि शहर की तंग गलियों में इतना अंधेरा होता है कि हाथ को हाथ सुझाई नहीं देता, कोई पास जाता हुआ भी दिखाई नहीं देता, लोग ठोकरें खाकर गिर पड़ते हैं; आने जाने वाले लोग भी आपस में टकराकर अपने माथे फोड़ लेते हैं उसी शहर में म्युनिस्पल कमिश्नर के घर के सामने पूर्णमाशी के दिन भी तीन सौ Candle Power का बलब लगा होता है।

कौंसिल-महात्म्य

म्युन्स्पेलटी गौरवं देवीसर्वमेतत्त्वया श्रुतम् ।
कौसंजस्य महत्त्वंत्वाम् कथयाम्यधुना श्रृणु ॥

हे देवी ! म्युनिस्पेलिटी का महातम्य मैंने तुम्हें संक्षेप में कह दिया, अब मैं तुझे कौनसिलका महातम्य कहता हूं। कौनसिलका महातम्य अधिक पुण्य देने वाला है। जिस गौराङ्ग महाप्रभु के दर्शन की आकांक्षा इन मजहबी मजनुओं के हृदय में बनी रहती है, उस तक पहुंचने की सीढ़ी है, जिसे प्रचलित भाषा में कौंसिल कहते हैं इस कौंसिल के अन्दर साक्षात् महा प्रभु विराजमान रहते हैं। अब मैं तुम्हें कौन्सिल महातम्य कहता हूं। सुन !

कौंसलान्तर्गते तत्र गौराङ्गेशो प्रतिष्ठति ।
अर्चणं यस्य कुर्वन्ति नित्येव बहवो जनाः ॥
तं नरं देव संकाशं विडालाक्षं महाप्रभुम् ।
शेक-हैण्ड कर्तुमिच्छन्ति गुड मौरनिंग तत्र भवतिहि ॥

कौन्सल में देवता के समान गौराङ्गेश्वर के दर्शन होते हैं, उसके साथ शेकहैण्ड Shakehand होता है। Shakehand के साथ Good morning गुडमौरनिङ्गका होना भी जरूरी है।

गुड मौरनिंग रूपि आशीर्वाद प्राप्त्वामोदन्ते कामिनो।
कश्चित्तस्यप्रसादाद्धि लभेत् पुंसो मनिस्टरी ॥

और हे हिन्द माता Good morning रूपी आशीर्वाद बड़े फल का देने वाला है। सकल बिघ्न विदारक है। कोटि २ पापों का नाश करने हारा है, तभी तो तेरे पुत्र गौराङ्ग-महा प्रभुको

पाने के लिये बड़े ही लालायित रहते हैं। मिनिस्ट्री Ministry मंत्री पद का मिलना भी इसी आर्शीवाद का पुण्य प्रताप है।

कौंसलस्य तु यावन्तोकोऽपि भवति मैम्बरम्।
मन्यते मन्दरे गमनं स्वस्यार्थे स निरर्थकम्॥

और हे हिन्द माता! मन्दिरों में तो बेचारे वर्षों सिर पटकते रहे। पत्थर पत्थर ही रहे, रत्ती भर भी न पिघले। परन्तु यह कौंसिल रूपी मन्दिरों में बैठे हुए गौराङ्ग महा प्रभु सहज ही में प्रसन्न हो जाते हैं। तभी तो तेरे पुत्र मन्दिरों की अपेक्षा Council में जाने के लिये हमेशा लालाइत रहते हैं।

एम० एल० ए० स कथं यायाः ऐतेषु मन्दरेषुवैः।
साक्षात्तस्य महादेवः कौंसल मध्ये यो तिष्ठति॥
प्रसादाद्यस्य देवस्य प्रसीदयन्ते सर्व देवता।
सिद्ध्यन्ति सर्व कार्यानि "विनायत्नेन्" भारत॥

और वह मजहबके नाम पर लूटने वाले जिस प्रभुके दर्शनों के लिये इतना षड्यन्त्र रचते हैं, कौंसल में इनका वह प्रभु इनके सामने प्रत्यक्ष रूप में आता है और यह गौराङ्ग महाप्रभु के उपासक इस प्रकार अपने प्रभु की आराधना करते हैं।

अंगरेज-स्तोत्र

गौरांगेश नमस्तुभ्यम् सर्वैश्वर्य प्रदोसित्वम्
परिपूर्य नाथ मे इच्छा करिश्यामि वचनम् तव॥

ऐ मेरे प्रभु—मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। आप सब फलों के देने वाले हैं। मैं आपकी शरण में हूँ। मेरी इच्छा को पूर्ण कीजिये मैं सदैव आपकी आज्ञा में रहूँगा।

त्रीजटा वंश संजातः लङ्काशायर निवासिनो ।
प्राप्तम्राज्यं कलौ नूनम् जनकजायाःप्रसादता ॥

आपका राज तो सीता महाराणी के बरदान का फल है। आपकी परदादी ने सीता जी की बड़ी सेवा की थी उसी के फल स्वरूप कलियुग विषे सात पीढ़ी तक भारत वर्ष का राज्य पाया।

पापम् कुर्वन्ति ते मूर्खाः क्रान्ति २ बदन्तिये ।
नरकेषु अन्डमानेषु तस्मात् यांति हि दुर्भगाः।

पाणौ यष्टि मुकट शिरसि कटि पैन्ट पीताम्बरम्,
कलौ गौराङ्ग रूपाय अंग्रेज़ाय नमो नमः ॥

हे अंग्रेज़! वे सचमुच बड़े ही पापी हैं जो आपके शासन को उल्ट पुल्ट करना चाहते हैं। इसी लिये तो ये पापी अन्डेमान में सड़ते हैं, उन्हीं कर्मों का कठिन फल भोगने के लिये तो वे यातनायें सहते हैं। फांसी के तख्ते पर लटकाये जाते हैं।

सात पीढ़ी से पहिले पहिले जो आप को भारत वर्ष से बोरिया बिस्तरा समेट जाने को कहते हैं सचमुच वे बड़ा भारी अपराध करते हैं।

त्वम् सदोसि चिदोसि त्वम् शत्रवास्ते रणे हताः ।
स्व भक्तानन्द रूपाय गौरङ्गाय नमो नमः ॥

आपका स्वत्व है, इसीलिये आप सन् हैं। आपके सामने आपके सब शत्रुचित्त हैं और आप उम्मेदवारों के लिये आनन्द स्वरूप हैं अतएव हे अंग्रेज मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं।

कर्तास्त्वम् सर्व धर्माणाम् हर्तास्तवम् सर्व क्लिल्विषाम्,
भर्तास्त्वम् राजटोडीनाम् श्री श्री पतयेः नमो नमः ॥

तुम हर्ता हो शत्रुओं के, तुम कर्ता हो आईन-कानून के, तुम विधाता हो नौकरी चाकरी के, अतएव हे अंग्रेज़ मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

रणे राईफल धरं देवं मृगयायाम् पिस्टलं धरम्।
भोजनकाले चम्मच धारीं त्रीवक्त्रम् नमाम्यहम्॥

तुम रणभूमि में दिव्य अस्त्रधारी, शिकार के समय बल्लम धारी और भोजन के समय कांटा चम्मच धारी हो अतएव हे त्रीवक्त्रधारी मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

ब्राह्मणस्त्वं स्मृतिकारः क्षत्रियः युद्ध जेषुणः,
गाली ब्रादर परम वैश्यः टीप्लान्टर कृषिकोऽसित्वम्।

तुम एक रूप से राजधानी में राज करते हो। दूसरे रूप से लंकाशायर में व्यापार करते हो और तीसरे रूप से आसाम में चाय की खेती करते हो, अस्तु हे त्रीमूर्ते मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं।

ब्रह्मासि त्वं प्रजापालः विष्णुस्त्वं लक्ष्मी पतिः,
गोरी स्वामी महादेवो शिवशंकर महेशत्वम्॥

आप ब्रह्मा हैं इसीलिये आप प्रजापति हैं, आप बिष्णु हैं क्योंकि लक्ष्मी आपकी दासी है, आप महादेव हैं इसीलिये आप की घर वाली गोरी है, अतएव हे देवआदि देव मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं।

सिक्सटी थौउज़ैन्ड गणानामृत्व एकएव तु गणपति,
देव—देवधिदेवाय अंग्रेज़ाय नमो नमः।

साठ हज़ार गोरी सैना जो भारत के चरण-पाशों को अत्यन्त दृढ़ता से पकड़े हुए है, आप उसके गणपति हैं। आप गणेश हैं अस्तु मैं आप को प्रणाम करता हूं

इन्द्रस्त्वम् तोप बज्रास्ते वरुणस्त्वं जलपति-प्रभुः,
पवनस्त्वम् रेडियो जलयान वायरलैस भवतः गतिः ।
सूर्योऽसि त्वम् जगत्सवं तव भासैव प्रकाशते,
चन्द्रोऽसित्वम् कलङ्कस्तव इन्कमटैक्से तिरुच्यते ॥
रुद्रोऽसि गणमशीनैस्त्वम् स्वकोपाग्नि प्रदर्शसि,
यमःस्त्र ऑर्डीनैन्सानाम् गौरांगेश नमोस्तुते ।

आप इन्द्र हैं तोप आपका बज्र है, आप चन्द्रमा हैं इन्कम टैक्स आपका कलंक है। आप वायु हैं, रेडियो आपकी गति है आप वरुण हैं समुद्र आपके सामने हाथ जोड़े खड़ा है। आप सूर्य्य हैं, क्योंकि आपकी ज्योति से हमारा ज्ञान अन्धकार दूर होता है। आप यम हैं विशेष करके अपने अमलों के अतएव हे अंग्रेज मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

वेदस्त्वं त्वम् स्मृतिकारः प्रणवःसर्ववाङ्मयः ।
मनवाग्रजाय देवाय अंग्रेज़ाय नमो नमः ॥

आपही वेद हैं क्योंकि मैंने जिस दिन से आपको देखा उस दिन से वेदों को मानना छोड़ दिया, आप ही मेरी स्मृति हैं जिस दिन से मैंने आपकी इन्डियन पेनलकोड देखी, उस दिन से मनु, पाराशर, याज्ञवल्क्य को भुला दिया। आप दर्शन हैं न्याय मिमांसा आपकी लेखनी ही है, अतएव हे अंग्रेज मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

काव्येषु ते सतो रूपं संग्रामे ते रजोगुणम् ।
तमोरूपं ऑरडीनैन्सेषु भवति ते त्रिगुणात्मके ॥

आपका सतोगुण आपके बनाये हुए ग्रन्थों से, आपका रजोगुण आपके युद्धकौशल से और आपका तमोगुण आपके

बनाये हुए ऑर्डीनेन्सों से, प्रकट होता है अतएव हे त्रिगुणात्मके मैं तुम्हें प्रणाम करता हूं।

देहे देहे वने शैले ग्रामे नगरे गृहे गृहे ।
स्थितः सी, आई, डी—रूपेण नमो सर्वान्तरात्मने ॥

तुम अन्तर्यामी हो क्योंकि तुम्हारी सी आइ डी कोने कोने में छाई हुई है। गंगाजी के तट पर, राजपुताने को मरुभूमि में, हिमालयकी चोटी पे तुम सी आई डी के रूपमें बिराजमान हो।

हैट शिरसि मुकुट यष्टि मुरली पतलून काछनो ।
गोपीवल्लभ स्वरूपाय अंग्रेज़ाय नमो नमः ॥

कलिकाल में आप गौराङ्ग महाप्रभु के अवतार हैं। हैट आपका मुकुट है, पतलून काछनी है और पतली सी छड़ी आप की मोहनी मुर्ली है अतएव हे गोपी-बल्लभ मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

कीर्तिं देहि धनं देहि देहि मे गुरुतम खिताब ।
इष्टान्कामाँश्च मे देहि त्वामहम् शरणं गतः ॥
पैन्शन देहि वरं देहि, देहि राय बहादुरी ।
सर्वद्, सुखद् वरद् गौरांगेश नमोस्तुते ॥

मैं कंचन हूँ। आप के द्वार पर खड़ा हूँ, मेरा ध्यान रखना आपको डाली दूंगा, मुझे नौकरी दीजिये, मेरे बच्चों को विलायत भेजिये मैं आप को प्रणाम करता हूँ।

प्रदेहि में राय बहादुरी प्रभु,
करोतु अन्धेरी मजिस्ट्रेट माम् ।
इयं प्रियं नाथ वरं प्रयाचे,
पुनस्पुनस्त्वाँ इयमेवयाचे ॥

मैनुं राय साहब बनादे।

बिन पैसे तेरा कम्म करां।
तेरी खातर भाईयां नाल लडाँ।
चुक झोली मैं दिन रात फिरां॥
मेरे नाँ ते पैन्शन लादे, मैनुं राय साह्ब बनादे॥

तैनुं अपनाँ इष्ट बनावांगा।
तैनु मन्दिरां विच्च बठावाँगा।
दिन रात तेरे गुण गावांगा॥
मेरे पुत्तनु वलैत पढ़ा दे, मैनु राय साह्ब बनादे।

मैनुं वोट कोई नहीं दन्दाए।
कहंदे सरकारी बन्दाए॥
मेरे गल विचपाया फन्दा ए॥
मैनुं नोमीनेट करादे, मैनुं राय साह्ब बनादे।

मैनुं टोडी टोडी करदे नें।
मेरे कोलों मूल न डरदे नें।
मेरे सिर ते आ आ चढ़दे नें॥
मेरे सिर ते इक सर लादे, मैनुं राय साह्ब बनादे।

मैं तेरे दर ते आन खड़ा।
मैं तेरे चरणीं आन पड़ा।
तेरा मन्नाँ गा एहसान बड़ा॥
मेरी जान्दी लाज बचा दे, मैनुं राय साह्ब बनादे।

लक्ष्मी पते! मुझे आशीर्वाद दो। मैं रायबहादुर बनना चाहता हूँ मैं अपने सिर पर तुम्हारा दिया हुआ सर लगाना चाहता हूँ। मुझे कौनसिल का मेम्बर बना दो। मुझे अपनी शक्ति से मिनिस्टर बना दो, मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन करूंगा। जो तुम कहोगे मैं वही करूंगा। जैसे मदारी कठपुतली को नचाता है वैसे ही मैं तुम्हारे इशारों पर नाचा करूंगा।

कांग्रेस मज़दूर किसान संघ संभीतमानाः सरकार भक्ताः।
यद्दर्शनादाप्नुवन्ति हि धैर्यम् तस्मै नमः टोडीपतीश्वराय॥
यद्दर्शनात् राय बहादुराणाम् चेतांसि निर्मुक्त भयानि सद्यः
यो नः पिता जनिता योविधाता गौराङ्ग रूपाय नमो नमस्ते॥

यह कांग्रेस वाले जो आज़ादी २ चिल्लाते हैं इन नोकीली टोपी वालों से हमारी रक्षा करने को आपने अवतार लिया है।

श्री भगवान् बोले!

हे हिन्दमाता! यह स्वार्थी लोग इस प्रकार गौरांग महाप्रभुओं की उपासना कर अपना दीन, ईमान, कुच्छेक श्वेत् टुकरों में बेच कर अपनी चार दिन की चांदनी के लिये मज़हब के नाम पर लोगों को भड़का कर देश की शांति को भङ्ग करते हैं।

भारत माता बोली!

आप जो कुछ कहरहे हैं, सत्य है। यह मज़हबी लुटेरे अपना उल्लु सीधा करनेके लिये ही म्युनस्पल्टी, जिलाबोर्ड तथा कौंसिलों में जाते हैं। परन्तु भगवन्! आप ही ने तो पहिले कहा था:-

"कुछ लोगोंको कुछ समय के लिये धोका दिया जा सकता है; कुछ लोगों को हमेशा के लिये धोके में रक्खा जा सकता है, सब लोगों को कुछ समय के लिये धोका दिया जा सकता है, परंतु सब लोगों को हमेशा धोका नहीं दिया जा सकता।"

भारतोवाच

जो हैं कृषक जगत को करते हैं जो जीवन दान।
आज उन्हीं के सर पर ऐश मनाते ये शैतान ॥
यह होटल का रैन बसेरा, यह मोटर की शान।
कब तक सहन करेगा इनको दुखिया दीन किसान ॥
कितने दीन दुःखी हृदयों की, पड़ती इन पर हाय।
फिर भी अब तक सुखसे जीता यह स्वार्थी समुदाय ॥
जो हैं कृषक कष्ट ही जिनके जीवन का शृङ्गार।
मर जाना ही होता जिनके रोगों का उपचार ॥
बसुधा अपने उर से देती कितना अक्षय दान।
किन्तु लूट उन्हें लेते हैं यह मजहबी शैतान ॥
ऐसा स्वारथी जगत बना कर क्यों भूले करतार।
जहां मुहज्जब बदमाशों की रहती है भरमार ॥

श्री भगवानुवाच ॥

मैंने तो दे रक्खा सब को अपना दान समान।
यह मनुष्य ही छीना झपटी करते हैं नादान ॥

श्री भारतोवाच ॥

ये अति ऊंचे भवन मनोहर यह वैभव सामान।
क्यों न जला देते हैं इनको दयाशील भगवान ॥

श्री भगवानुवाच ॥

करतूतें फिरका परस्तों की सभी गये अब जान।
भांडा इन का फूट चुका जागे मजदूर किसान ॥
अन्धकार अंधेर व्यथा का होवेगा अवसान।
सत्य शील की उषा जगत में छिड़केगी मुस्कान ॥

भारत माता बोली भगवन् ! आप के इन शब्दों से मेरे अन्दर बड़ा उत्साह पैदा हुआ है, परन्तु क्या इन कौन्सलों तथा असम्बलियों में बड़े बड़े तुमुलवाग्युद्ध से मेरे चरण पाश कट जायेंगे ?·········श्री भगवान् बोले !

पटेलादि योधा जिस रण में कुछ न करसके,
तेरी बाधाओं को तिल भर भी जो न हर सके।
जहाँ लाला जी का सकल बल था निष्फल गया,
वहाँ देसाइयों की कुछ चल सके क्या !कहाँ भला ॥

भारतवर्ष का कल्याण तो सदैव सच्चे साधु, त्यागी महात्मा किसान, मज़दूर, हरिजन ही करते आये हैं। भविष्य में भी यही लोग तेरा कल्याण करेंगे।

कौंसल तो है कीचड़ का तालाब ! स्वार्थपूर्ण वासनाओं की पूर्ती का साधन। इससे कुछ न होगा।

भारत माता बोली ! तो फिर इस कीचड़ के तालाब में बड़े बड़े साधू, महात्मा, तपस्वी, गांधी, जवाहर पटेल, पन्त इत्यादि स्वयं गये हैं अथवा औरों को भेज रहे हैं। क्यु ?

"मज़हबी लुटेरे—उस तालाब में घुस कर स्वयं तो गन्दे हुआ ही करते थे परन्तु पास से गुज़रने वालों पर भी कीचड़ फैंका करते थे। पटेल, जवाहर, तथा सुभाष प्रभृति महात्माओं ने स्वार्थ के बन्दों को कान से पकड़ कर उस तालाब से निकाला और उस तालाब के चारों ओर एक दीवार लगादी और स्वयं संसार के कल्याण के लिये उसकी चौकीदारी करने लगे। उस तालाब में खड़े हैं, परन्तु कीचड़ को छूते तक नहीं और न ही उसके पास किसी टोडी को फटकने देते हैं।"

राय साहब से नोट लो, कांग्रेस को वोट दो।

भारत माता बोली, रायसाहिबसे नोट लेकर कांग्रेस को वोट देना भगवन् ! क्या यह पाप नहीं है ?... श्रीभगवान् बोले !

(९०) रायसाहिब के लिये कौंसिल का मेम्बर खड़े होना, क्या यह पाप नहीं है ?

(९१) वोट के समय रायबहादुर का नोट देना और वोट लेने के बाद उन्हीं बेचारे किसानों का खून चूसना, क्या यह पाप नहीं है ?

(९२) जिस मनुष्य को न तो कोई लयाकत, है न ही जिसको बोलनेकी तमीज़, जिसके दर्शनमात्र से ही बेचारे ग़रीब लोग कांप उठते हैं, जिसके नाम तक से जनता को घृणा है उस व्यक्ति का अपने आप को लोगों का प्रति निधि कहना क्या यह पाप नहीं है ?

(९३) "कौंसिल का मेम्बर वही हो सकता है जिस की बात को जनता मानती हो" यह जानते हुये भी सरकार बहादुर का ऐसे आदमियों को कौंसिल में खड़े होने देना जिनकी इज्ज़त पब्लिक की आँखों में दो पैसे की भी नहीं, क्या यह पाप नहीं है ?

(९४)सरकार के कानून में पैसे देकर वोट खरीदना पाप है फिर भी सरकारका उन्हें नोट बाँटकर वोट लेने से कानूनन बन्द न करना क्या यह पाप नहीं है ?

(६५) दिनरात सुबह शाम जो बेचारे अपने शरीर का लोहा बना कर खेतों में हल चलावें, अनाज-बोएं, फसल पकावें, काटें, अन्न उपजावें वे तो भूके मरें और उन्हीं की कमाई पर जमींदार नामधारी निखट्टू मज़े करते फिरें क्या यह पाप नहीं ?

ओ सत्ता मद के मतवाले !
कहता है जिन प्रासादों को तू अपना सुख सार ।
रक्खा हैं दीनों के शौणित में उन का आधार ॥
है जिस त गामी बाहन पे तुझको इतना मान ।
गूंज रहा है सुन ! उनमें भी सन्तप्तों का गान ॥
इटलाता है जिसे बता कर अपना अन्नागार ।
उठता है उस के कन कन से कृषकों का उद्गार ॥
जिस भू-सम्पत्ति को कहता तू अपनी हरबार ।
है उस में भी सच पूछो इन दीनों का अधिकार ॥

हे भारत माता ! यह ज़मीन परमात्मा की है, मनुष्य का इस पर केवल इतना ही अधिकार है कि वह इसके आश्रय अपना निर्वाह कर सके । जो जमीन को बोता है वही उसका असली मालिक है । यह ज़मींदार हैं मुफ़्त खोर । बेकारों को कोई काम नहीं, तभी तो यह कौंसिलमें जाते हैं । इस लिये निर्धन जनता को चाहिये कि इन भारतीय जोंकों को कभी भी कौंसिलों के भीतर मत घुसने दें और इनको दस रुपये तो क्या एक लाख रुपया लेकर भी कोई वोट न दे ।

WHITHER INDIA.

[वह कहाँ और हम कहाँ]

देश	पशु-धन प्रतिजन	आय रो० प्रतिजन	सम्पत्ति प्रतिजन	आयु औसत	शिक्षा प्रतिशत	जन-संख्या करोड़
इंग्लैंड	१	६ रु०	४५००	५२	८५	३
फ्रांस	१.३	७ रु०	३०००	५५	६०	३॥
जर्मनी	१	७ रु०	१५००	५१	६२	३
जापान	१.६	४ रु०	२०००	४६	६५	३॥
अमरीका	२	१२ रु०	५०००	४५	६६	५
आस्ट्रेलिया	१७	१८ रु०	६०००	४८	डेन्मार्क १००	७४ लाख
भारत	.५	३ पैसे	१५	२२	२	३५

भारत-राहु

बेकार—२० करोड़
मन्दिर-धन-१४० करोड़
बूचड़खाने २ हज़ार
राजे महाराजे २ हज़ार
साधू—६० लाख
ज़मींदार ५ हज़ार
फ़ौज २॥ लाख
गो० फौज—६० हज़ार
अछूत ७ करोड़
विधवायें—२ करोड़
मुसलमान ७ करोड़
ईसाई ५० लाख
भाषायें २२०
लिपियां २०
सम्प्रदाय १० हज़ार
सर० नौकर ६ लाख

भगवान् बोले—हिंद माता मैंने ईश्वर प्राप्ति के छः साधन तुम्हें बताये। हिंद माता बोली—भगवन्! यह कौंसिल प्रवेश भी क्या ईश्वर प्राप्ति का साधन है! भगवान् बोले—ईश्वर प्राप्ति का साधन तो नहीं है परन्तु हां ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में बड़ी ही कठिन बाधा है। ईश्वर है सत्य, शिव, सुन्दर, आनन्द शान्त, प्रेम, और कौंसिल की मेम्बरी है—झूठ, दगा, धोखा, फरेब द्वेष, लड़ाई क्लेश।

कौंसिल तथा ऐसेम्बली के ईलैक्शन दृश्य तू ने देखेही होंगे, कैसा यादवी कांड मचा होता है। किस प्रकार भले मानसों की पगड़ियां उतारी जाती हैं और किस प्रकार बड़े बड़े महानुभावों पर गन्द उछाला जाता है, यह कौंसल तेरा सर्वनाश करदेगी, तेरी शक्ति को जोंकों के समान चूस लेगी, राष्ट्रीयता की जड़ों पर लाखों मन पानी उंढेल देगी, भाइयों २ के सिर फुटौअल करा कर एक तीसरी शक्ति को बल बढ़ा कर तेरी दासता की फौलादी बेड़ियों को दृढ़ कर देगी।

हिन्द माता शोकाकुल हो उठी! कांग्रेस का मन्त्रिपद बन जाने से मैं यह समझती थी कि यह ही मेरी स्वाधीनता का श्रीगणेश हो, परन्तु भगवन्! आप यह क्या कह रहे हैं?

यदि कौंसल ऐसी ही दुष्टा राक्षसी है, तो अपनी शक्ति से इसका अभी से गला क्यों नहीं घोट देते!

भगवान् बोले—ऐसा होना तो सृष्टि नियम के विरुद्ध है अपनी मौत कोई मरे तो मर जाये। इतने गौ घाती वह भी तो ज़िन्दा फिर रहे हैं! इतने बड़े बड़े पापी मज़े से विचर रहे हैं। इस कौंसिल का गला नहीं घोंटा जा सकता।

भारत माता बोली—तो फिर क्या किया जाये।

भगवान् बोले–कौंसिल का ज़ोर शोर तो बढ़ेगा ही। केवल दो मार्ग हैं इसे रोकने के। पहिला है संयुक्त निर्वाचन का और दूसरा है निर्वाचन में व्यक्ति वाद को न घसीटने का।

हिन्द माता बोली, भगवन्! इस संयुक्त निर्वाचन का क्या अर्थ है?

भगवान् बोले–हिन्द माता! इसका अर्थ है राज नीति में मज़हब को न घसीटना। मनुष्य के विचार कुछ भी हों। मरने के बाद क्या होता है। रुह कहां भटकती है। आवागमन का रहस्य क्या है, पुनर्जन्म होता है कि नहीं होता है, ईश्वर निराकार है या साकार, स्त्री है या पुरुष, वृक्षों में जीव है या नहीं ऐसी ऐसी बातें केवल समय बिताने के अथवा कुछेक दार्शनिकों के मनोरंजन के लिये भले ही लाभदायक हों परन्तु राष्ट्रीयता के साथ इन उधार चीजों का कोई सम्बन्ध नहीं।

राष्ट्रीयता के नाते से सब हिन्दुस्तानी हैं–अपनी मस्जिद में कोई भले ही मुसलमान हो, अपने गिरजे में कोई भले ही ईसाई हो परन्तु इनसे बाहर सब हिन्दु हैं। हिन्दु कोई साम्प्रदायक शब्द नहीं, यह एक भौगोलिक शब्द है।

आसमुद्रात्तुवै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरम्गिर्योरार्यावर्तः विदुर्बुधाः॥
आसिन्धु सिन्धु पर्यन्त यस्य भारत भूमिका।
पितृभूः धर्मभूमिश्च स हिन्दू रितिस्मृतः॥

जो भी हिन्दुस्तान में पैदा हुआ, पेशावर से लेकर अटक तथा रामेश्वर से लेकर कञ्चनचंगा तक फैला हुआ जो भी देश है इस में जो कोई रहता है वह हिन्दू ही है।

भारत माता बोली "तब तो मुसलमानों को भी हिन्दू ही कहना चाहिये, क्योंकि वे सब इसी देश-में पैदा हुये और इसी देश में मरेंगे, परन्तु वे तो हिन्दू कहलाने से घृणा करते हैं।

भगवान् बोले ! इसमें इनका दोष नहीं है। यह ठीक है कि अपने देश से द्रोह करना पाप है। जातीयता और वस्तु है मज़हब और वस्तु है, मज़हब बदलने से जाति नहीं बदल सकती।

भारत माता बोली, भगवन् ! मज़हब धर्म तथा जाति में क्या सम्बन्ध है।

श्री भगवान् बोले, देवी ! मैं तुम्हें विस्तार पूर्वक कहता हूं। सब से पहिली चीज़ है, जाति ! उसके बाद धर्म और उसके बाद मज़हब। मनुष्य का पैदा होना मनुष्य के आधीन नहीं है। किसी अज्ञात शक्ति के द्वारा वह किसी देश में भेजा जाता है और उस देशमें पैदा होते ही उस देश विपेश की जल वायु के साथ उसका सम्पर्क होता है, उसी देश माता का दूध पीकर तथा अन्नखा कर उसका शरीर फूलता है और क्योंकि उस देश में जो कुछ भी पैदा होता है उसका प्रभाव मनुष्य के शरीर पर पड़ता है इसी लिये उस देश की जलवायु के अनुसार प्रकृति के नियमों का पालन करते हुये जिस प्रकार शरीर को सुदृढ़ बनाकर आत्मा का उत्थान करना है उन नियमों को धर्म कहते हैं।

गर्म प्रदेश में कपड़े ढीले ढाले पहने जाते हैं और शर्द प्रदेशों में तङ्ग और बहुत पहिने जाते हैं। जो व्यक्ति इन्हीं प्रकृति के नियमों को भङ्ग करता है वह पाप करता है। प्रकृति का पालन करनेमें वह स्वाधीन नहीं है। तेरे देश के बारे में मैं कह सकता हूँ कि जो कोई भारत वर्ष में रहता मांसखाता है, अण्डे खाता है, गौबध करता है, भारतीयवीरों की निन्दा करता है, वेद भगवानकी निन्दा करता है अपने पूर्वजों की भाषा को त्याग देता

है तो वह एक घोर पाप करता है जिसे मैं अवश्य दण्ड देता हूँ। यदि कोई हिन्दु भी इन कुकर्मों को करता है तो वह चाण्डाल से भी निकृष्ट है। मैं जानता हूँ कि इन कामों को अनेकानेक हिन्दू भी करते हैं। मैं ने उन्हें भी यवन और म्लेच्छ कहा है।

मजहब मनुष्यकी बनाई हुई वस्तु है, मानो तो मज़हब नहीं तो खाक भी नहीं। जब किसी देश के अन्दर अनाचार फैल जाता है तो उस देश की रक्षा के लिये, भूले भटकोंको सीधे मार्ग पर लानेके लिये एक महापुरुष आगे आता है जैसा कि महात्मा बुद्ध, गुरू नानक देव, हज़रत ईसामसीह तथा हज़रत मोहम्मद साहब। जिन्होंने इन महापुरुषों की बातों को माना उन्हों ने एक सङ्घ बना लिया और उस संघ का नाम मजहब रख लिया। महापुरुषों की बातको मानना बुरी बात तो नहीं है। हज़रत मोहम्मद साहब ने अरबकी काया पलट दी, उनके अन्दर बहुत गुण थे; लेकिन एक बात मैं कहता हूँ, ध्यान से सुन! किसी प्रदेशमें जितने कोसोंके अन्दर बिगड़ी हुई हालत का सुधारना है वह बातें या उसका मज़हब उतने ही कोसोंके अन्दर लाभकारी होसकता है। महापुरुषों का उद्देश्य रोगी को दवाई देने का सा होता है। एक रोगी को जो दवाई दी जाती है वही दवाई प्रत्येक रोगीको नहीं दी जा सकती। जैसे एक वैद्य शारीरिक बाधाओं को नाश करता है ऐसे ही एक महा पुरूष भी अध्यात्मिक बाधाओं का नाश करने के लिये आता है। हजरत ईसामसीह मध्य ऐशिया में उत्पन्न हुए और मध्य एशिया में उन्होंने अपने मत का उपदेश किया। उस समय जो बातें हज़रत ईसामसीह ने यूरोप के लोगों को कहीं वह कहनी ही चाहिये थीं हजरत मोहम्मद ने एक योग्य वैद्य की तरह अरब की बीमारी को भांपा और उन्होंने उसको दूर करनेके लिये नुसखा तलाश किया, वह नुसख़ा अच्छा था! लेकिन भारतवर्ष में तो वह कदापि नहीं चल सकता।

भारत माता बोली–भगवन् ! क्या यह भारतवर्ष में रहने वाले आठ करोड़ मुसलमान एकाएक आकाश से गिर पड़े। कासम तो कुल दो हज़ार लाया था—महमूद पांच हज़ार लाया था–बख्त्यार ७२ लाया—दस हज़ार तैमूर तथा चंगेज़ लाये–दो लाख अब्दाली अपने साथ लाया—यह सब मिलाकर अढ़ाई लाख हुये। फिर यह आठ करोड़ कैसे हो गये। यदि आप कहेंगे कि यह लोग कुदरतन पैदायश से ही बढ़ गये, तो भगवन्। यदि कुदरतन पैदायश से तीन लाख बढ़ कर आठ करोड़ बन सकते हैं तो ३५ करोड़ तो इसी हिसाब से बढ़ते २ सात खर्ब हो जाने चाहियें।

श्रीभगवान् बोले, भारत माता ! तेरा सन्देह सच्चा है। कुदरतन पैदायश से यह लोग नहीं बढ़े। पैदा तो यह सब राम कृष्ण तथा प्रताप ही के घर में हुये परन्तु समाज के चौधरियों ने इन्हें धक्के दे दे कर बाहर कर दिया "तो इस में दोष समाज के चौधरियों का अथवा इन बेचारे धर्म भीरुओं का ?" समाजके चौधरियों का" "तो जातीय बहिष्कार भी इन समाज के चौधरियों का होना चाहिये न कि बेचारे दलितों का:—

श्री भगवान् बोले ! समाज के चौधरियों को तो मैं ने दण्ड दिया ही ... परन्तु यह धर्म भीरु...

हां ! ये लोग वास्तव में यदि सच्चे हृदय से उस मरुस्थल के महाप्रभु के बताये हुये नुसख़े को पढ़ते और फिर आत्मा की शान्ति के लिये उस नुसख़े को अपनाते तो कोई बुरी बात नहीं थी। उन्होंने मजहब बदल लिया, परन्तु यदि इसके साथ ही साथ घर बार उठाकर भी अरब में ले जाते और वहीं रहते, और वहीं मरते तो इनकी जाति और धर्म भी बदल सकता था। परन्तु हिन्दूस्थान में रहते हुए इनका धर्म और जाति कभी नहीं बदल सकती, इसीलिये मैं इनको बुरा कहता हूं। वह भारतमाता के साथ क्यों द्रोह करते हैं ? देश द्रोह सबसे बड़ा भारी पाप है।

होश दे विच आ हिन्दुआ अजे तां सोचविचार न।
भोर भई उठ जाग तू ओए मूर्खा टंगां पसार न॥
देख ज़माने दी चाल तू।
अपने होश सम्भाल तू।
बाग़ नू बाग़ दे मालिया, अपने हत्थीं उजाड़ न॥
हिन्द गुलाम बना लया।
गैरां दे हत्थीं लुटा लया।
कुछ खा लया कुच्छ खिला लया, पर मिटया तेरा हंकार न॥
निक्की जई जात ते नाज़ की।
ताकत तेरी दा अन्दाज़ की।
पंजां च न तू पजाहां च न, कौमां च तेरा शुमार न॥
तैंने तुर्कां दी जुत्तियां खादियां।
सहियां देश दियां बरबादियां।
पया बैठा मनावें तू शादियां-अजे मूर्खा होश सवांर न॥
दिलों छूत दे भूत नु कड्ड दवें।
जाति-पाति दे रोग नु छड्ड दवें।
गलों तौक गुलामीदा वड्ड देवें पया खावें तू लोकांदी मार न
दलित्तां नू जे नाल मिला लवें।
शुद्धकर तू मुसलमां रला लवें।
ते तू हिन्द आज़ाद करा लवें फिरें दर २ ते हुन्दा तू ख्वारन॥

श्री भगवानु उवाच

अभयं सत्य मस्तेयं ब्रह्मचर्यं धृतिः क्षमा ।
सेव्याः सदाऽमृतमिव स्त्रीभिश्च पुरुषैस्तथा ॥

ईश्वर प्राप्ति के इच्छुक को अपने अन्दरकु शक्ति पैदा करना चाहिये ! अखाड़े खोल कर' व्यायाम करना चाहिये अपने अन्दर किसी भी सांसारिक शक्तिका भय नहीं रखना चाहिये। सत्य पर स्थिर रहते हुए अन्याय के विरुद्ध घोषणा करनी चाहिये। ब्रह्मचर्य का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। बिना ब्रह्मचर्य का पालन किये संसार में कोई कार्य सुफल नहीं हो सकता।

ब्रह्मचर्येण तपसा देवाः मृत्युमुपाघ्नत ।

ब्रह्मचर्य के तप द्वारा देवताओं ने मृत्यु को जीता। जिस मशीन से अन्याय के विरुद्ध युद्ध करना है, पहले उस मशीन को सुदृढ़ करना अत्यावश्यक है। स्त्री-पुरुष दोनों को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये।

परमात्मा का सब से उत्तम मन्दिर हैं मनुष्य का शरीर इस लिये मानव शरीर की उपासना करनी चाहिये—

"शरीरमाद्यम खलुधर्म साधनम्"

शरीर व्याधि मन्दिर नहीं है, बल्कि यह शरीर है परमात्मा का घर। इस परमात्मा का निवास तो प्राणी मात्र के हृदय में है। इस लिये अपने मन से अछूतपन की बीमारी को मिटा देना चाहिये। जिस मनुष्य के हृदय में छुआ छूत का भूत लेट रहा हो वहां परमात्मा नहीं बैठ सकता।

अनाथाः बिधवाः रक्ष्याः मन्दिराणि तथाचगौः ।
धर्म्यं संगठनं कृत्वा देयं दानं च तद्धितम् ॥

सब भाईयों को मिलकर अनाथ की, विधवाओं की, मन्दिर की और गो माता की रक्षा करनी चाहिये और इन सब कामों के लिये दान देना चाहिये।

(६६)भारत-वर्ष में एक लाख गौओं का प्रति दिन वध होता है। भारत वर्ष का पशु-धन दिन प्रति दिन घट रहा है। बनस्पति घी के बिना शुद्ध घी का कहीं नाम तक नहीं। यह सब बातें जानते हुये भी बड़े बड़े सिद्धान्त बादियोंका यज्ञ महिमा पर लम्बे चौड़े व्याख्यान झाड़ना तथा हज़ारों रुपयों का बनास्पति घी आग में फूंकना क्या यह पाप नहीं है ?

हे भारतमाता गौरक्षा अवश्य होनी चाहिए। जो जाति ईश्वर को पाना चाहती है, उस जाति को सर्वप्रथम देशसे गौबध मिटाना चाहिये।

भारत का जीवन ही गौउ के अधीन जानो,
भारत की भूमि हरी गौउ ही बनाई है।
गौउ की बखानी बड़ी महिमा है वेदन में,
गौउ की सुकीर्ति पुराणन में गाई है।
संपत्ति सार अन्न पानी का आधार गौउ,
धर्म का सकल भार गौउ पे सदा ही है।
दीना नाथ सोई कलिकाल के प्रभाव में आ,
हाय जग पावन अनाथ भई गाई है।

माता समान पय पान सदा करावे,
बेरी पलास अरु आक जवास खावे।
उसका करे बध तोही नहीं लाज आई,
हा हन्त ! हा इतीक घोर कृतघ्नताई।

श्री भगवान बोले, हे भारत माता,

स्त्री का तेरे देश में बड़ा भारी अपमान होता है। मातृ शक्ति का अपमान करना बड़ा भारी पाप है। मातृ शक्ति का आदर, करना चाहिये। निरापराध अबलाओं पे बल नहीं अज़माना चाहिये बल्कि दुष्ट आततताईयों को दंड देना चाहिये। आज कल तेरे देश में दुष्ट लोग आर्य महिलाओं पर बड़ा अत्याचार कर रहे हैं। जब तक यह अत्याचार होता रहेगा, तब तक परमात्मा तेरे देश में नहीं आ सकता।

(६७) एक ओर अपने आप को मातृ-शक्ति के उपासक कहना और दूसरी ओर कदम कदम पर मातृ-शक्तिका अपमान करना क्या यह पाप नहीं है ?

(६८) जब एक बुढ्ढा खूसट, साठ वर्ष का शमशान भूमि का यात्री तीन चार पड़पोतों का पड़दादा हो कर भी अपनी विषय-वासना को मार नहीं सकता तो ११, १२ वर्ष की अबोध बालिका से आजन्म संयम की आशा रखना क्या यह पाप नहीं है ?

(६९) एक नर-पशु तो भले ही एक ही समय में बीस बीस पाप-पत्नियों का पति हो कर भी इक्कीसवीं की तलाश करता रहे, वह तो फिर भी समाज का चौधरी का चौधरी, परन्तु एक ११ वर्ष की अबोध बालिका, वह बेचारी समस्त आयु पर्यन्त ही इस वैधव्य की अग्नि में जलती रहे क्या यह पाप नहीं है ?

(१००)पुत्र तथा कन्या दोनोंका एक ही औरस तथा एक ही गर्भ से जन्म होता है। फिर पुत्र तो पिता के मरने पर चाहे उस की सारी सम्पत्ति को शराब खोरी में फूंक दे परन्तु बेचारी कन्या सख्त जरूरत पड़ने पर भी उस में से एक कानी कौड़ी तक न पा सके क्या यह मातृ शक्ति का अपमान नहीं है और क्या यह पाप नहीं है ?

"तो क्या भगवन् यही चाहते हैं कि मेरे देश में विधवा विवाह होंने लगें" "भगवान् चाहते हैं अथवा नहीं चाहते हैं" यह प्रश्न नहीं प्रश्न तो यह है कि—

(१०१) जिस देश में एक एक वर्ष से भी कम आयुकी हज़ारों कन्याएं विधवा कहाती हों—दो २ तीन ३ वर्षकी लाखों अबोध बालिकाएं भी जहां विधवा समझी जाती हों—पांच २ छः २ सात २ वर्ष की बच्चियों को भी जहां विधवा कहा जाता हो "अष्टवर्षा भवेद्गौरी" के अग्नि-बाण से बेधित लाखों ही नव-युवतियाँ जिस समाज के अग्नि-कुडं में निरन्तर जलरही हों —समाज की सताई हुई ३०० विधवायें जिस देश में नित्य-प्रति विधर्मियों के चंगुल में फंस रहीं हों, अच्छे अच्छे कुलीन खान्दानों की डेढ़ करोड़ वेश्याएं जिस देश के वीर्य का सत्यानाश कर रही हों, अपने ही देवरों, जेठों, तथा

श्वसुरों द्वारा व्यभिचार के लिये बाधित की गई लाखों ही विधवाएं जहाँ इन अपने रक्षक रूपी भक्षकों की नर-पिशाचता की भेंट चढ़ रही हों, उस देश में कभी ईश्वर आ सकता है ऐसा विचार तक भी मन में लाना क्या यह पाप नहीं है ?

भारत-माता बोली, "भगवन् ! आप सच कहते हैं परन्तु स्मृतिकारों ने तो विधवा विवाह का निषेध ही किया है !"

निषेध किया था ! उस समय जब कि भारत वासियों को हड़प कर जाने वाले इस भारतवर्ष में थे ही नहीं। यवनों का तथा ईसाईयों का कहीं चिन्ह तक था ही नहीं। प्रकृति माता की आज्ञाओं का पालन करते हुये भारत पुत्र "जीवेम् शरदः शतम् का क्रियात्मक रसास्वादन करके ही देहावसान किया करते थे। उस समय जिस वायु मंडल में बैठ कर स्मृतिकारों ने कुछ लिखा वह उस समय के लिये ही था। वही स्मृतिकार यदि आज भी जीवित होते, पेशावर सीमान्त पर, सदूर—पूर्व बंगाल में नित्य हो रहे अपहरण समाचार वे नित्य नित्य पढ़ते, कलकत्ता की सोना गाच्छी, बनारस की दालमंडी, लाहौर की हीरामंडी, देहली के चावड़ी बाजार की रोमांचकारी घटनाओं को यदि वही मनु—याज्ञवल्क्य तथा पाराशर जी महाराज स्वयं आज आकर देखते तो अपने हाथों से ही अपनी स्मृतियों के पहिले संस्करणों पर लकीर फेर समयानुसार उनके नवीन संस्करण छपवाते।

भारत माता बोली, भगवान् ! आपने जो कहा है, सर्वथा सत्य ही है। परन्तु यह सब कुछ "सनातन धर्म के नाम पर होता है।

पोथी संभाल ओए-पंडिता

मन्दरां दे विच ओए देखीं चढ़ गये अछूत ने ।
पी लीता पानी खूं चों हरिजन----सपूत ने ॥
कर लीती आत्म हत्या छूतां दे भूत ने ॥

तू भी तां पंडता खूविच मारतां छाल ओए ।
पोथी सम्भाल ओए पण्डता पोथी सम्भाल ओए ॥

दलित्तां दे उत्ते ज़ालम ज़ुल्म कमाव दैं ।
विधवा दा जीवन दुःखा विच तु पांव दैं ॥
पोथी च लिखया सातुं जे तू वताव दैं ॥

पोथी ए तेरी क्युं न अज देइए जाल ओए ।
पोथी सम्भाल ओए पण्डता पोथी सम्भाल ओए ॥

देखीं तां पंडितां हरिजन बनगये मनिस्टर ने ।
डाक्टर उम्बेदकर जैसे बन गये बैरिस्टर ने ॥
पढ़ पढ़के हरिजन अज्ज बन गये ते मिस्टर ने ॥

पोथी दे सिर ते पडंता झुल्ल रया काल ओए ।
पोथी सम्भाल ओए पण्डता, पोथी सम्भाल ओए ॥

स्वारथ दे बन्दया साडा बेड़ा डुबाया तैं ।
विधवा बना के भैना मन्डियां बठाया तैं ॥
भाईआं दे कन्नो पापिया सिक्का भरवाया तैं ॥

ला ला के टिक्के रचदैं माया दा जाल ओए ॥
पोथी सम्भाल ओए पण्डता पोथी सम्भाल ओए ॥

श्री भगवान् बोले, भारत माता ! सनातनधर्म को बदनाम मत कर। जिस धर्म को मानने वाले बड़े बड़े सन्त महात्मा हो गये, जिस धर्म की रक्षा के लिये भगवान् राम ने लङ्का को विजय किया—जिस धर्म की रक्षा के लिये भगवान् कृष्ण को इतना उद्योग करना पड़ा, जिस धर्म की रक्षा के लिये बुद्धभगवान् ने इतनी घोर तपस्याएं की, जिस धर्म की रक्षा के लिये महाराष्ट्र केशरी ने इतना प्रयत्न किया, जिस धर्म के लिये हकीकत तथा गुरु जी के साहिब ज़ादों ने अपने शरीर का बलिदान किया जिस धर्म की रक्षा के लिये गुरु तेगबहादुर जी ने सिर कटाया, बैरागी जी ने तथा गुरु गोविन्दसिंह जी ने जिस धर्म की रक्षा के हेतु इतना उद्योग किया, और जिस धर्मकी रक्षाके लिये गुरु-रामदास, स्वामी शंकराचार्य, कुमारल, रामानन्द, गुरुनानकदेव प्रभृति सन्तों ने इतना परिश्रम किया, ऋषि दयानन्द ने जिस धर्म की रक्षा के लिये इतनी तपस्या की और जिस धर्म-रक्षा के लिये आज भी गान्धी जी परिश्रम कर रहे हैं, भारत भूषण मालवीय जी जिस धर्म की शोभा को बढ़ा रहे हैं उस धर्म के नाम पर पाप कदापि नहीं हो सकता।

फिर भगवन् यह वर्णाश्रम स्वराज्य-संघिये, यह भारत धर्म महामण्डलिये, यह पुरी के मठाधीश, गुरुवायूर, काली द्वारिकाधीश तथा विश्वनाथके सर्वेसर्वा जो कुछ भी करते हैं क्या यह सब सनातन धर्म के नाम पर नहीं होता ?

श्री भगवान् बोले, भारतमाता यह पाप सनातनधर्म के नाम पर नहीं होते, बल्कि यह होते हैं सड़ातनधर्म के नाम पर=

"सड़ातन धर्म के नाम पर" भारतमाता चकित रहगई-सड़ातनधर्म के नाम पर—भगवन् ! यह सड़ातनधर्म किस बला का नाम है ! —पूर्वार्द्ध समाप्त—

(उत्तरार्द्ध देखिये